

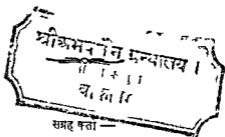
सर्वाधिका सुरक्षित

श्री सहजानन्द शास्त्रमाला

सुबोध-पत्रावली

(१६)

(पूज्य श्री १०५ जु० गणेशप्रसाद जी वर्णी महात्मान
व पूज्य श्री १०५ जु० मनोहर जी वर्णी 'सहजानन्द'
महाराज का श्रोर में लिखे गये पत्रा
का संग्रह)



मूल चन्द जैन

जैन स्ट्रीट, मुजफ्फरनगर

प्रथम संस्करण
प्रति
२२००

वी० नि० सं० २४८०

मूल्य
१० आना

श्री सहजानन्द शास्त्रमाला के प्रवर्तकों की शुभनामावलि निम्न प्रकार है —

१	श्रीमान् सा० महाश्रीर प्रसाद जी जैन चैकस सर मेरठ	१००१
२	॥ मित्रसैन जी नाहर सिंह जी जैन मुजफ्फरागर	१० १)
३	॥ प्रेमरत्न जी श्रीभूषकाश जी निवार बरस मेरठ	१० १
४	॥ सनगरचन्द जी लालच द जी मुजफ्फरागर	११०१)
५	॥ शीलप्रसाद जी जैन मेरठ सर	१००१)
६	॥ कृष्णचन्द जी जैन रास देहरादून	११०१)
७	॥ दीरचन्द जी जैन रास देहरादून	१००१)
८	॥ धारुमल जी प्रेमचन्द जी जैन मसूरी	११०१)
९	॥ बाबूराम जी मुरारीलाल जी जैन जालापुर	१००१)
१०	॥ केवलराम जी उममैन जी जगाधरी	१ ००)
११	॥ त्रिनेश्वरदास जी श्रीपाल जी जैन शिमला	१००१)
१२	॥ बनवारी लाल जी गिरजन लाल जी शिमला	१००१)
१३	॥ गैंगालाल जी दगडूसाह जी जैन रनावद	१००१)
१४	॥ बानूराम जी अकलक प्रसाद जी जैन रईस तिस्था	१००१)
१५	॥ सुकन्दलाल जी गुलशनराय जी जैन नईमरणी मुजफ्फरनगर	१००१)
१६	॥ सुगरीर सिंह हेमचन्द जी सराक बजौत	१००१)
१७	॥ सैठ मोहनलालजी ताराचन्दजी भंडजात्या जयपुर	१००१)
१८	॥ भवरीलाल जी कौडरमा	१००१)
१९	॥ कैलाशचन्द जी देहरादून	१००१)

नाम — उक्त महानुभाव संस्थाके प्रवर्तक उद्देश्य हैं इन्में से जिन संज्ञकों
के पूरे रूपके कार्यालय में आ चुके हैं उनके नाम के पहल में यह
चिन्ह अंकित है ।

दो शब्द

सुबोध पत्रावली क्या है ?

सर्वप्रथम जब मुझे परमपूज्य श्री १०५ छुल्लक मनोहर जी वरुणी 'सहजानन्द' महाराज का पत्र प्राप्त हुआ तो उस पढ़कर मुझे बड़ा शान्ति व सुख का अनुभव हुआ। मैंने विचार किया कि उनकी ओरसे आये हुए पत्र तो हमारे लिये बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं यदि हम उठ संभालकर रखें और जब कोई आशक्ति उपस्थित हो या हम दुःखी हों तो उनका पत्र पढ़नेसे उस दुःख की निवृत्ति काफी आशा में हो जायगी। यहो मोचकर मैंने विचार किया कि क्या ही अच्छा हो यदि उनकी ओरसे आये हुए पत्र व उनके गुरु आचार्यिन मन परमपूज्य श्री १०५ छुल्लक गणेशप्रसाद जी वरुणी महाराज को ओरसे आये हुए पत्रोंका सम्बन्ध करके पुस्तक के रूपमें छपना स्थित जायें तो उनका एक जगह सम्बन्ध हो जायगा व बहुतोको लाभ पचात में सफल होगा। इसी उद्देश्य को लेकर मैं इस कायमें जुगुप्सा और तिन मन्त्रोंमें भी सम्मिलित होकर पत्र मगानकर एक पुस्तकमें सम्बन्ध किया है।

मैं उन सभी सज्जनाका बहुतही आभारी हूँ जिन्होंने मेरे लिखने पर मुझे पत्र भेज दिये। श्री चेतनलाल जी, श्री महेशचन्द्र जी टूचरी आशिमर, श्री विमलप्रसाद जी श्री जुगमन्ददास जी, श्री सुमन प्रसाद जी M P, श्री लक्ष्मीचन्द्र जी, श्री रमेशचन्द्र जी मुपकर नगर वाले, श्री रतनचन्द्र जी, श्री नेमचन्द्र जी, श्री जिनैरपरदास श्री सहारनपुरवाले, श्री दुकमचन्द्र जी सलायावाले, श्री शीतलप्रसाद जी शाहपुरवाले, श्री सर मेठ दुकमचन्द्र जी इन्दौर वाले, श्री मुखवीर सिंह जी हमरना घडीत वाले, श्री मंगलसैनजी मुखारिकपुर वाले, श्री ब्र० जीरानन्द जी, श्री ताराचन्द्र जी, श्री रतनलाल जी मेरठ वाले, श्री रामचन्द्र जी ममूरी वाले आदि सब ही धन्यवादके पात्र हैं।

निदाने पत्र भेजकर मुझे इस कार्यमें सहयोग दिया। मैं उनका हृदयमें आभारी हूँ।

जिन्होंने पूज्य श्री १०५ छुल्लक गणेशप्रसाद जी वर्णी महाराज व पूज्य श्री १०४ छुल्लक मनोहर जी वर्णी 'सहजानन्द' महाराजक पत्र पढ़े हैं तथा उनका प्रयत्न सुना है वह जानते हैं कि उनका दशममात्रमें विनी शान्ति प्राप्त होनी है व प्रयत्न सुनने में रोमांच हो आता है। उन प्रयत्नकर्ता ही भला व वहीं कहीं जन्ममें भी अधिक जन्म पत्रों में आपको मिलेगा। इन्हें पढ़कर अत्यन्त ही शान्ति अनुभव होगा। पिछले घटनाओंके होनेपर लिखा गया पत्र तो बहुत ही आश्चर्यकारी प्रभावको लिये हुए हैं। पत्र वियोगके समय लिखा गया पत्र, अग्निफाटके समय लिखा गया पत्र व धामाराके समय लिखे गये पत्रोंके पढ़नेमें तो हम बहुत ही सान्त्वना मिलेगी व ससारकी असारता व भोगाकी छान भगुरता प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होगा। इसमें अतिरिक्त इन पत्रोंमें बहुत ही गम्भीर आध्यात्मिक प्रश्नोंके उत्तर भी हैं जिनसे हम आध्यात्मिक ज्ञान व रचि होगी।

पूज्य श्री १०४ छुल्लकद्वयको तो मैं क्या धन्यवाद दूँ वह तो मेरे परम हितैषी पूज्य गुरुवर्य हैं, जहाँ का यह सब सुख है उनकी कृपा का इस फायदे सम्पन्न होनेमें निरोध कारण हुई। मैं श्री सहजानन्द शास्त्रमाला मेरठ का भी अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने यह पुस्तक अपनी आरामे प्रकाशित करना स्वीकार कर लिया है।

अन्य में मेरी यही भावना है कि आप इन पुस्तक को अत्यन्त पढ़ें, आपको अनीर लाभ होगा। यदि कोई अज्ञानवश गुटि रह गयी हो तो कृपया मुझे लिख दें ताकि अगले संस्करण में ठीक करनी जायें।

मूलचन्द्र जैन

मई, सन् १९५७ ई०

जैन स्टीट, मुजफ्फरनगर।

किन प्रश्नों का उत्तर कौनसे पत्र में ?

भाग १

प्रश्न	पृष्ठ नं०
१ कल्याण का माग क्या है ?	२६, ३७, ५७, ६२, ७२
२ क्या घर छोड़ने से ही करयाण हो सकता है ?	३०, ३२, ३३, ४८
३ त्रिन्द्रिय क्रिमे कहते हैं	३७
४ सम्यग्दर्शन होने के बाद गृहस्थ की प्रवृत्ति कैसी हो जाती है ?	४, ४६
५ क्या सस्त्रुत या प्रास्त्रुत भाषा का जानने वाला ही तत्परचर्चा का अधिकारी है ?	५१
६ धर्म क्या है ?	६५
७ हम दुखी क्यों हैं ?	६८

“कुछ विशेष पत्र”

१ क्षमाप्राणी पर गुरुशिष्य के पत्र	१७, १८
२ पूज्य श्री १०५ सु० मनोहर जी चर्णी के अवसर पर दिय गये पत्र	१६, २०
३ त्याग धर्म की महत्ता बताने वाला पत्र	६६
४ श्रीमाराके अवसर पर दियेगय पत्र	६६, ७०, ७१ ७२ ६५

भाग २

प्रश्न	पृष्ठ नं०
१ सामायिक म क्या करना चाहिये ?	८७
२ आयुर्वेद व गनिषध म क्या अन्तर है ?	८७
३ अनात्मभूत लक्षण, साम्यवहारिक प्रत्यक्षता क्या अर्थ है ?	८९
४ जनेउ की विधि क्या है ?	९०
५ क्या अरहता व शरीर चन्द्रिया होनी है ? क्या यह नियम मे सिद्ध होंगे ?	९०
६ त्रिकलत्रय किसे कहते हैं ?	९०
७ मुक्त जीव कहा रहते हैं ?	९०
८ क्या नीर व पुद्गल शुद्ध टाकर फिर विकारा हो सकता है ?	९०
९ क्या गोभी गाना ठीक है ? मूली व पत्ते गाना योग्य है ?	९०
१० क्या तल छानने के बाद भी एकेन्द्रिय जीव रह जात हैं यह एकेन्द्रिय जीव किसे अथवा म नहीं रहते ?	९१
११ त्रिरोधी हिमा किसे कहते हैं ?	९१
१२ क्या सिद्धालय म निगोत्रिया जीव भी हैं ?	९१
१३ सिद्धभगवान के ८ मूलगुण क्या हैं ?	९१
१४ असेनी पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्त म ७ गुणस्थान किस प्रकार होते हैं ?	१००
१५ छद्मग्रन्थ किसे कहते हैं ?	१०३
१६ ध्रुवश्रवणी किसे कहते हैं ?	१०३
१७ द्रव्यरस, भावकर्म, नाकम किसे कहते हैं ?	१०३
१८ उपादान व निमित्त क्या है ?	१०६
१९ नीर किसका रक्षा और किमका भोक्ता है ?	१०६

- २० आत्मा महज स्वभाव व औपाधिपर परिणमन क्या है ? १०६
- २१ मिश्र गुणस्थान में ज्ञान कौन २ होते हैं ? १०७
- २२ चक्षुदर्शन म जीव समास कौन २ हैं ? १०७
- २३ क्या नृपाद् व व्ययना एन ही समय है ? यह घान १२१, १२२,
मनुष्य स भरकर द्य हुआ इसमे कैमे घटती है ? १४३, १३६
- २४ क्या सिद्ध भगवान के भव्यत्व गुण रहता ह ? १२२
- २५ योग किमे कहते हैं ? क्या एन समय म एक हा
योग होना है ? १२०
- ६ अध्यात्म हितमार्ग के अन्वपण की दृष्टि म नय
रितन प्रकार के होते हैं ? ७७ १२६
- २७ क्या शुक्लध्यानी नियम से मोक्ष जाता है ? १३४
- २८ क्या नर्क में किसी ससय मुख होता है ? होता है
तो किस समय ? १३४
- २९ आत्मा का स्वभाब ज्ञानान्ष्टा घनलाया है । “ज्ञाना
परपदाय के जाननेवाला और दृष्टा अपनी आत्मा को
जानने वाले को कहते हैं” क्या यह वाक्य ठीक है ?
ससारी आत्माआ में दृष्टापना कैमे घनना है क्योंकि
यहा तो आत्माप्रलोकन है ही नहीं ? १३४
- ३० क्या १३ वें गुणस्थान में मनोयोग भी होना है ? ता
कैसे ? क्या यह मनमे कुछ विचारते हैं ? १३४
- ३१ मच्छा द्य उमे कहते हैं जो बीतरागी सपज्ञ और
हितोपदेशी हो ? क्या यह सप्र लक्षण मूकनेरली और
अन्तकृत केरली म पाय जाते हैं ? अगर उनमे नहीं
हैं तो यह मन्चे द्य कैमे कहलाते हैं ? १३४
- ३२ आप्त किमे कहते हैं ? क्या सभी अरहन आप्त हैं ? १२४
- ३३ क्या जमीरुन्द का त्यागी मूगफली, हल्दी,
अदरक, सूठ एग सकना है ? १४४

- ३३ क्या रात्रि को अन्न का त्यागी तिल, हरी मटर, कुट्ट, बीलाइ ग्या करता है ? १३५
- ३५ आरम्भ त्याग प्रतिभा मे उपर धाला क्या रूपन कपड़े रख धो करना है ? १३६
- ३६ सिद्ध भगवान म परिणमा किस प्रकार होना है ? १३६
- ३७ क्या अमृत्य म भी सिद्ध होन की शक्ति है ? १३६
- ३८ छठ गुणस्थान म कौन २ आनध्यान हा सकते हैं ? १३६
- ३९ हमने पाय हिलाया क्या ममम भा चर्म इत्य महात्यर है ? ४३६
- ४० पटगुणी हानिग्रहि किमे कहते हैं ? १४०
- ४१ एक घार सम्यस्त्र होने के बाद दासारा किन्ने समय मर सम्यस्त्र नहीं हो करता ? १५०
- ४२ ८४ लाख योनिया कौन २ होनी हैं ?
- ४३ क्या मिध्यान्त्रि के भी भेद विज्ञान हो सकता है ? १४३
- ४४ क्या पेड़ मे गिरे हुए पत्ते म जीव है, क्या हुए मे निरले हुए जलमें जीव है ? १४३

“कुट्ट विशेष पत्र”

- १ घीमारीके अवसर पर लिखे गये पत्र ७६, ७८, ७९, ८५
- २ औपरेशन के अवसर पर लिखे गये पत्र ७८
- ३ धम शिक्षा सदन का अधिपेशन संदेश ८७
- ४ अग्निहाड के अवसर पर लिखा गया पत्र ९९
- ५ पुत्रमृत्यु पर लिखा गया पत्र १३१

सुबोध--पत्रावली

भाग १

(पूज्य श्री १०५ सु० गणेशप्रसाद जी वर्णी महाराज की
ओर से लिखे गये पत्रों का संग्रह)

श्री युन महाशय १०५ छुल्लक मनोहर वर्णी इच्छाकार

पत्र आया समाचार जान । हमारा ह्यस्थ अयस्था के अनुकूल
अच्छा है । पक्मान हैं । हमको तो आपके उत्कण्ठ में आनन्द है—
हमारा उपदेश न छोड़ माने न हम दना चाहते हैं । हम स्वयं अपनी
आज्ञा नहीं मानते अथ पर क्या आज्ञा करें— आप जहा तक घने
चेतन परिमह में तटस्थ रहना । त्रिभुजा परिमह जो त्यागंगा सुरी
होगा । विशेष क्या लिखें ? आप स्वयं विद्वान् हैं । विद्वान् ही नहीं
जिनेकी हैं । जितने त्यागी हों सबको इच्छाकार ।

सागर

नेठ घण्टि ८ स० २००८

×

×

आ० शु० चि०

गणेशवर्णी

×

श्री वर्णी मनोहर जी योग्य इच्छाकार

पत्र आया समाचार जात । जिसमें आपरा कल्याण हो वही
धरो— आप जानी हैं— किसी के द्वारा कुछ नहीं होता— हमारी
दुबलता जिस दिन चली जायेगी अनायास कल्याण हो जावेगा—
मेरी तो यह श्रद्धा है— जो दो द्रव्योंका परिणामन एक रूप नहीं
होता । हा सनातनीय द्रव्य में (१) स्कन्ध पर्याय अनेक पुद्गल

परमाणुआ की हा जानी है फिर भी (२) परमाणु का अन्य परमाणुआ के साथ नात्म्य नहीं होता - तदात्वे व्यतिरेकभावात्, बद्धस्रष्टृत्वात्-इयनद्वार म कोई बाधा नहीं - यत्ति इसको ही लोफ नात्म्य मानें तब कोई आपत्ति नहीं। यही जीव और पुद्गल का बद्धावस्था म नात्म्य मान लें तब लोफ की इच्छा। किन्तु दो गफ नहीं हो जाते- यत्ति ऐसा होता तब इसकी क्या आवश्यकता थी सिद्धत पुणु ट्तिह जीव मजीरनहेर अरण्यणु- तथा जीवस्त दु कम्भेण सह परणामाहि होति रागादि त्त्यादि कत्ता कर्म अधिकार की गाथा दरो-

हमारी तो यह श्रद्धा है राग दूर करन की चेष्टा करना रागात्ति की निवृत्ति नहीं करना - रागम जो कार्यहो उसम हर्ष निपात् न करना ही उसके विनाश का कारण है।

आ० घ० २ म० २००६

आ० शु० चि०
गणेशधर्मी

नोट - जितनी उपेक्षा करोगे उतनी शान्ति पाओगे। सुख शान्ति का लाभ परमेस्वर की देन नहीं उपेक्षा की देन है। परमात्मा म उपेक्षा करा - इसका यह अर्थ नहीं जो परम मग्ध छोड़दो- छोड़ना घराकी बात नहीं, वगरी घात है यदि हम पर नुड रहो - वासना तो और है करना कुछ और है उसे त्यागो- अथ विशेष पत्र तन का कष्ट न करना विकल्प त्यागना अच्छा - हमारी निज मानना अच्छा नहीं।

×

×

×

श्री युन महाराय सुल्लक मनोहर जी योग्य इच्छाकार

क्या लिम् - यही भावना होती है एकत्व अचत्व मा
हैं यही आत्माका कल्याणपथप्रदा है इ - । पत्र

उन्कीका ध्यान करु क्या कि आज

ननी

का आश्रय चाहता या किमी

ही

विचार हैं। शरणा अतुल नहीं कोई सात्री नहीं—यह धारणा वाला पकत्व अथवा भावना का पात्र नहीं—मेरी तो, यह श्रद्धा है जो मन्मथदृष्टि दर्शनशुद्धि आदि भावनाओंको नहीं चाहता हो जाती है—मेरा तो अंतरंग, मे यह श्रद्धा है वह शुभोपयोग को नहीं चाहता हो जाना अथवा घात है, मुनिव्रत भी नहीं चाहता—यह तो कुद्व नहीं चाहता क्या आप को लिख — क्या कि आप जो हैं मो में उक्तका विचन हो रहा कर सकता — यह जानता हूँ जो आपहीम रमण करताने है। कुछ मोहके नशम लिखमारा तो मुझे कुछ उपदेश लिखिये— आप जो प्रतिदिन उपदेश करतेहो रही अपनी और लायो, सस अधिन क्या लिख— तत्वमे मुझसे पूछिये तो इन गृहस्था का उचित यह है तो ये अब स्वोन्मुख होय। जो ५० वर्षके होगय लडका आदिसे पूर्णहैं एकदम नियुक्ति मार्गके पथिधन। धन धन्य रक्ता को दान देने म कुछ न मिलेगा — मिलना तो उम मार्ग म गमन करने से होगा— मेरा जन्म तो या ही गया अब कुछ उम मार्गकी सुवशाई सा शक्ति विफल हू पर तु कुद्व भयकी घात नहीं— आत्मद्रव्य तो नहीं है जो युवावस्था म थी— दृष्टि परिवर्तन की आवश्यकता है—आपका जिमम कल्याण हो सो करो— और क्या लिखें— परमार्थ स परोपकारा कोई नहीं। श्री जीवाराज जी को इच्छाकार।

आ० शु० चि०
गणेशप्रणी

श्री युव वर्णी जी कुत्रक मनोहर लाल जी योग्य इच्छाकार—

आप सानन्दम हैं धाचकर प्रमत्तताएइ। हम चैत्र सुनी १५ तक यही रहेंगे और फिर भी चिन्त और रहेंगे— आप निर्विकल्प रहो और आत्मशुद्धि करो— कोई शक्ति न तो आत्मीय कल्याण म साधन है और साधक है। हम स्वयं साधक धाचक

परिणाम द्वारा उसे मान लेते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि निमित्त कोई नहीं— अथवा मोक्ष भी जय होगा तब उस समय चेत्रादि भी तो होंगे उन्हें कौन नियारण कर सकता है ? अतः सातदस धर्म साधन करो और किसी में भय न करो— परिणाम मर्लीन न हो यही चेष्टा करो— हम क्या लिरें— स्वयं गलापाद म पड़े हैं। हमको तो इसकी प्रसन्नता होनी है जो कोई शुद्धमागम रह।

चैत्र सुदि १०

आ० शु० चि०

सं० २००८

गणेशवर्णी

×

×

×

श्रीयुक्त महाराज वर्णी मनोहरलाल जी साहब योग्य इच्छाकार—

पत्र आया— समाचार जाने— मेरा तो यह विरवास है मसार में कोई किसी का नहीं यह तो सिद्धान्त है। माथ ही यह निरचय है कोई किसीका उपकारी नहीं— इसका यह अर्थ नहीं जा मैं आपका उपकार किया हो— और न यह मानना हू जो आप मेरा उपकार करेंगे— हा यह व्यवहार अवरय होगा जो वर्णी जी की वर्णी मनोहर ने सम्यक् सल्लेखना करायी— परन्तु मेरा तो यह कहना है जो आपने गुरुकुल की नींव ठानी है उसे पूर्ण करिय— हमारी चिन्ता छोड़ो— हमारी सल्लेखना हमारे भवितव्य के अनुकूल हो ही जायेगी— अथवा आप लोगों के भव्य मामों से ही हमारा काम बन जायेगा— यहा पर जो ब्रह्मचारी मुन्तरलाल जी हैं उनसे इच्छाकार तथा श्री जीधाराम जी से इच्छाकार— यहाकी समाजसे यथा योग्य— यहा जो हकीम जी हैं उनसे आशीर्वाद।

इटावा

आ० शु० चि०

प्र० आ० व० १३ सं० २००७

गणेशवर्णी

×

×

×

शुल्लक मनोहरलाल जी वर्णी योग्य इच्छाकार—

जाना गये अच्छा किया— मेरी सम्मति तो यह है यहा

गर्मी के १० दिन या १५ दिन बिनाकर आपको मुजफ्फरनगर ही रहना चाहिये— वहा की जनता बहुत ही धर्मपिपासु है—तथा धर्म विपासु के साथ २ उगार भा है— गुरुकुल की रक्षा होगी तथा उसल ही होगी— सहारनपुर का तो है ही उनकी तो उसपर सग दख रख रहेगा ही—गुरुकुल से टासीन रहना सर्वथा ही अनुचित है— अतः आप सर्वनिकल्प छोड मुजफ्फरनगर आनाइये— हम तो १५० माल दूर हैं— इस वर्ष तो किसी ही प्रकार नहीं आ सकते— बीच में ही रहनेसे कुछ लाभ नहीं तथा अब हमारीशक्ति भी नहीं चो १ घटा भोड म शास्त्र पढ़ सकें— लोगा का प्रेम शास्त्र पढ़ा से है होना ही चाहिये— अगर शास्त्र न सुनाया जाये तब वह क्यों इनना कष्ट उठावें— मेरी तो यही धारणा है आजकल आदर्श मनुष्य तो धिरला ही होगा— आदर्श और बक्ता यह तो अति कठिन है—मेरी धारणा है, मिथ्या भी हो सकती है— अस्तु अभी आपकी अवस्था उसके अनुरूप है। अब एक स्थानको लक्ष्यकरके उमका उपयोग करलो— उत्तरप्रान्त का गुरुकुल आपकी अमरकीर्ति रहेगी। इसका यह अर्थ नहीं आपकी इच्छा यश की हो परन्तु जनता तो यही कहेगी बर्णा मनोहर हमारे प्रान्त का उपकार कर गण—हमारा तो अब न उपकार म मन जाना है और न अनुपकार में ही जाना है। इसका यह अब नहीं जो इसमे परे हैं, शक्तिहीन से उपकारतुपकार कर नहीं सकते—अन्तरंग से तो कयाय अरुरूप परिणाम होते ही हैं।

प्र० आ० घ० १५ म० २००७

आ० शु० चि०

गणेशायर्णा

×

+

×

श्रीयुक्त बर्णा जी योग्य इच्छाकार—

पत्र आया— समाचार जाने— निरुद्देश्य बुलाना कोई तत्व नहीं रखता— निरुद्देश्य दिल्ली गये उसका कोई फल नहीं ऐसे ही

मुनफरनगर बुलाकर क्या लाभ मिलेगा—यह बुद्धि म नहीं आता—
 केवल धातु धन्यवाद प्रणाली में कृतकृत्य मान लेना मैं उचित नहीं
 मानता— अभी आप वहा पर हैं और आपकी शानि मे बहा का
 प्रातापरण अच्छा है— इमका इसम प्रसन्नता है किन्तु हमारे आने
 मे विशेष क्या होगा यह हमारे ज्ञानमें जब तक न आता हम
 उहा आवें बुद्धि म नहीं आता— अत आप पञ्चमहाशया से
 स्पष्ट कह गे यदि कोई विशेष कार्य हा तब हमको लिखिए जो हम
 गयाबालो मे इ कार करने का प्रयत्न कर— अ यथा मेमे उपकाल
 म यात्रा करें यह उचित नहीं ।

शास्त्र मुनतेजाये चौबानाल उर्चगहा है । धोलने जाया
 वय धय की कफार करते जाये में तो इन वाद आडम्बरा म उय
 गया हैं । हम तो उमदिनमे अपो को मनुष्य मानगे— चो
 पञ्चपरमेष्ठीका स्मरण भला ही न करे किन्तु उनने चो माग घनाया
 है उस पर अमलकरे यही धर्म का मर्म है ।

अत हमारेअप प्रयान नकरना । हम अब रन्धापूजन जहा
 चावें जाने गे । वहा भी आ सकते हैं परंतु आपकी प्रतिषेधता
 नहीं चाहते ।

जेठ घदि ६ म० २००६

आ शु० वि०
 गणेशरर्षी

×

×

×

श्रीयुग महाशय लुल्लर मनाहरलाल का योग्य रन्धाकार—

पत्र आया समाचार जाने— अपना भाग भी है परंतु उत्सग
 निरपेक्ष नहीं— उत्सग भी है परंतु यह भी अपना निरपेक्ष नहीं—
 यह कय और किम प्रकार होता है - इसका कोई नियम नहा
 माथरु के परिणामा न उपर निर्भर है— आपन लिखा मैं अगतन
 म आऊ गा— मुझे आपकामह्वान मना टप्ट है । इसमे विशेष
 क्या लिखू— मेरा बुद्ध शरीर चल नहीं सकता— ४ मील चलना

कठिन है अस्तु जहा तक उनेगा निर्वाह करूंगा—मेरा भीयुन चाचाराम जी से सस्नेह इन्द्राकार कहना यह धृष्ट ही सत्जन व्यक्ति हैं।

धन्वासागर

नीमाम् यदि ४ स० २०-२

आ० शु० चि०

गणेशवर्णी

×

×

×

भीयुन महाशय वर्णी मनाहरलाल जी योग्य इच्छाकार—

पत्र आया—समाचार जानि—इसाख्य घटुत ही त्रिगड़ गया था—१ पैर चलना कठिन था—अब अन्धा है आज ५० हाथ चल—घर प्रतिदिन आता है—अब आशा है यह भी शान्त हो पायगा—मैं तो आपक प्रति निरन्तर यही भावना भा रहा हूँ जो आपकी वैयावृत्त किसीको न करनापडे तथा एसी प्रति शीघ्र ही हो पाये जो मा क स्नन न चूसन पड़े—आप विज्ञ हैं हमारी शक्य न करिये।

धा० जीवाराम जी से इच्छाकार तथा धा० मूलचरना को इच्छाकार

माप घटि १

आ० शु० चि०

म० ६००६

गणेशवर्णी

×

×

×

धायुन लुल्लक मनोहरलाल जी योग्य इच्छाकार—

पत्र आया समाचार जानि—मेरा तो यह प्रियास है पर क कल्याणमायका कत्त त्व भार भी माहमार्ग का साधक नहीं—मोक्षमार्ग का साक्षादुपाय रागादि दोष निवृत्ति है—रागादिक की की अनुत्पत्ति ही सम्बर है—रागादि निवृत्ति तो प्राणीमात्रे होता है किन्तु रागादि की अनुत्पत्ति सम्बरहानी ही क होता है। अभी तो हम धन्वासागर हैं—अब तो पक्षपान हैं न जान कय भड जान—श्री नीवाराम जी से हमारा इच्छाकार कहना—

वाला है उस चरहारनम कहते हैं । इमम अनेक विकल्प हैं—
 अस्तु— निमित्त को न मानने वाले ही निमित्त से काम ले रहे हैं ।
 यहा निमित्त को न मानने वालो की प्रचुरता है फिर आपको किस
 अर्थ ले गये कुछ समझ में नहीं आता—अस्तु फोकट चर्चा निमित्त
 की है— हमारा विचार अथ कुछ दिन म एक स्थान पर ही रहने
 का है— अब के जहा चातुमास हुआ बहा ही रह जायेंगे यह दृढ़
 निश्चय है, यहा से शाहपुर जायेंगे— मेरा तो यह विश्वास है जो
 यथार्थ निरूपण करनेवाला है वही सम्यक्त का निमित्त हो सक्ता
 है । सम्यक्त जिसके होगा उसके उसकी श्रद्धा होगी तभी तो होगा—
 विशेष क्या लिखें—

का० सु० १२

आ० शु० चि०

सं० २०६६

गणेशवर्णी

x ' x

x

x

श्रायुत महाराय छुल्लक मनोहरलाल जी वर्णी योग्य इच्छाकार—

पत्र आया समाचार जाने—आप अथ विकल्प न करें और न
 यह चिन्ता कर जो सहारनपुर वाले द्रव्य न दवेंगे—हमारा तो
 विश्वास है न कोई देने वाला है और न कोई दिलाने वाला है और
 न कोई लेने वाला है— व्यथ ही सकल्प विकल्प के जाल से यह
 नृत्य हो रहा है— और जाने का विचार किया सो अनि उत्तम है—
 आपको क्या लिखें यहा क्या करना किन्तु यह अरथ ध्यान रखना
 जो निरपेक्ष रहना— इस शब्द का अर्थ व्यापक लेना—ससार के
 काम चले चोहे न चले स्वयं उसके कर्त्ता न धनना—

लेठ सुदि ६

आ० शु० चि०

गणेशवर्णी

x

x

x

महाराय श्री १०५ छुल्लक मनोहरलाल जी योग्य इच्छाकार—

पत्र आया समाचार जाने—आप स्वयं षट्ज्ञानी हैं— किन्तु

जहा तक घने ज्पेक्षाओं को न भूलना—रागाश भी राग ही है अतः प्रत्येक समय का भी वध करने वाला है— जैसे तो एक समय जो औत्सुक्य राग होगा वह जितना होगा वधक और विकारी ही होगा— मेरी भावना अब गिरिराज पर ही रहने की हो गयी, यह प्रान्त छोड़ दिया है— आप को अब कुछ काल जयलपुर और सागर को भी दना चाहिये । मैं आदर्श नहीं करता किन्तु प्रान्त का ध्यान जब तक राग है रखना ही चाहिये— विशेष क्या लिखू— मैं वैसाय में जहा हूँगा आपको लिखूंगा—मेरी तो वृद्धापस्था है— पक्वान हूँ—

फटनी

फा० ४६३० स० २००६

आ० शु० चि०

गणेशवर्णी

x

x

x

श्रीयुत छुल्लक मनोहरलाल जी वर्णी योग्य इच्छाकार—

पत्र आया—हमारी तो श्रद्धा यह है न हमारे द्वारा किसी का उपकार हुआ और न अयके द्वारा हमारा हुआ— निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध का हम निषेध नहीं करते— हम क्या कौन नहीं निषेध कर सकना— धोलना और धान है । आपका हमारा अन्तरंग से सम्बन्ध है परन्तु यह भी एक कल्पना है—आपका धोध निर्मल है— अब जो आपका अन्तरङ्ग साची देवे वही अगीकार करो— न तो हमारी घात मानो और न मित्रवर्ग की मानो— यदि हमसे पूछो तब न आचार्य की मानो और न साधु की मानो— हम क्या कह—होता यही है परन्तु मोह की कल्पना में जो चाहे कहो— हमारा अर्थ यही अभिप्राय है जो एक स्थान में शान्ति से कालयापन करना यह भी एक मोह की कल्पना है— यदि आप हमारा अन्तरङ्ग से हित चाहते हो तब यह पत्र व्यवहार छोड़ो—दूसरी समिति यह है इन मित्रवर्गों को यही उपदेश दो जो त्यागमाग में आये । केवल गैल्यवाद से जल तिलोमन सदृश शुद्ध

तब नहीं—मुनि महाराज का स्वरूप तो आगम म है न्नी म सन्तोष करो—चरणानुयोग म क्या है ? सा पण्डित धर्म जाने—वर्तव्यपथ में मुनि महाराज जाने—श्री जीवाराज जी योग्य इन्द्राकार आप वृद्ध हैं। आप का लिखना मान्य है—हमको अब सन्तोष है जो आप बुल्लक जा के पास रहत हैं। आ० सु० १४ नौ प्राण काल ललितपुर पहुँचेंगे—

आसाढ़ सुदि ११

म० २००८

x

x

आ० शु० वि०

गणेशधरणी

x

श्रीयुक्त महाराज बुल्लक मनोहरलाल जी योग्य इन्द्राकार—

पत्र आया समाचार जाने—ज्ञान पानेका फल यही है जो स्वपरोपकार करना। मेरे वहा आने की अपेक्षा आप उसी प्रान्त म रह—आपके पास सम्यग्ज्ञान है और चारित्र भी है—हम तो कुछ उपकार नहीं कर सकते क्योंकि वृद्ध हैं—आपः श्रमी तस्य हैं—सब कुछ कर मस्ते हो—हम का० सु० ३ को पसीरा जायेंगे।

ललितपुर -

आ० शु० वि०

गणेशधरणी

x

x

x

महाशय श्री १०५ बुल्लक मनोहर लाल जी धरणी योग्य इन्द्राकार—

आपको मैं ज्ञानी और विरक्त मानता हूँ—मैं अपने को कुछ नहीं मानता—मैंने बिन बालकों को पढ़ाया था ये मुझे १० वर्ष पढ़ा सकते हैं—मैं उनको महान मानता हूँ। मैं तो कुछ जानता हू। मैं तो कुछ जानना ही नहीं और न इससे मुझे कुछ डर है। आपको यही सम्मति दूंगा जो तुम्ह समझ कह उसको मानो पर की सुनी मत मानो—और शान्तभाव से कार्य करो—हमको गुरु मत मानो—अपनी निमल परिणति को ही अपना कल्याणार्थ म साथी माना—रेल के यातायात म विकल्प मत करो लहा पर

विशेष लाभ समझा जायों न ममभो मत जाओ हम से आप का
 हिन द्वारा यह लिररना तुम्हारी कृपणता है— यह भी भ्रूषण है—
 किन्तु धान मर्यादित ही हिनरर होनी है। आत्मा ही गुरु है—
 न विस्त काय म सम्मति देये रये—

आ० सु० १०

सं० २००६

आ० शु० चि०

गणेशाय

x

x

x

श्रीयुत महाशय सुल्लक मनोहरलाल जी योग्य इच्छाकर—

पत्र आया— समाचार जाने—प्रसन्नता हुई—और आपका
 समागम मुझे हृष्ट है—परन्तु आप जानते हैं मैं स्वप्न म भी गुरु
 नहीं बनना चाहता—परमार्थ से है भी नहीं—सब आत्माएँ
 स्वप्न हैं। अतः आप स्वयं स्वप्न हैं—विसम आपको शान्ति
 मिले सो कर।

आ० सु० १

सं० २००७

आ० शु० चि०

गणेशाय

x

x

x

श्रीयुत महाशय वर्णा मनोहरलाल जा योग्य इच्छाकर—

पत्र आया हमारा स्वास्थ्य अच्छा है इसकी कोई चिन्ता न
 करो—आप सब विकल्प त्यागो—कोई प्रसन्न हो या कर्ष
 अप्रसन्न हो अपनी आत्मा प्रसन्न रखो—आत्मीय परिणति ही
 स्व्याण का प्रयोजक है—फिर आप तो जिनागम के भर्मह है
 अपनी आकुलता क्या रखते हो—यदि गुरुकुल चलाने की इच्छा है
 तब उस प्रान्त क जा विश्व पुन्य हैं उनके साथ परामर्श कर जो मार्ग
 निकले उस पर अमल करो—अन्यथा विकल्प छोड़ो।

आ० शु० चि०

गणेशाय

- x

x

x

श्रीयुक्त १०५ महाराय सुल्लक मनोहरलाल जी योग्य इच्छाकार—

पर आया समाचार जाने— मुझे तो आनन्द इस बातका है जो आप अपने स्वरूप में ही रत रहते हैं। श्रीमान पं० धर्माचार्य जी जो पदार्थोंके अन्तस्सलसो स्पर्श करता है। उनके विषय में क्या लिखूँ ? उनके सद्भाव में प्रायः घटुत जीवों का कल्याण होगा। हमारा इच्छाकार कहना— आपकी प्रतिभा ही तुम्हारे कल्याण में सहायक होगी अन्य के आश्रय की आवश्यकता नहीं— हम वर्षायोग घाट कहा जायेंगे निश्चय नहीं— जायेंगे अरश्य— हमने हालीपर घंठना अनुचित समझकर त्याग दिया है— पैरा में विशेष शक्ति नहीं— अतः ३ मील या ४ मील चलेंगे— प्रायः इसी प्रान्तमें जायेंगे— आपाङ्ग मास तक ललित्रपुर पहुँचे या आपके प्रान्त में पहुँचे असम्भव नहीं। परन्तु शक्ति पत्नो मुख है।
का० घ० ३ स० २००६

आ० शु० चि०
गणेशायर्णी

x

x

x

श्रीयुक्त महाराय सुल्लक मनोहरलाल जी योग्य इच्छाकार—

अन्तरंग से निर्मल रहना चाहिये— पर के लिये उपसर्गों से आत्मा की क्षति नहीं। आत्मीय निर्मलता की श्रुति से आत्मा की क्षति होती है। एष पर की प्रशंसा में आत्मा की कोई उत्कर्षता नहीं है— केवल स्वशुद्धि ही कल्याण का मार्ग है— हम तो आन्तक अपनी दुर्बलता ही में जैसे कोई फंसाने वाला नहीं— अतः लहा तक घने परकृत उपद्रवों को उपद्रव न मानो जो मन में सकलेशना होती है उसका मूल कारण मिटाओ— परमार्थ से वह भी औदयिक भाव है सुतरा नाशमान है— कोई भी बुद्ध नहीं— निर्विकल्प रहना ही अच्छा है।

आ० शु० चि०
गणेशायर्णी

श्रीयुक्त १०५ सुल्लक सहजानन्द जी योग्य इच्छाकार—

पत्र आया— आप सानन्द पहुँच गये— यह सर्व जीगानन्द की महिमा है— यह प्रसन्नता की कथा है जो आप का फोड़ा अच्छा हो गया— हमारा अच्छा हो रहा है— उदय की बलवत्ता मानना व्यर्थ है— यदि अद्वान में विपरीतता आये तब मैं उसे उग्य की बलवत्ता मानता हूँ— यों तो शारीरिक बेगना प्रतिदिन होती ही रहती है— आपके आने से मुझे बहुत प्रसन्नता हुई— मेरा धार्मिक पुरुषा से यह कहना है जो कल्याण का लाभ इष्ट है तब इन पर पत्थरों से मूर्च्छा त्यागो— कल्याण का सर्व से प्रचण्ड घाघक परममता है। जिसने इसे त्यागा उसने अनन्त ससार को गिटा दिया— मेरा सर्व आनन्द मूर्त्तियों से इच्छाकार कहना।

अगहन यदि १ स० २००८

आ० शु० चि०

गणेशरणी

×

×

×

श्रीयुक्त महाशय सुल्लक मनोहर लाल जी योग्य इच्छाकार—

आप स्वयं योग्य है— कल्याण का पथ आचरण कर रहे हैं— व्यर्थकी चिन्ता में कुछ लाभ नहीं— हम तो आप के सदा शुभ चिंतक ही नहीं शुद्ध चिन्तक हैं— श्री जीवाराम जी से इच्छाकार।

भाद्र यदि ११ स० २००८

आ० शु० चि०

गणेशरणी

×

×

×

श्रीयुक्त महाशय सुल्लक मनोहरलाल जी योग्य इच्छाकार—

पत्र आया समाचार जाने— जिसम आपको शान्ति मिले वह करो— मेरा तो यह विश्वास है जो भी कार्य किया जाता है शान्ति अर्थ किया जाता है तथा अपने ही हित के लिए किया जाना है। काय चाहे शुभ हो चाहे अशुभ हो भद्र मानुष वही है जो लोकेपणा से परे है। मैं तो रल आन्ति के विकल्प को अनुपादय समझता हूँ—

जब आवश्यकता प्रतीत हुई बैठ गए, नहीं हुई नहीं बैठे— जग
उल्लूक के इसका विफल ही व्यंग्य है— मैं तो चरणानुयोग इतना
ही मानता हूँ किन्तु सक्लेश परिणाम ही मत करो - प० जी से
हमारी इच्छाकार— अनियोगयनम व्यक्ति है।

आ० शु० चि
गणेशधर्मी

x

x

x

श्रीयुग लुल्लूक मनोहरलाल जी योग्य इच्छाकार—

जहां पर विच्छेद कारणों का भङ्गाय म शान्ति रह प्रशसा तो तप
है और जहां हा मे हा मिले वहां आत्मोत्कर्ष की वृद्धि नहीं होती—
अस्तु विशेष क्या लिखें— आप सत्य हैं— निसम आपको शान्ति
मिले सो करिय— हमारा तो जीवन या ही गया— शान्ति का
स्वाद न आया परतु रुदन करने में क्या लाभ— श्रद्धा अटल रहनी
चाहिये— चरणानुयोग के अनुसार आत्मा को घनाना फल्याणप्र
नहीं किंतु हमारी प्रवृत्ति गमी हो जो उम दरकर अनुमान करें
अन तो य है— भोचनानि के त्याग स आत्मदिन नहीं, आत्मदिन
तो अ तरग निर्मल अभिप्राय मे है श्री जीवन जी का
इच्छाकार कहना—

आ० सु० ६ स० २००६

आ० शु० चि०
गणेशधर्मी

x

x

x

श्रीयुग लुल्लूक मनोहरलाल जी योग्य इच्छाकार—

आपके २ पत्र मिले— मैंने उत्तर द दिया— आप मानद स
धर्म साधन करते हैं मुझे आनन्द है। मसार म निसने आत्मीय
करवाण को कर लिया यही महती महत्ता है— प्रशसा नि दा ना
कमहन विकार है— जा मोचमार्गी है यह दोनों मे परे हैं— उदा
पर सरदा धन पडती है— अत मैंने यही निश्चय किय जो मे माम

एक स्थान ही पर घिताऊ— आपभी मेरठ मुजफ्फरनगर आदि स्थानापर ही घिनाइये— यहा आना अच्छा नहीं— फागुन मास म में आपको लिखूंगा— साथमे जो ब्रह्मचारी हों उनसे अच्छाकार— गृहस्थासे दर्शनविशुद्धि—

अगहन षष्ठी ८ मं० २००६

आ० शु० चि०

गणेशारणी

×

×

×

श्रीयुक्त जुल्लक मनोहरलाल जी योग्य इच्छाकार—

आप सानन्द हागे— हमारा फोड़ा अथ अच्छा है— २ मास पूर्ण सतत प्रयत्न करनेपर उत्तम हुआ— यद्यपि हमारेमें उसकी योग्यता थी परन्तु कुछ कारण फूट भी थे— जिस समय डाक्टरन उसे बीरा उससमय सर्के व्यापार पृथक् पृथक् ये फिरभी एक दूसरे का निमित्त था। हम अप्रतीक आहार रहेंगे—

पौष षष्ठी ४ स० २००८

आ० शु० चि०

गणेशारणी

×

×

×

“समावणी पर गुरु शिष्य के पत्र युगल”

(अ) श्रीयुक्त १०५ जुल्लक मनोहरलाल जी योग्य इच्छाकार—

दशालंकरण पर सानन्दसे गया— मैंने आपका अपराध किया नहीं और न आपने मेरा किया, अतः क्षमा मागना सर्वथा ही अनुचित है, हा यह अशय अपराध है जो मैं आपको और आप मुझको अपना दितू समझते हैं एतदर्थ ऐसा भावना भावो जो यह मान्यता समाप्त हो तथा इतने निःशक रहो जो हमारा न कोई सुधार फर्ना है न और न इसके विरुद्ध करनेवाला है— मेरातो यह विश्वास है जो सम्यग्दृष्टि श्रद्धासे तो केवलीसदृश है— चारित्र्य मोहटन तरतमता का कोई लोप नहीं कर सकना— वह

परिपाटी में होती ही है— मेरा आपके साथ जो भी प्रकृत्यादी हा
 नम इच्छाकार कहना ।

भाद्र सुदि १४ सं० २०६६

आ० गु० वि०
 गणेशधरणी

x

x

x

(आ) श्रीमान् प्रातः स्मरणीय मुख्य्य पूज्य श्री १०५ छत्रक पक्षी
 जी महोदय— मेधा म सविनय वंदना ।

अपरंथ आपका कृपा पत्र मिला-- पढ़कर निर्मलता का अनुभव
 हुआ । महाराज जी ' फल ही मैंने आपकी सशामे पत्र भेजा किन्तु
 इस बालकको यह ध्यान न रहा कि तेरे निमित्त गुरुजीको अनेक
 बाह्य कष्ट हुए और तू समा मागने का 'स' भी भूल गया और
 इतनी समावणी हुई कभी भी ध्यान न रहा सो महाराजजी
 समावणी के नाते अर्थोन् रदि के अनुसार आप जैसे महान् म
 समा मागने की बालका विकल्प ही नहीं हुआ और कभी कुछ
 ध्यान हुआ तो साहस नहीं हुआ -- कि इस दिन मैं समा मागने
 से पहिले अर्पेदली यह सिद्ध कर कि आपको आशुलता अनुपता
 हुई । मेरे हृदयमें यह बात है कि आप प्रकृत्या समाशील हैं, मुझे
 अपने आपको समा करने की कमी है और जो आपने लिखा है
 यह मेरे कल्याणार्थ तत्परस्वरूप का दिग्दर्शन करानेकेलिये लिखा है
 इससे मेरे भावमें भलाई हुई-- कमी कमी मेरे किसी क प्रति,
 व्यर्थ मत्ताय जाने पर "यह मेरा अकारण विरोधक क्या होता" यह
 विचार हो जाता था परन्तु आपके उपदेशसे अब मेरे इस
 विचार से दूर रहने का प्रयत्न है तथा भावना करता हू कि भविष्य
 में आपकी कृपा से ऐसा सहनशील रह कि कोई बुद्धको को
 अपनी चेष्टा से-- सुखी होहु, "मेरा तो तो भविष्य है सो अपने
 चतुष्टय से हो रहा" इस निश्चिंति के अनुसार अपने स्वात्मात्मन

के योग्य रहने रूप मार्ग में व्यर्थ विकल्प के कंक न पिडाड ।
श्री प्र० जीरामजी आदि सधका आपको बंदना पहुचे । आपके
आदर्शोपशारीर्यात्मक पत्र का लाभ मुझे निज माग पर चलने में
विशेष सहायक निमित्त होता है ।

आखिरत घनी ३ स० २००६

आपका
विनम्र मेयक अकिञ्चित्कर
बालक मनोहर

“पूज्य श्री १०३ चुल्लक मनोहर जी घर्षी की जयन्तिके अवसरपर
उनके प्रान्तरमरणीय गुरु जी के पत्र”

(अ) भुजफर नगर समाज को—

सर्वसमाज योग्य कल्याणभागी हो— जिस ससार भीर
आसन्न भव्यकी जयन्ती मना रहे हो वह कल्याण मार्गका
प्रकाशक हो यही हमारी भावना है— यही कहना है ऐसे सुअवसर
पर यदि कुछ चिरस्थायी आत्मीय उपकार करनेकी अभिलाषा है तब
परकीय पदार्थों में जमना त्यागो साथ ही ऐसा स्थायी काय करो जो
आप लोगों को स्थायी कीर्ति रहे— दिन पर पन्थों में चिरकाल से
उलक रहेहों उन्हें त्यागो— हमारी तो यह भावना है जो मन्दर
जाकर भगवान में यह प्रार्थना करो हे भगवान हमें ऐसी सुमति दो
जो फिर मन्दिर न आना पड़े— ज्ञान देखर भी यही भावना मागों
फिर ज्ञान न देना पड़े— विशेष क्या लिखूँ— एक गुरुकुलसंस्था
आपकी चिरनीयी हो निम्में आगम का प्रसार है— यदि वहा पर
पं० हुकमचन्द आदि हों तब हमारी क्या कहें कहना—

डटावा
२-११-५०
आ०

(था) मेरठ समाज को — (ब्र० जीवाराम जी द्वारा) -

श्रीयुत ब्र० जीवाराम जी योग्य इच्छाकार—

श्रीयुत लुल्लक मनोहर जी मनोहर ही हैं— मैं यह भावना भाता हूँ जो यह व्यक्ति सानन्दमे जीवन बिनाकर स्वपरोपकार करे। यह बहुत प्रतिभाशाली व्यक्ति है। इसकी धारण शक्ति बहुत ही उत्तम है। यह एक बार ही सं धारणा कर लेता है। जब यह अष्टसहस्री प्रमयकमलमार्तण्ड ज घकाण्ड कमकाण्ड को पढ़ता था एक घण्टा में याद करलेता था। घर्त्तमानमे भी अपने पदकी रक्षा करके समययापन करता है— आपने इनकी जयन्ती पर उत्तम कार्य किया। सही भक्ति तो यह है जो इनके नामकी छात्रवृत्ति दकर २ छात्र हस्तनापुर गुम्बुल मे पढ़ाओ या किसी बड़े विद्यालय मे पढ़ाओ— यह हमकी मानता है इससे हम इनकी क्या प्रशंसा करें— हमसे पूछो तो यह निवृत्त भव्य है। इसका नाम तो परमेष्ठी मन्त्र में लिया जायेगा। विशेष क्या लिख—

आ० शु० वि०

गणेशवर्णी

X

X

X

(इ) इन्दौर समाज को—

श्री १०५ लुल्लक मनोहरलाल जी की जयन्ती मङ्गलजननी हो— प्रथम तो यह विशिष्ट ज्ञानी है— ज्ञान के साथ चारित्र्य भी हैं— साथ ही घत्ता भी उत्तम है—ऐसे मानवकी जयन्ती किसको मङ्गलकारक न होगी—यह मनुष्य दीर्घजीवी रहे यह मेरी भावना है— अन्तरमे से यह कामना मेरी है जो ह प्रभो ! तर ज्ञान में ऐसा जीव दिग्गधर मुद्रा का धारी हो जिसमे धर्म की प्रभावना विशेष हो।

चारित्रकी महिमा ज्ञानम है— अभी इस समय इमका समागम प्राय नहीं दखा जाता था—इस बुटि को आपने पूर्ण की, इसकी मुझे क्या जननामात्र को प्रसन्नता है। आप ज्ञानचारित्र के साथ षक्त्व गुण मे भा पुष्ट हैं—यह सोने मे सुगन्ध गुण के सन्श है—रत्नता ही नहीं आप सरलस्वभावके हैं आप शनयप जीरी हों यह मेरा आशीर्वाद है।

सरल स्वभाव के साथ आप कृतज्ञ भी हैं।

मेरी आभ्यन्तर भावना है जा आपका जीवन ज्ञान और चारित्र क समागम में ही पूर्ण हो आपका जैसा निर्मल ज्ञान है वैसा ही निर्मल चारित्र हो— इस बुद्धकृति का अन्त ही और साक्षात्मोक्ष मार्ग का साधक दिगम्बरपदका लाभहो। आपमे सर्वमे महान् गुण कृणवना है जो कि मान्यताकी जननी है। मेरी ता यह सम्मति है जो वही मनुष्य ससार के षयनोंको काट सकता है जो अपनी ओर दरता है। प्राय मनुष्य पर के विषय की चिन्ता करत दखे जाते हैं। यह मोह का जाल है— परमार्थ से कुछ नहीं।

येन दृष्टं परब्रह्म सोह ब्रह्मेति चिन्तयत्।

कि चिन्तयति निरिचन्तो द्वितीयं यो न परयति ॥

मेरा तो यह श्रद्धा है पुण्य से या उसके फल मे शान्ति लाभ नहीं।

अलमर्थेन कामेन कुहतेनापि कर्मणा।

ण्ड्य संसारकान्तारं न प्रशान्तमभूत्तम ॥

कारण है जो मेठ को भी एकान्तवास करना ही पड़ा— ससार मे सर्वमे महान् पुरुष तीर्थरों का ही यह सर्व त्यागना ही पड़ा। शपम जैमे थे वैमे हो गय।

का० ष० ४, स० २००६

आ शु० चि०
गणेशायर्षी

x

x

x

श्रीयुग सकल पञ्चान महाराय मुजफ्फरनगर योग्यशान विशुद्धि—

आप लोग मानन्दसे होंगे— यर्षी जी सानन्दमे पहुँचे होंगे। मेरी तो यह भावना है जो आप महानुभावोंको उनके द्वारा धन लाभ हो— मेरी इतना वृद्ध और दुर्बल हो गया हूँ जो अर्थ आप महानुभावोंको कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकता फिर भी भावना आप लोगके कल्याण की सनन रहती है— मेरा यर्षी जी म कहना है जो आप धमी प्रान्त म रहें और अधिक समय मुजफ्फरनगर मेरठ आदि में दवें। वस्तुतस्तु कल्याण का मार्ग प्रत्येक में है। हम लोग अनादि पाधनमे पराधीन हो रहे हैं और आत्मीय शक्ति को हान मान रहे हैं— यह होना ही हमको दुःख की खानि है, अतः पराधीनता छोड़ शूर बनना— फिर न तो मेरी आवश्यकता होगी और न यर्षी की— अनी हमारी क्या द्रोहिण भगवान की भी आवश्यकता छूट जायेगी— स्वयं भगवान् हा जायेगे—

१५ दिन बाद सोनागिरि पहुँचेंगे—

वाह		आ० शु० चि०
फा० घ० ७ म० २०००		गणेशचर्णी
X	X	X

श्री ब्रह्मचारी जी (ब्र० जीयाराम जी) इच्छाकार—

सकार की गति विचित्र है—यह सर्व कहते हैं। अपनेको नसमे प्रथक् समझते हैं यही आरब्ध है। जिस दिन अपनी दुर्बलता का बोध हो जायेगा यह कल्पना मिलव हो जायेगी।

मुरार		आ० शु० चि०
०२—१—५२		गणेशचर्णी
X	X	X

श्री ब्रह्मचारी जी (ब्र० जीयाराम जी) इच्छाकार—

सानन्दसे काल नाश यही करना। आपत्तियां ता पयाय म

आएंगी जाएंगी सहन करना । अशान्ति न आने यहा कर सकते हैं ।

इष्टाना
८—१—५१

आ० शु० चि०
गणेशमूर्ति

x

x

x

श्रीयुग महाराय ला० विनेश्वर नास जी योग्य इच्छाकार—

आपका पत्र आया था—मेरा तो यह प्रिमास है ससार कोई वास्तवस्तु नहीं और न मोक्ष कोई वास्तवार्थ है । आत्मा ही ससार और मोक्ष है— आत्मा ही निर्मल और समल परिणामों से जय युक्त होता है तब ही यह व्यवस्था हो जाती है—आप जहा तक घन स्वात्मपरिणतिके निर्मल करनेकी निरन्तरचेष्टा करिए और यहा यहा जाने में कोई तत्व नहीं आप जानते हैं किसी की परिणति किसी से नहीं मिलती और न मिलेगी और न मिली थी । अतः पराराधना की चिन्ता छोड़िये—स्वात्मारामना की ओर दृष्टि दीजिए केवल धर्मी या अर्थ की सगति में विशेष लाभ की सम्भावना नहीं ।

आरण्य धदि ११
म० २००५

आ० शु० चि०
गणेशमूर्ति

x

x

x

श्रीयुग विनेश्वर प्रसाद जी योग्य दशन विगुद्धि—

पत्र आया समाचार जाने—आप स्वयं विद्वान् हैं । ससार अनित्य है यह आपको सम्यक विदित है क्याकि पयाय है । इसने निर्माता हम ही हैं । “मते विनिगन विश्व मय्य लयमेप्यति मृत् कुम्भानल धीचि कटक कनक यथा” आत्मा की प्रकार परिणति का नाम ही ससार है इसका आपको अनुभव ही है । कल्याणका माग कहीं नहीं हमही म है अतः सर्व विकल्पको त्याग चही करो । गृहिणी की श्रीपथकरो परन्तु गृहिणीको गृहिणीही मानो—मोह कं जाल में न फसो—भगवान् का गुणगान करो परन्तु उमे

निच १ मानो । सूर्य पर द्रव्य म राग होइो— विरोध समय निचन पर लिखा गा ।

आ० घ० ११ सं० २००८

आ० शु० चि०
गणेशायर्षी

x

x

x

श्री महानुभाय लाला जिनेश्वरदाम जी योग्य दर्शन विशुद्धि —

पत्र आया समाचार जान—आप जानते हैं मैं जैसा हू—मुझे इस बात की प्रसन्नता है जो आप उम पथ पर हैं जो संसार क बंधन काट दता है—यह जो संसार के सम्बन्ध हैं पयाय क अनुकूल होते ही हैं इनम निजत्य कल्पना ही संसार की जननी है । जहा यह गई सूर्य गया—अत गृहिणी वा सम्बन्ध पर्याय के अनुकूल हुआ इसे धीन मेंट सकता है । यदि चाह तो गृहस्थ भी मेंट सकता है और यदि निर्मलता न आई तब छोड़कर भी नहीं मेंट सकता—अत अन्तरंग स पर पदार्थ म निजत्य मेंटना ही पुण्यार्थ है । मेरा तो यह विश्वास है सम्पत्ति परमेष्ठी में भी निजत्य कल्पना मेंट दता है । उन्ह भी होय मानना है । राग होना और घात है, राग म राग होना अन्य घात है

जेठ यदि १० सं० २००८

आ० शु० चि०
गणेशायर्षी

x

x

x

श्रीयुन महाराय लाला जिनेश्वर दाम जी योग्य दर्शन विशुद्धि —

आपका पत्र श्रीपवनकुमारद्वारा मिला—आपके ऊपर तो आपत्तिया आई हैं यह नवीन नहीं । संसारम यही होता है । इनके होने पर सावधान रहना जानी का काय है—धाम्मय म जिस दिन हम इन आपत्तियों को श्रृण जानकर अदा—उसी ^ इस भयोद्धि से पार होन म । हू जो किसी क समझ अपनी

स्वयं अनन्तशक्तिका धारक है और जिसमे लड़ना है वह भी अनन्तशक्तिवाला है। परन्तु यह उसके धारका ज्ञाता है। वह धारका ज्ञाना नहीं। प्रत्युत इस चेतनने ही उसे अपना शत्रु मान रखा है और इसीने उसके विकार परिणामनको अपनाया है अन अपनी विकार परिणतिको ही रोने, यही समारसे पार करेगी, व्यर्थ किसीने समझ अपनी मूल प्रकट न करो। हमारा सम्मति मानो तब प्रत्येक समय प्रमत्त रहो। हम तुमको कौनसा दुःख है। सप्तम नरकका नारकी जिस अवस्थामें है उसको अरण्यकर हम कप जाते हैं और वह जीव उस घोरमकट में अनन्त ससार के नाश करने वाले परिणामों को उत्पन्न करलेता है। तुम्ह कौनसी आपत्ति है— स्त्री बीमार है— औषध करो— व्यग्र मत हो और कुछ दिनका ब्रह्मचर्यव्रत लेलो। मेरी सम्मति तो १ वष फी है, तुम अपनी परिणति विचार कर व्रत लेना और उसे भी उपदेश दो जो वह भी मोक्षमाग म लग जाये। किसोकी सहायतामरो अच्छा है परन्तु उसे यह अवश्य शिक्षा दना। प्रियेक से काम करना। मेरा आपसे यही धर्म स्नेह है जो था— हमको जो मिलता है वह गुरु ही मिलता है। मैं इसमे हर्ष ही मानता हूँ।

धैसाय मुनि २ स० २००८

आ० शु० चि०

गणेशवर्षी

×

×

×

श्रीमान् लाला नमिचन्द्र जी वकील—योग्य दर्शन विशुद्धि—

पत्र आपका आया पढ़त ही सन्तोषजनक है— धर्मपुरी बनाने के लिये मेरी समझ में किसी व्यक्ति विराय की आवश्यकता नहीं। आवश्यकता कुछ तत्वज्ञानी निरपेक्ष सत्कारी जीवोंकी है। आकाश (स्वर्ग) मे नहीं आवे। आप ही लोग उसके योग्य हैं— यद्यपि अभी आपको कुछ शक्य है और मैं उसको योग्य भी मानता हूँ वह आपका निमलता शीघ्रही निकालदेगी। मैं भी अब वृद्ध

हूँ ऐसी घर्मपुरी का आश्रय चाहता हूँ— मुझे आह्वानन की आवश्यकता नहीं— मैं तो कोई योग्य नहीं किन्तु हृदयसे कहता हूँ उत्तमसे उत्तममनुष्य यहा आयेँगे और फायरुपाय मन्त्रेयना कर जम माफ्क्य का लाभ लेंगे— परन्तु आवश्यकता है आपकी परन्तु आवश्यकता है आपकी सम्मति पर जो आपको कहते हैं आरुद्द हा जायें— शात्रिक जाल र रच— मैं इश्य म चाहता हूँ— उम नगरी म यही रहूँ जो निराल्य हो— सर स यही शान्यचेतन परिग्रह मे रहिन हा— आगामी चातुमास म इसकी स्थापना हो जाये— स्थान स्वतन्त्र हो— विरोध क्या किम्— लिखना तो बहुत है परन्तु उमसेँ तत्व की पूर्ति नहीं— फायमम्पान्न करन स ही लाभ है ।

ज० सुदि ८ सं० २००७

आ० शु० चि०

गणेशायर्षी

X

X

X

श्रीमान् महाराज लाला नमिचन्द्र जी योग्य दशन विशुद्धि —

पत्र आपा समाचार जाने— आप स्वयं विज्ञ और विपकी हैं । कल्याणमार्ग म यही मुख्यकारण है — त्रिमने विवेक और विज्ञान है नसे अब किसीमे माग पूछनेकी आवश्यकता नहीं— मेरा तो यह विश्वास है सुमागता निश्चय स्वयं होना है । अन्य ना निमित्त मात्र है । सो निमित्त भी आपने अच्छे हैं । हम वो इम स्वयं विषय म पर की सहायता चाहत हैं । आपको क्या सहायता दे सकते हैं । हा हमारा यह अन्त विश्वास है जो पर की सहायतानो नहीं चाहत य ही मात्रमागक पात्र हैं ।

पौष यदि २ सं० २००५

आ० शु० चि०

गणेशायर्षी

X

X

X

श्रीयुक्त महाशय थावू नेमिचन् जी याग्य दर्शन विशुद्धि—

पत्र आपका आया समाचार जाने—आप विह्व होकर व्यर्थ रोते हैं । चारित्रकी उत्पत्ति काल पाकर होगी । मम्यन्शन तो श्रद्धारूप है । आपको श्रद्धाम तो भन्दह नहीं फिर इतनी आकुलता क्या—श्रद्धा तो अन्तरङ्ग वस्तु है आप जानते हैं ।

यदि आप हमारो सम्मति मानो तब घर मत छोडना तथा आतीथिका की पूर्ण धिरना जब हो जाये तभी घरालत छोडना—याय से आनीथिकां उपाजन करना क्या दोषाधायक है—श्री पुत्र घायन घयके कारण नहीं, आसक्तता घयका जनक है । स्वाशयनत्र कल्याणका कारण नहीं । चरणानुयोग से अनुकूल यत्राशक्ति आचरण होनाचाहिये—घन का होना कपायके क्षयोपशम से होता है । श्रद्धा के लिये घन की आप्रश्यकता नहीं—कल्याणतरु का अकुर श्रद्धा से ही होना है । काल पाकर वही तरु हो जाता है—घनी होनेपर आनकन जो कठिननाप हैं हानी घनी जान सकता है । घाईना का कहना था यदि अन्नरंग मूर्च्छा नहीं गट तब घनी घनना दम्भ को आश्रय दना है—आप विराप विकल्पों से छोड़ राध्याय करना वही सप्रमार्ग प्रतावेगा । आतुर होने की आप्रश्यकता नहा ।

भाद्रसुति १५ म० २००२

आ० शु० चि०
गणेशचर्णी

λ

×

×

श्रीमान् थावू नेमिचन् जी सादृष योग्य दर्शन विशुद्धि—

पत्र आया समाचार जाने । बहा पर १ मास अन्धे अन्धे विद्वानों का समागम रहा जिनके द्वारा पंढिनों को तो लाभ हुआ ही था जनता ने भी लाभ उठाया । अन्तिम दिवसा का लाभ मुझे भी मिल गया । चर्णी मनोहर तो वास्तवम मनोहर ही है, चम्पा को इनका सम्बन्ध मिल गया है । फिर निर्यास

धाग में मनोहर चम्पा की सौरभ फैल रही है उसमें काला भ्रमर मला ही नहीं जाये परन्तु अन्य तो सभी उस सौरभ की लालसा रखेंगे ही । अतः इस चिन्ता का छोड़िये गुन्दूल वैसे स्थिर होगा । अनायास होगा हमारी तो यही भावना है । मैं हृदयसे आपके भावोंकी सफलता चाहता हूँ और श्रीमान् रतनचन्द्र जी की सरत्तकता में अल्प ही कालमें यह मनोहर चम्पा धाग बहुत विस्तृत होगा । मनुष्य की सद्भावना वह वस्तु है जो अपना तो कल्याण करती है उसके निमित्त से जगत् का कल्याण हो जाता है । जहाँ जिनेश्वर दास हैं वहाँ किस धात की न्यूनता । हरिचन्द्रसा दानी हो फिर उस कार्य की न्यूनता खण्डन में भी नहीं हो सकती— गृहस्थ की कर्मकाण्ड क्या मोक्ष मार्ग का बाधक हो सकती है । नहीं । मेरी बुद्धिम नहीं । अतः असत्य दुःखों का घर मत्तमनस्क वहाँ का निवासी तो अन्त दुःखोंके कारणको मिटा दे—स्वयंभूरमण के तिर्यञ्च पंचम गुणस्थान प्राप्त कर लें और हमलोग धवलका म्बाध्याय कर कल्याणके पास न हों बुद्धिम नहीं आना—भाई रतनचन्द्र जी साहब से कह देना अभी सागर मत जायो— जो सागर समुद्र में गोता मारकर रत्न निकालनेवाले थे वह तो अब चले गये—शायद भाइरि एकदम फ या दो आजायें । अतः अभी न आना । भाद्रमास में आना उत्तम होगा । अब तो वहाँ ऊपर से उसकी लहर लेने वाल ही रह गये हैं ।

सागर

आ० शु० चि०
गणेशानर्ण

x

x

x

श्रीयुग महाशय पण्डित हुक्मचन्द्र जी जैन भद्राचारी योग्य इच्छाकार में कार्तिक सुदि २ को श्री गिरिराम की ओर प्रस्थान करूँगा— वहाँ पर महान् समारोह होनावाला है— व्याख्यान उत्सव निवेदन आदि तो होंगे ही— किन्तु यह जाना प्राय कठिन है जो ४ या ६

व्यक्ति जोकि सर्व तरहसे सम्पन्न हैं मोक्षमार्गपर आरुढ़ हैं—
 मोक्षमार्गमें तात्पर्य निवृत्तिमार्गमें है— (मयम) बिना सम्यग्दर्शन
 ज्ञान कर्मबंधन नहीं काटसकते— आपेक्षिक विवेचनाकर मूल
 अभिप्रायका घात नहीं होना चाहिये— अतः जहातक पुरुषार्थ हो
 इसमें लगाना जिसमें मेला और यात्राकी सार्थकता हो— आन
 जो धार्मिकमंस्था यथार्थ नहीं चलती उसका मूलकारण हमारे
 गृहस्थ भाई त्यागी होकर संस्था नहीं चलाते— अतः परिश्रमकर
 अथकीवार यह प्रयत्नकरना जो ४ या ६ गृहस्थ आप लोगोंकी
 गणनामें आजायें— केवल शब्दोंकी बहुलतासे प्रसन्न होना
 पानी विलोचन सदृश है— तथा वहापर जो सत्या है उसमें २००
 छात्र अध्ययन करें ऐसा प्रयत्न होना चाहिये तथा आपकी मडली
 हो। कमसे कम २० महानुभाव उसमें होना चाहिये— इस प्रकारके
 व्याख्यान होना चाहिये जो प्राणी मात्रके उसमें रुचि हो। धर्मवस्तु
 व्यक्तित्व है विकासकी आवश्यकता है। जय असख्यान लोक प्रमाण
 कपाय हैं तब उनका अभाव भी उतनेही प्रकारका होगा— पूर्ण
 कपायके अभावका नाम ही तो यथारथान चारित्र है। एक भी भेद
 नहा रहे वहा यह यथाख्यात नहीं होसकता— भगवान् समन्तभद्रने
 तो लिखा है गृहस्थो मोक्षमार्गस्थो— अत्रि अतः ऐसा विवेचन
 करो जो सर्व मनुष्य लाभ उठा सकें— आन भगवान्के निर्वाणका
 दिवस है, साथी लोग पात्रापुर गये हैं, कुछ मन म आया जो आप
 लोगोंको कुछ लिखू— अन्तरंग में मैं आपलोगोंके समागमको
 चाहता था परन्तु कारण कूटके अभावमें नहीं होसका— परन्तु
 आपको सम्मति दना हूँ जो भूलकर भी हस्तनागपुर क्षेत्रमें त्याग
 कर अन्यत्र न जाना— कहीं कुछ नहीं और सर्वत्र सब कुछ है तब
 भ्रमण करने में क्या लाभ— वहीं जो लाभकी वस्तु है अपने म ही
 है— जय यह सिद्धान्त है तब व्यर्थभ्रमण करनेमें क्या लाभ
 प्रत्युत हानि है। मोहोजीव जा न करे मो थोड़ा— मोहीजीव ही

को यह कहना है यत्पर प्रतिपाद्योद् यन् परान पतिपाद्य मत्तचे
 किन्ने क्के इह निर्बिफलक - अनर्गदित चित्तगले नो कुद्ध भी
 क्के यक सन्तान भूलकर न करना - और आपका जो गहली
 है इत्के इत्के को इच्छाकार कहना - और यह कहना - मरसे
 क्के क्के सर्वमे तात्व अपनेमे भी है - जो अपनेसे ममता
 क्के क्के कि निर क्य से ममता करेगा सम्मर नहीं - यदि
 क्के क्के तव गुरुकुल की अपील होनी यह सदा हमारा मुना
 क्के क्के के अर सेगों के व्यय हो उसमें १) में १ पैसा गुरुकुल को
 क्के क्के कायका वार्षिक व्यय ४०००) है तव ६२॥) गुरुकुल को
 क्के क्के वस विशाह - छात्र सम्मेलन में यह कहना जो छात्र
 क्के क्के मासिक व्यय करे वह १॥-) गुरुकुल को दें - यदि सुल्लर
 क्के क्के की आए हो तव हमारी इच्छाकार पहना और कहना गुरुकुल
 क्के क्के के दुः करो इसम विशेष लाभ है । निवृत्तिमार्ग म यह
 क्के क्के इच्छित नहीं ।

उत्तरकृत, गया
 क. ३० २३ २२ २०१०

आ० शु० चि०
 गणेशगर्गी

श्रीगुरु सारंग देवियत जी साहय
 कायका एव भावा
 हैं परास्तोय है -
 पूरना है जो पर
 होकर भी क्या
 सम्मति के कर्म में
 भीति के साथ
 होना,

उपादान

आप किमीने चक्रम न आरें— जो आपसी आत्मा साक्षी द न्सी
पर अमल कर ।

का० ध० १५ सं० २० न

क्षेत्रपाल, ललितपुर

आ० शु० वि०

गणेशवर्णी

×

×

×

श्रीमान् वकील साहय योम्य न्शन रिशुद्धि—

पत्र आया समाचार जाने । मेरा इरादा पूरा तो आपक प्रान्त
म ही आने का था परन्तु फिर यहो विचार आया जो इसरी ही
जायें क्यकि अब अवस्था वृद्ध है । आप लागोको पुद्ग लाम तो
हागा ही नहीं तथा न मैं तरवा का मामिक विवेचक हू परन्तु उम
आर अनेक आपत्तिया जानकर रूक गया—आपकी तरफ भी अनेक
उपद्रव हैं अत माघ के अन्त तक जयलपुर ही रहना अर्था समझा
क्याकि जयतक इनका गुम्बुल भा धन जायगा तथा उसका
व्घाटन भी हो जायेगा—आपकी तरफ तो शिष्टिनयग है तथा
शिशाल हृदय बाल हैं— श्री मनोहरलाल, चम्पालाल जी साहय
पूर्णयत्न मे गुम्बुल की उन्नति म लग हैं । मेरी भी यह सम्मति है
जा उन दाना महानुभावोंका यही उच्यत है जो निम काय को
उठाया उसे पूर्ण करना चाहिय यही श्री गोमट स्वामी जी की
यात्रा है— श्री माजधीय जी एक ही थे परन्तु अपने पुत्रार्थ स
म हिन्दू नाति का ग्थान कर लिया— श्री नवाहरलाल एक ही ता
हैं भारतमात्र क उद्धार करने का धीड़ा उठाया ह । वृपलानी, रानन्द
ता एक ही है—दररो निम्ना एर ही तो है नमाम मुमलमाना के
उद्धार का धीड़ा उठाया ह । होना न होना भविन्य आधीन है—
हमारे यहा कार्य भी करते हैं और भरत भी धनत है—गेस उदासीन
भाय काय साधक नहीं— सम्यग्दृष्टि उदासीन रहना है सो क्या
ससार का नाश तो उदासीनता मे नहीं कर लेना—जय तक धारित
अंगीकार नहीं करना तब तक अचिरत ही रहगा— भरत महाराज

घडे उदासीन थे परन्तु केवलज्ञान भी हुआ जय जय चारित्र्य श्रंगीश्वर किया— अतः काय की दौतक उदासीनता अपरय छोड़ना चाहिये तथा गुम्बुलकेअर्थ यदि चन्द्रा मागा जाये इममें लत्राकी कौनसी बात है परन्तु हमलोग उसमें अपनी हतक मममत्ते हैं। हमें विश्वास है यदि श्री मनोहर, श्री चम्पालाल की इस कार्य म सयशक्ति लगा द्य तत्र गुम्बुल एक ही सत्या उत्तर भारत में हो जाये।

१० नवम्बर सन् १९४६

आ० शु० चि-
गणेशप्रसाद वर्णी

x

x

x

श्रीयुत षष्ठील साहस योग्य दर्शन विशुद्धि—

आपके पत्र से यह विश्वास हमें हो गया है जो आप निवृत्त भय हैं— आपकी जो चिन्ता है यह ठीक है—आपकी जो इच्छा हो सो करना परन्तु एक बात मेरी मानना—जो इस काल में घर न छोड़ना— आनीविना का साधन तो है मो ठीक ही है—यापारम इममें भी अधिक ममत्त में पड़ोग— अन्दे मे अच्छे व्यापारी ब्लेक मार्केट द्वारा धनी बनने की चेष्टा करते हैं—इमानगरी सर स्थानाम हो सकती है चम्पालाल का परा मिथ्यारचना मे ही चलना है यह नहीं— कल्याणका माग घात त्यागनी अपेक्षा अन्नरंगमे अधिक सन्निहित है— आप जानते हैं पंचम गुणस्थानत्र रीन्ध्यान रहता है— इमरा यह अर्थ नहीं जो आप इसको उपयोग में लाये आपनो निरन्त मसारमे ल्वास रहते हैं— यही इस पदम हो सकता है— विशेष क्या लिरें हमारीता यह श्रद्धा है जो न तो कोर किसी का उपकार करता है और न उपकार करता है केवल मोह की कल्पना है।

मणियाजी

आ० व० ३ स० २००३

आ० शु० चि
गणेशप्रसाद

श्रीमान् घायू मुख्तार साहय व घा० नेमिचन्द्र जी वकील साहय जी योग्य दर्शनविशुद्धि।

आपका पत्र मिला— मेरा स्वास्थ्य अथ पकेपानके सदृश है— आप जानते हैं श्रद्धा होनेके बाद यहीदशा ज्ञानी जीवकी होती है जो आप महारायोंकी होरही है— सम्यग्दृष्टिके निन्दा गर्हा यही तो होता— चतुर्थगुणस्थानवाले या पंचमगुणस्थानवालेको वीतरागीमुनिकी शान्तिका आस्वाद कैसे मिलसकता है परन्तु श्रद्धा तो निमल है—और मेरा यह विश्वास है उसे सासारिक कष्ट करने पड़ते हैं करना नहीं चाहता है यह तो ठीक ही है। यह शुभोपयोग तक नहीं करना चाहता है। आप लोगोंके पत्रसे मुझे दृष्टविश्वास है आपका संसार अल्प है। यह प्रशंसाही घात नहीं क्योंकि मैं जो लिखता हूँ भीतरसे लिखता हूँ। मैंने १ मास में २ दिन घोलनेका रस्सा है। इसका कारण यह है जैसे आप अशान्त हैं मैंभी हूँ इसमें यह निश्चय किया जघ मुझे शान्ति मिले तब अथगो उसका उपदेश दूँ— जघनक आत्मीयकपाय न जाये अन्यको उपदेश देना बेरया ब्रह्मचर्य के उपदेश तुल्य उसका प्रयत्न है अत आपका यहा आना लाभप्रद न होगा—

द्विदलने विषयमें आशाधार का मत संगत मालूम पड़ना है— राना व न राना दूसरी बात है— मनुष्यों की चेष्टा आनकल घातूहलरूप है— आपतो आगम के अभ्यासी हैं— आनकल घाजारकी जलोधी रानावें म्केन्द्रिय व घनस्पति का परहेन करें। मेरी सम्मति है सर्वाङ्ग करिय किन्तु सहसा घर न छोड़ना—जिमदिन आपकी इच्छाके अनुकूल सामग्री होजाने और परिणामा में उदासीनता विषयों में होजाने विरक्त हो जाना— विशेषपत्र अयकाश पाकर दूंगा—

आ० शु० चिं०
गणेशायर्ण

श्रीगुरु महाराज बाबू नेमिचन्द्र जी मशीन योग्य दर्शनविशुद्धि-
 भाई माहय को दर्शनविशुद्धि— हमने ठे मारना भी गलत
 है और इमजाल में लेखनी द्वारा भी निजाभाष व्यक्त न करेगे—
 नेया १ मास में १ घण्टा पत्र देखेंगे—संसारमें शांति के अर्थ अनेक
 उपाय किए परन्तु पंचिन रहे— इमका मूल कारण आगीर
 अज्ञानता है—कल्याणका पथ सरल है परन्तु हमने उसे अपनी
 अज्ञानतासे अति दुष्कर मान रक्खा है—पर पण्यम मूढा का
 त्याग ही इमका सरल मार्ग है—यह पट्टा दत्त मरन है कार्य में
 परिणत करना कठिन है—अग्नि विशेष क्या निगू—मिन्टा का
 कार्य अनन्त जमा में न बना यह भी एक पाप पतुरता है—

आ० शु० वि०
 गणेशधर्मी



श्रीमान् महाराज बाबू नेमिचन्द्र जी मशीन योग्य दर्शनविशुद्धि —
 पत्र आया समाचार अरगत हुए—अतिचार या अंग तो
 प्रतिष्ठापूर्वक जहां परधन महण लिया जाता है पहा होता है—
 जिसके चरणानुयोगके अनुसार धन नहीं लिया जसकी प्रवृत्ति में
 यदि दोष लगना है तब यह अतिचार है—अत्रो के सम्यग्दर्शन
 में दोष नहीं होता चाहे प्रत्येक कार्यके लिये उपादान और
 निमित्तकी आवश्यकता है—इसका बौन—कर सकता है।
 कल्याण मार्गरेलिप जो आपन लिखा स्थय आत्मा ही है परन्तु
 निमित्तकी सफल आवश्यकता है। यहा सफल पकी क्या
 आवश्यकता थी—यह सधन पद निमित्त की प्रधानता दिखाना है
 सा दाय सगत नहीं—दण्डकाप्रारम्भ केवली, भुक्त केवली क
 सनिधानमें होता है—इमम क्या निमित्तकी सफलता है नहीं—
 हमको तो यह विश्वास है मोहके सम्भावने निमि चारे भी आकुलता
 होती है—दशधनी और अत्रतीनी तो कथाही क्या है—अन्यथा

छठवें गुणस्थानम निदानरग आरामय ध्यान न होते पचम गुणस्थानम रौद्रध्यानका सदुभाय न होता है—इतना होनपरभी मोक्ष मार्गका बाधरुनहीं—श्रद्धाकी निमलताहा फल्याणकी जननीहै— उक्तानुसार फाय होतहै ठनम उदामीनता रगना ज्ञानीका पक्षध्व है—सम्यग्दृष्टि प्रत्युत्पन्न भोगोंम आसक्त नहींहोना— यदि आमत्त होनाय तब वह दशानम च्युतहै—प्रिशेष क्वालिस—

आ० शु० चि०
गणेशप्रमादयर्षी

ॐ

ॐ

ॐ

श्रीयुत महाशय लाला हनुमचन्द्र जी साहय श्रीयुत पण्डित शीतल प्रसाद जी व श्रीयुत लाला मन्खनलाल जी योग्य इन्द्रानार—

पत्र आया ममाचार जाने—आप लोगोंका समागम अत्यत हितकर है परंतु उच्यभी होना चाहिये । फल्याणकामाग सुखम है किन्तु हृदय सरलहोना आवश्यक है— हृदयकी सरलताका अर्थ है अन्तरङ्ग मोह ग्रथि नहीं होनी चाहिये— हम अपना क्या कहते हैं ७२ वर्ष के हो गये परंतु भीतरमे जिमको कहते हैं उमपर अमल करने मे यत्नित रहे— निरन्तर जगत्की चिन्तामें व्यस्त रह— इसम अन्तरङ्ग रहस्य स्वप्रशसा व भित्तुक रहे—बाहर से भद्र धनना अन्तरङ्गकी भद्रताका अनुमापन नहीं—आप लोगाका धय है जो निममता स क्षत्रर धर्मध्यान करनेका लाभलेरहे हो— आप कुछ विचार हम जैसा ज्ञानम आया लिखदिया—हमारा विचार श्री ईसरी म अन्तिम आयु व अवसान का है—अथ वा पाश्रनाथ का ही शरण है— आपको यचनदिया था उमका पालन न करसने कसकी क्षमा चाहते हैं ।

पौष घदि ३ स० २००६

आ० शु० चि०
गणेशवर्षी

ॐ

ॐ

श्रीयुन महाशय लाला हुकमचन्द्र जी योग्य इच्छानार—

पत्रआया ममाचार अयगत मि— मेरी तो अन्नरग यही सम्मति है आप लोगनि पुरूपार्थकर जो समागम का लाभ लिया है वह सत्रको हो— अत जहातक बुद्धिपूवक पुरूपार्थ चले उसे १ मिनटकी भी भंग नकरना— मेरेको तो आप महानुभावके समागमने अपूवलाभ होगा इसमें कोई शका नहीं परन्तु मैं हृदयमे यही चाहना हूँ जो आप लोगोंका निमाय समागम हुआ है वह आनिर्याण भंग न हो— पुरूपार्थों में परम पुरूपार्थ मोच ही है ३ पुरूपार्थों में शान्ति नहीं। चरमावस्था भी उनकी होनाये परन्तु इनमें शान्ति का आस्वाद नहीं— तथादि

अलमर्थेन कामेन मुकृतेनापि कर्मणा,
एभ्य ससारकान्तारे न प्रशातमभूत्मन ।
विहाय वैरिण काममर्थञ्चानर्थसकुलम्,
धम्ममप्येनयोमूलम् सर्वत्र धानादरंकुरु ।

तात्पर्य यह है जो धम्म अर्थ कामसे संसारमें शान्ति नहीं प्रत्युत अशान्तिकी ही उत्पत्ति होती है— अत आप लोगारा जो पुरूपार्थ है वह निरपाय पदके अर्थ है— समागम उत्तमहो यह भी एक कहनेकी शैली है नहो यहभी एक कथन पद्धति है यस्तुकी स्वच्छानस्था ही तो हमको प्राप्नहो निरन्तर यही ध्येय ज्ञानीके है यद्यपि अद्वानी प्रयत्नतामे सम्यग्ज्ञानीकी महिमा अनिराच्य है तथापि चारित्र मोहनीयकी महिमाने ६ मास मृतमनुष्यको चलभद्र छोड़ न सका अस्तु इसने लिखनेका आपके सामने अयसर न था— विशेष क्या लिखू कर्याणका मार्ग आपमें है हम अन्यत्र अन्येपण करते हैं यही महती () है धीचम जो है सो मैं क्या लिखू ? मेरा तो यह कहना है कितना पुरूपार्थ शब्द वर्गणाओंमे हमारा है उसका शनाशभी यदि आभ्यन्तरमे हो तत्र यह जोबुद्ध पर्यायम होना है अनायास शान्त होजायेगा— धनन्तमिह यहा आगण मान हैं ।

सर्वमण्डलीसे यथा योग्य— सत्समागमम यथार्थं निर्णय हो सकता है आन्तक प्राय जो लिखनेकी पद्धति है उसमें अहम्मयताकी गंध प्राय रहती है अस्तु हम लोगोंको उचित है जो अन्न करण की शुद्धिपूर्वक तत्त्वका निर्णय करें— यदि अन्न करण न माने मत मानो फिर निर्णय करो—

भाद्र सुनि ६

आ० शु० चि०

सं० २०१०

गणेशप्रार्थी

卐

卐

卐

श्रीमान् पं० हुक्मचन्द्र जी तथा सर्वमण्डली योग्य द्वाभ्याम्—

पत्र आया समाचार जाने प्रसन्नता इमघातकी है जोआप लोग सामूहिकरूपसे एक विशेष क्षेत्रपर तत्त्वविचार कर रहे हैं— किन्तु अत्र अन्यत्र जानेकी इच्छा करनाही आपके तत्व विचारमें बाधक है— इम विकल्पको त्यागो जो अन्यत्र विशेष लाभ होगा— लाभतो पर समागम त्यागम है नकि पर समागम म हम शिरार जी मोहघश जारहे हैं— लाभविशेष होगा यह नियम नहीं फिर आप य कहोग क्या जारहे हो— मोहकी प्रघनास— आपका समागम अत्रि उत्तम है— तत्त्व विचार ज्ञयोपशमके आधीन है— कल्याण होना मोहकी कृशानामें है— समयसारही कल्याणमें प्रयोनकहा मो नहीं कल्याणका कारणतो अन्तरगकी निर्मलता है कल्याणकी व्याप्ति मोहने अभावमें है— समागमका ज्ञान इमका साधक नहीं— अत भूलकर इस भीषण गर्मीमें अपने उपयोगका दुरुपयोग न करिये मैं आधे जेटमें गया पहुँचू गा जोपर हूँ यहासे २५ मील है— श्री हस्तिनागपुरके मन्दिर की शीतलनाको त्याग विहारकी ज्वालाम भूलकर अभी मतआइय— मैं आपको तथा आपकी मण्डलीकी उत्तम दृष्टिमें दरगत हूँ । अत यही सम्मति दूंगा जो बाहर जानेके विकल्प त्यागिये— मैं तो जन मन्दिर जाता हूँ प्रतिमा के समक्ष यह भावना व्यक्त करता हू कि

भगवान् तेरे ज्ञानम एमा टप्रा गयाहो जो अथ कल न आना पडे—
मेरी कायमात्र करनेम यहीभावना रहना अथ फिर न करना पडे—
चाहे शुभ कायहो चाहे अशुभ— आप लोग ज्ञानी हें ज्ञानीके साथ
पुसुलु भी हें— फिर अथ चिरगिनिका एकरा घनाकर सबम
सम्बध छोड़िये और मुझेभी अपना पान इन विक्रामे मुक्त
कानिय विशेष न्या लिंग -
नरमरम—

स गायत्री व्याख्यामे तो रागादि परिणामाम् आत्माना
व्याप्ययापक सम्बध निषध है और निमित्तनी मुख्यताका पुग्गत
केना व्याप्ययापक सम्बध दिखा दिया है— विज्ञानम नो
विस्तृता नही आती विशेष समयपारर लिंगूगा—

जिनद्रियता यहीनो अथ है जा द्रव्यद्रिय भावेद्रिय और
भावेद्रियके विषय स्पर्शादिमे आत्मा भिन्न है विशेष फिर

ब्रह्महायक भावम अन्तर रागादि न लेना— परभावविरक
कृता— सामान्य वास्य है चाहे शुभहो चाहे शिष्यहो—

परस्पर एकीभूतान इव— यह पाठ है यनी अन्ता है ज्ञानम
जो सय आना है वह परस्पर एकत्व प्रतीत होना है विशेष फिर
टसिनि न स्थानपर कृति पत् है ।

अभा गमा घट्ट पड़ती है इससे उपयोग नही लगना समय
पाकर उत्तरदूगा ।

मगल जो आनन्द हें स्वाध्यायम रतरहते हें ।

रफीगन

जठ घन् ५ सं० २०१०

卐

卐

आ० शु० चि०

गणेशवर्णी

卐

श्री मठ ची माह्व योग्य न्शानविशुद्धि ।

आपना कानसा समय है जो समाधि शूय रहना है । मेरातो
निष्ठा विश्राम है चिसकी अडा निमल ह यहनो करनयोग्य

या कर चुका शेषनाल को समारका है वह पूर्ण होताही है ।
 अतः य सत्र प्रक्रियाओं द्वारा हा रहा है । वह कत्ता नहीं । तिस
 त्तिन भेद त्रिनानका न्दय ह्वा -सीत्तिन कृत्व्यभाय गया । वृत्त
 का नड न्दड गर्द अत्र हरापन के त्तिन का । मुझे तो इसपानका
 हय है जो आपने कत्तव्यसे सुनकर यही निश्चय हो गया तो
 पञ्चमनाल म भी न्त्तम पुण्याका अभाय नहीं तथा आप जो भवन
 पत्ते हैं 'चिंमूर्ति दृगधारी का' यदि आपने आचरणमे
 अक्षरशः मत्य प्रनात होना है ।

आ० शु० चिं०
 गणेशशर्मा

❧

❧

❧

श्री सठ जा सात्र याम्य न्द्वारा—

आप धनुनहा त्रिक मानर है । ऐसा त्र्यन्ति इम कलिनाल
 म होना बहुत ही दुलभ है जिम व्यक्तिते मूडा त्यागदी वहा
 व्यक्ति प्रगमाका क्या, कत्याणपात्र है । मानरता का कारण धनात्ति
 नहीं, त्रितु मूच्छा त्याग है । धनका त्याग कोद त्याग नहीं क्यात्ति
 यह हमारी वस्तु नहीं । रगादि त्याग भा उपचारमे त्याग है
 परमाय मे यह भी तो हमारा नहीं श्रौत्थिक भाय है उसम जो
 हमारी त्रित्तरनपना है उम त्यागनाही त्यागहै—परमायसे त्रानका
 हानरप रहना ही श्रेयोभाग है ।

आ० शु० चिं०
 गणेशशर्मा

❧

❧

❧

आयुन शानुभरमिर मेठ हुकमच जी सात्र न्द्वारा—

पत्र पढ़कर बहुत प्रमत्तता हुई— मेरी तो यह धारणा हो गई
 है जो सम्यक्दर्शन होने के अनन्तर तो भी काय होता है चाहे
 त्रिम य माधु हो चाहे अत्रित सम्यक्त्ति हो कृत्त्व्यभायप्रथक न्द्वारा

होता, पर का रूप तथा परके निमित्त से होने वाले भावों का यह कर्त्ता नहीं बनता—इसका अर्थ यह है यह ज्ञानचेतना ही का कर्त्ता होता है। यद्यपि इसके अभी अधिरत अरथा म अप्रत्याख्यानादि कषाय विद्यमान हैं निप्रथ के मच्चलनकरण्य है तथ मुनि जो काय सञ्चलन के उच्य म कर्त्ता है अभिप्राय से वह उपादय नहीं मानता एव सम्यग्-ष्टि भी अप्रत्याख्यानादिके उद्यम जा कार्य करता है उपादय नहीं मानता—मार्ग गेनो का एक है यह भी कर्मोच्य का श्रेष्ठत अदा कर रहा है, अन्नर इनना ही है जो महाश्रुति संसारके सर्वही कार्यों में उपरम हो चुका है यह अभी उनसे करता हुआ नटस्थ रहता है। माक्षा मोक्षमार्ग का गेनों के अभार है। अन् मुक्तकी तरह गृहस्थावस्था म भी जीव मोक्षमार्ग के समुख है गाड़ी लेनपर आगई एककी चल रही है एककी चलनेके समुख है। आपको क्या लिखू आप स्वयं ज्ञाना है तथा ममज्ञ विद्वाना के समागम म रहते हैं। सम्यग्-ष्टि आमानुभव करे तथ और न करे तथ मिथ्यात्व के असद्भावसे उसकी दशा स्वच्छ ही रहती है। उपयोग कही रहे सम्यग्दर्शन कृत्त निमलनाका बन सदाही रहता है। समाधिमरण के समय यन्त्रि असाताना नीच्र उद्य अनाये ग्नावता सम्यग्दर्शनकृत विशुद्ध की क्षति नहीं। अत आपको समाधि उत्तम हो जाने इसका विनश्य न करना चाहिये। जिस भव्यजीवके सम्यग्दर्शन है उसके सप्तमय श्रद्धासे पलायमान होता है। उसकी दृढ़ता सामान्य नहीं जिसके होनेपर अतन्त्र ससार मिट गया उसके भद्रभाव म अथ भय किसका— विशेष क्या लिखू —

कार्तिक षदि ३ म० २००६

आ० शु० चि०

गणेशशर्मा

ॐ

ॐ

ॐ

श्रीमान् महाशय परमविवेकी मेठ जी साहय योग्य इच्छान्तर

पत्र पाचकर परम हर्षटुआ— आपके भागोंकी विशुद्धनाहा

आपके मोक्षमार्गम कारणभूत है। अन्य निमित्तमात्र हैं। मेरेमात्र में यह ध्यान समागर्ह जो पञ्चमकालम भी उत्तम ज्ञेय हैं। आपने क्या लिखू— आपने निमित्तमे अनक जीव श्रद्धावान हो रहे हैं— मैं धनारस होकर डालमियानगर पहुँच गया— धनारसम जो मन्त्रि धनवाया गया है अत्यन्त मगोक्ष है, मूर्ति परम सुन्दर है। अनेक प्राणी दर्शनसे लाभ उठा रहे हैं— आपके धमायननाम इसरीभी गणनारह ऐसा मेरा अभिप्राय है— यहासे गया जाऊँगा।

डालमियानगर

आ० शु० चि०

द्वि० घं० मु० ६ सं० २०१०

गणेशप्रसादी

卐

卐

卐

श्रीयुत महाराय नमिचन्द्र जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

पत्रआया— समाचार जाने— वस्तुस्वरूप ज्ञानपर उपेक्षाही सर्वके हो यह नियम नहीं— सम्यग्दृष्टि जीवके वस्तु परिज्ञान हेतु है एसा नियम है। उससे चारित्र मोहके सद्भावमे उदासीनता होती है न कि उपेक्षा— मोहके सद्भावमें आकुलता होना कुछ अनुचित नहीं— क्या पचेन्द्रियोंके विषयोंको त्यागदेना उपेक्षा है? नहीं— मनमे रागद्वेष नहीं होना उपेक्षा है। यह चारित्र मोहके कृश भावम होती है— आप व्ययकी उदापोहमे मत पड़ो— जा मार्गका अनुसरण किया है यही मोक्षमार्ग है। पूणनानो समय पाकर होगी अभानो यथाशक्ति पयायके अनुकूलही शान्ति मिलेगी— १ संर मुद्रपालेको १ तोला मिलना शान्तिका कारण नहीं— परन्तु एसादतो आही जाता है।

डेठ मुदि १२ सं० २००२

आ० शु० चि०

गणेशप्रसाद वर्णी

卐

卐

卐

श्रीयुत महाराय धारू नेमिचन्द्र जी साहस योग्य दर्शनविशुद्धि—

आप सानन्द

पने आभ्यन्तर शुद्ध

कृश करनेका प्रयास करना— मेरा तो यह विश्वास है अन्तरंग मूर्च्छा व दूर करनेमें कोई बाह्य निमित्त की आवश्यकता नहीं—आवश्यकता इस बातकी है जो हम उससे समाचारकारण जाने— निम्न आवश्यकता हम दृग्दर्शनकी मानते हैं उसमें अधिक आभाव मूर्च्छा जाननेकी है। दृग्दर्शन करनेका फल भैरव आत्मिय परिणति का ज्ञान होनाही मानता हू— तथा शास्त्राध्ययनका फलभा यही मानता हू— यदि आत्मपरिणतिकी प्रतीति न हुई तब यह सर्व विहम्बनामात्र है।

आ० सुदि १५ स० २००२

आ० शु० चि०
गणेशप्रसाद वर्मा

卐

卐

×

श्रीमान् महाराज बाबू नमिचन्द्र जी—

पत्र आया— समाचार जाने। क्या सम्यग्दर्शन होनेपश्चात् जो प्रवृत्ति गृहस्थकी पहले थी वह एकदम दृष्टनाती है। मेरा तो यह श्रद्धान है यदि इसतीरके चारित्र्यकरणका संयोगम न हो तब उस प्रवृत्ति में कुछभी अन्तर नहीं आता, केवल जो आसक्तता प्रियाम मिथ्यात्व अस्थामे थी वह नहीं रहती, शिथिलता आनाती है। केवल प्रिय और कषायोंमें स्वरूपमे शिथिलता आजाती है। इमा का नाम उदासीनता है। इसीका नाम अनासक्ति है—

निम्न जीवोंने अपराध किया है उन जीवोंके ऊपर तत्काल अथवा कभीभी उनके यथाविशेष अभिप्राय का नहोना उसे प्रशम कहते हैं। सम्यग्दृष्टि तीरका अभिप्राय इतना निर्मल है जो अपराधी जीवका अभिप्रायमे बुरा नहीं चाहता— अर्थात् उसका वासना अतिनिर्मल है—उपभोग किया जो उसने होना है उसका कारण कुछ और ही है। दर्शनमोहनीय कर्मके उपशमादि ने वह भोगको नहीं चाहता है फिर भी चारित्रमोहने उदयमे बलान उस उपभोग किया करनी पड़ती है। बिना अभिप्राय भी किया होती

है। एतावता उसके विरागता नहीं है ऐसा नहीं कह सकते। जब ऐसी व्यवस्था है तब यदि अविरती चायने व्यापार और विषयके कार्या में भाग लेता है कौनसा अनर्थ है—इसका यह 'तात्पर्य' नहीं जो स्वप्नदहोकर अनर्गलप्रवृत्ति करने लगाने— यदि उसने आत्मकल्याणकी रुचि न होती तब निन्दा गद्दी क्या करता—शास्त्र-साध्याय से ज्ञानका विकास होना है और तिनने अभिप्राय विशुद्ध हैं—उनके यथाथ तत्वोंका धोवहोना है—परन्तु इसका यह अर्थ नहीं जो तत्वज्ञानसे चारित्र तत्कालही हो जायेगा—चारित्र भाज्य है—दस्यो साधसिद्धिके अहमिन्द्र-आत्म मरणान्त तत्प्रिचारम ही अपनी आयुसो पूर्ण करते हैं— उनक चारित्र का लेश भी नहीं तब क्या उनका तत्वज्ञान व्यर्थ है ? नहीं। आयुने अपमान धाद मनुष्य चम में समय पाकर एकम समयके पात्र हो मोक्षनेपात्र होते हैं। यह आप कह सकते हैं यहा समयकी योग्यता नहीं यहा नो समयकी योग्यता है क्या नहीं समय होना—यह कोई नियम नहीं तिनने अतिरत सम्यग्दृष्टि हैं उन्हें समय हो ही चाये, भाज्य है अत इस विषयम अपने अभिप्रायको दस्यो यदि उसम मलीनता है लौकिक प्रतिष्ठादि के अथ यदि शास्त्रका अभ्यास और साधु समागम है तब तो वह विशेष फलदायक नहीं और न आत्मश्रेय के लिए है। अपनेको हठात् दशन के विरुद्ध भावाका स्वामी मानना आपसे विज्ञपुत्र्यों को कदापि उचित नहीं—पन्केअनुकूल शान्ति का आस्थाद आता है— इस गृहस्थअस्थाम आप मुनिकी शान्ति का आस्थाद चाह तब कैसे मिलसकता है— अतिरत अस्थामें जो मोक्षगामी चीज हैं उनकीभी यहीअवस्था रहती है, निरन्तर इसी प्रसार के भाव होते हैं केवल अभिप्राय मलीन नहीं होना। अत तिन जीवोंके अभिप्राय स्वच्छ हैं ये गृहस्थअस्थामें श्रीरामचन्द्रजी की तरह व्यस्य होतेदुयभी समय पाकर कमशानुका विनाश करनेमें सुदुमालाग्निन् आत्मीयशक्तिना सत्प्रयोग करनेम नहीं सकते—

कदाचिन् आप यह कहो यहतो सर्व आगमोक्त ही तो क्या है इमम कोई विवाद नहीं परन्तु अनुभवकी मात्ही द्कर परामश करो तब यही निष्कप निकलेगा— जो आगम तो निमित्त है यह मरक्या सम्यग्दृष्टिके परिणामों की है— आगम तो कथन करनेवाला है— मेरातो यह विश्वास है जो सम्यग्दर्शन जैसा लोग दुर्लभ समझ रहे हैं नहीं है— आपतक हम लोग जो ससारमें अनेकयातनाओंके पात्र हुए इसका मूलकारण हमारी ही अज्ञानता है— याद्व्यपदायों का अपराध नहीं— और न मन वचन कायके व्यापारों का अपराध है— और न क्रोधादि कपायाका अपराध है अपराध हमारे विपरीत अभिप्रायका है— क्रोधादि कपायों की पीड़ा नहीं सही जानी इससे जीव उनका काय कर बैठता है परन्तु यह विपरीत अभिप्राय ऐसा निष्कृष्ट परिणाम है जो अनात्मীয়पन्थोंमें आत्मायनाका मान कराने में अपना विभव निर्याता है। यही मूल मसारका है।

आ० सु० १३ सं० २००१

आ० शु० चि०
गणेशप्रसादवर्मा

卐

卐

卐

श्रीयुत महाशय धामू नेमिचन्द्र जो पत्नील दशतपिशुद्धि—

समारमे शान्तिना कारण न तो मन्तसमागम है और न तीर्थ यात्रा ही है और न शास्त्राध्ययन ही है— निमित्तकी अपेक्षासे जो आपे सो कहदो और मनम जोआपे सो कल्पनाको आश्रय दो, किन्तु यात्रात् अन्तरंगमे परपन्थम निजत्व की मूला है तात्र ये सर्व निमित्त कुद्ग भी नहीं करसक्ते और मूर्खोंके जानेपर अल्पभी निमित्त कार्यकर हो जाना है। अत उत्तकी ओर लक्ष्यरहना ही हमारा कर्तव्य है।

का० सु० ४ सं० २००२

आ० शु० चि०
गणेशप्रसादवर्मा

卐

卐

卐

श्रीमान् धानू नेमिचन्द्र जी योग्य दूरानिगुद्धि —

अन्नरंग स्वास्थ तो मैं उनका मानना हूँ जिन्हें तात्विक धर्ममें प्रेम है—वह स्वास्थ जैसा आपका है वैसा ही मेरा है—गृहस्थकी मकमलतो उमके समस्त कोई वस्तु नहीं—और उन मकमलको न तो आप इस पर्यायमें मिला सकते हैं—और न मिटही सकती हैं। मेरानो यह विरवास है जो एक लंगोटेयानेके भी पदके अनुकूल यह व्यपना है—और अधिक क्या करूँ—प्रमत्तावधान पर्यन्त भी वह मकमल है—सावित्राय प्रमत्ततेहो उन आपत्तियों से मुक्ति मिलती है—मलेरियाकी चिन्ता क्या करें। यह तो चिरसग्रा होगया है। शायद पर्यायके अरसान में उसका अन्न हो—उसके मूल-कारणका वियोग तो अभीदूर है—आप अन्य विकल्पोंको 'दूर कर केवल एक विकल्पको रखिये जो अनात्मिय पदार्थों में आत्मोय बुद्धि न हो—

पागुन सुदि ८ स० २००२

आ० शु० चि०

गणेशप्रसाद वर्णी

卐

卐

卐

श्रायुत्र महाशय लाना नेमिचन्द्र जी वकीन योग्य दूरानिगुद्धि —

महाशय और विद्वान हैं—अविरत अयस्याम न्यायपूर्वक आलोचना करना प्रवराध नहीं—अभिप्राय मलीन हाने से आत्मा अपराधी होता है - आपके अभिप्रायम यदि यच्छनाका अभिप्राय नहीं तत्र आप मायाचारी नहीं—गृहस्थावस्थामे चाहे वह गृहविरत हो चाहे निरत हो आशिक मोक्षमागकी धर्या नहीं—वैषे तो एक लंगोटी मात्र परिग्रह सोलह स्वर्गसे उपरका मार्ग रोके है। अतः सानन्दसे रहिये और धर्मसाधन करनेका जो आपका मार्ग है उसे प्रशान्त रखिये—यत्तमानयुगमें निष्कण्ठ समागमका मिलना परम दुर्लभ है—सर्वमें उत्तम समागम तो अपनी रागादि परिणतियों घटना यही है—

आ० शु० वि०
गणेशप्रसाद वर्णी

ॐ

ॐ

ॐ

श्रीयुग महाशय लाला नेमिचन्द्र जी योग्य दर्शन विशुद्धि —

तो वेदना आपको है मुझे यह विरगस है यह वेदना-प्रमत्त गुण स्थान तक रही है। अल्प बहुत्वका ही भेद है, ज्ञातिमें भेद नहीं—उसका अभान तो मोह के अभानमें ही होगा—और जो सुग सिद्धा के हैं वही चतुर्थ गुणस्थानवर्तीके हैं—यहा पर अंश रूपसे है वहा पूर्ण है—अन-श्रद्धा होनेपर चिन्ता प्रयास हो उपर जाने का हाना चाहिये आकुलता को आश्रय न देना—मलेरिया तो परस मित्र हो गया है—उसका कहनाई अन्तिम असस्या तुम्हारी है—हम न होते अन्य रोग होते जो भयकरता धारण कर व्युष्य कर दते—हम वह दशा तो नहीं करते—अतः सतोप ने सही—यदि हमसे अरुचि करतेहो तब क्या लाभ—निन परिणामोंसे हमारी सत्ता है उन्हें छोड़ो और हमारी चिन्ता छोड़ो आयुक्त अन्तम तो हम जायेंगे ही परंतु वह ससार वर्धक परिणाम तो साथ ही जावेगा। केवल पढ़नेमे व धाह्य त्यागमे कुछ लाभ नहीं—

आ० शु० वि०
गणेशप्रसाद वर्णी

ॐ

ॐ

ॐ

श्रीयुग महाशय नेमिचन्द्र जी साह्य योग्य दर्शन विशुद्धि —

पत्र आया समाचार जाने—आपने लिखा इस प्रयास म आशिक चारित्र भी नहीं धारण कर सकना—मेरी समझमें नहीं आना क्यों नहीं धारण कर सकते—क्या बाह्य कारणरूट उसने बाधक हैं? नहीं। अनायास अंतरंग मूर्च्छाके अभायम उसका मझाय हो सकना है—दूसरी बात—यह बात छोड़ो मैं अपनी श्रद्धा भी निर्बल पाताहूँ—यह भी लिखना सगत नहीं—आपके तो कुछ

भी बालनहीं बड़े विलक्षण कार्य सम्यग्दृष्टियों द्वारा हुये जो अज्ञानी जीवोंकी दृष्टिमें सर्वस्वही अनुचित प्रतीत होनेहैं परन्तु धान विलक्षण है ज्ञानीका भाव अज्ञानीके हृदयमें आना कठिन है— क्या सम्यग्दर्शन होनेके बाद व्यापार छूट जाना है जो आर्थिक चिन्ता न करनी पड़े— एक सीताके अर्थ श्री रामचन्द्र महाराजने जो उपद्रव किये बचनानीत हैं— श्री भरतजीने जो किया सो कुछ आपसे छिपा नहीं श्री मायनन्दि महाराजने जो किया प्रसिद्ध है—श्री समन्तभद्र स्वामी जो किया आराल गोपाल विदित है— मेरा यह तात्पर्य नहीं जो स्वेच्छाचारको पुष्ट किया जाये— फिर भी वस्तु स्वरूपको अनुभवमें लाना चाहिये— मुझमें पूछियतो हम लोग कुटुम्बहीन होकरभी ससारकी व्यग्रताके पात्र हैं । आपको ४ या ६ की चिन्ता होगी— परन्तु सघनायक आचार्यनो सहस्रों शिष्योंको शिक्षा दीक्षा दते हुये अरण्य मुनिधर्म पालन करनेमें समर्थ रहते हैं— व्यर्थकी चिन्ता छोड़िये— आपतो विज्ञ हैं— आर्थिक भागोंकी परिपाटीमें भयमन करिये— ऋणबन् समझकर सन्तोष करिये— विषयतो घटत अच्छा है परन्तु शरीरकी टुघलतासे पूर्ण लियनेमें समर्थ नहीं । प्रतिदिन ४ घटा मलेरिया मित्रता सहवास रहना है - यह उमकी अनुकम्पा है जो प्रातःकाल १ घटा स्वाध्यायको सानन्त्स करने दता है ।

कार्तिक षष्ठी ८ मं० २० ०

आ० शु० चि०

गणेशप्रसाद धर्णी

卐

卐

卐

श्रीयुग महाशय लाला मंगलमैन जी योग्य दर्शनविशुद्धि —

असलम जयतक अपनी कपाय, परिस्थिति है तत्रतत्र यह सर्व उपद्रव है । कपायके अभावमें कहीं रहो कोई आपत्ति नहीं— कपाय के अस्तित्वमें चाहेनि न घनम् रहो चाह पेरिस जैसे शहरमें निवास करो सत्रही यही कारण है जो मोहो ।
माहमार्गसे निर्मोही गृहस्थ मोक्षमार्गके

है— खेद इस बातका है जो मोहीजीव स्वस्वराही निर्मोहीरो बनाने की चेष्टा करता है आप मोहको नहीं छोड़ना चाहता । यहापर क्या सर्वत्र यही बात देखने में आनी है— हम जो लिखते हैं उसपर अमल नहीं करते केवल अपनी मलिन परिणतिको त्यागनेके भावसे वचनकर छिपानेका प्रयत्न करते हैं ।

आ० शु० चि०
गणेशप्रसाद वर्णी

卐

卐

卐

श्रीयुग महाशय लाला मंगलसेन जी योग्य दशनप्रशुद्धि—

पत्रआया— हमको अधनरु मलेरिया मित्रना नहीं छोड़ता । जो उदय है उसे भोगनाही उचित है— यह कौन कहना जो गार्हस्थ्य जीवनमें निराकुलताकी पूर्ति नहीं । यदि निराकुलताकी पूर्ति गृहवास में होनाय तब कौन ऐसा चतुर मनुष्य इसे त्याग देगम्बरी दीक्षाका आलम्बन लेता— एक कोपीनके सद्भावमें साक्षात्मोक्षमार्ग रुक जाता है— किन्तु इसका यह अर्थनो नहीं जो गृहानस्थामें एकदरा मोक्षमार्ग न हो— यदि गृह छोड़नेसे शान्ति मिले तबतो गृहछोड़ना सर्वथा उचित है यदि उसके विपरीत आकुलताका सामना करना पड़े तब गृहत्यागसे क्या लाभ— चौधसे छत्रवेहोना अच्छा परन्तु दुःखे होनातो सबथाही हेय है । अभी दूरस्थ भूधरा रम्या दत्तरहेहो— जिहोने गृहवास छोड़कर सुल्लरु पेलकनक पद अंगीकार किया— वे मोटरा व रेल सवारियोंमें सानन्द यात्रा कर रहे हैं तथा गृहस्थासे भी विशेष आकुलताके पात्र हैं— तथा जो आरम्भ त्यागके नीचे हैं वे गृहस्थमें अधिक परिग्रह पासम रखते हुयेभी त्यागी बन रहे हैं । तथा वृत्तिको इनती परार्थीन घना रक्ती है जो विपरणकरने लेखनी कम्पायमान होती है । अपना परिग्रहनो त्याग दिया और फिर अन्ध से याचनाकर समझ करना क्या हुआ— खेती करनेके तुल्य व्यापार हुआ— आप बिनेकी हैं भूलकर परार्थीन न होना । सानन्द स्वाध्याय

म काल लगाना— किसी काममें न लदी न करना । सर्गीय चिराचा धार्ई जीका कहना था कि केटा अपना परिग्रह छोडकर परकी आशा न करना, अथवा करनेसे दुःखके भावन हाग यह हम अनुभव है ।

आ० शु० चिं०
गणेशप्रसाद वर्णा

卐

卐

卐

श्रायुत लाला भगलमैन जी योग्य दर्शनशुद्धि—

आप मानन्द होंग और शान्तिमें व्याध्याय करत होंग—निमित्त कारणाका प्रणालीमें कदापि लुब्ध न होना— यह प्रणाली सर्वत्र है ससारमें जहा जाइय वहीं यह अपना साम्राज्य जमाय है— परंतु धन्य ता यह मनुष्य है जो इसके अग्रमें नहीं आता— निमित्त प्रलात्कार हमारा कुछ अनर्थ नहीं कर सकत । यदि हम स्वयं उनमें अष्टाष्ट करना कर इत्यालनी रचना करने लग जाते तब इमें कौन दूर करे ? हमी दूर करानाले हैं । अत मर्य रिक्क्योको छोड केवल स्वात्मयोगके अग्र किसीको भी गोपी न समझना और सर्वका हितकारी समझना । यदि य बाह्य दुःखर कारण न होते कौन इम ससारमें जगम होना— अत किसीभी प्राणीको अपना बाधक न समझकरही कल्याणका पवित्र होना है—

आ० शु० चिं०

गणेशप्रसाद

卐

卐

卐

श्रीमान् महाशय लाला भगलमैन जी योग्य दर्शनशुद्धि—

पत्रआया समाचार जाने । आगमज्ञान मुख्यवस्तु है— पर पतार्थका ज्ञाना दृष्टा रहनाहीनो आत्माना स्वभाव है और उसकी व्यक्तता माहके अभ्यासमें होनी है । अत आरश्यम्ना उसीके कृपा करनेकी है— यथाथ ज्ञानको मध्यमशतके होतेही होजाता है— इष्टानिष्ठ मोहके उत्पत्ते होती है—

होना दश संवत्सरादि गुणरत्नानि क्रममे होगा— आपसो ०करम चाहत हैं कि हमारे बानरागरी शान्ति आना— सो मेरी समझम नहीं आता— पर्यायके अनुकूलही शान्ति मिलेगी— हापटा मन मारो शनै शनै सर्व होगा— विशेष क्या निर्घे— तात्विक घानतो थोड़ी है विस्तार बहुत है— मेरीतो यह श्रद्धा है जो विपरीत मोहक जान घा जो आत्मानुभव सम्यग्ज्ञानीक होना है वही क्रममे माहात्मिके अभाव होनेपर वैयर्थ्यपदरूपम परिणाम होना है— अगर आपकी श्रद्धा सत्य है तब आप अपनेसो मंमारी मन मानो क्याकि निद्ध पर्यायके सम्मुखहा— आरा है अथ सर्व व्यग्रताआको छोड़ जो पर्याय उत्पन्न हो गयी है उसे वृद्धि करने की चेष्टा करो— क्वाचिन् यह कहो सम्यग्प्रियो तो निन्दा गहा करना है— मेरी इमम यह श्रद्धा है सम्यग्प्रिये मोहके उन्वमे निन्दा गनी होनी है— यह अहम्बुद्धिम उमका कता नडो— निन्दा गहा अनात्मीय धम हैं अनात्मीय धर्मान तसे उपादय बुद्धि नहीं— ममा अथ यह नहीं जो मैं स्वच्छन्दका पोषक हूँ— स्वच्छाचारितानो सम्यग्ज्ञानीके होनी ही नहीं । यदि वह स्वच्छाचाराहो तब आत्मज्ञानम प्युत है - क्यों कि आत्मरत्यानिम - जहा प्रतिक्रमणसो विष कहा है वहा अप्रति क्रमण अमृत नहीं होसकता—

आ० शु० चि०
गणेशप्रसाद वर्णा

卐

卐

卐

श्रीयुत लाला मंगलसैन जी योग्य श्रानविशुद्धि—

पामानीका स्वास्थ्य अत्यन्त दुर्बल है— भीतरमे सायधान हैं— मेरी अरस्थाम परमात्मारूप आत्माहीका शरण है— अन्यज्ञ शरण ज्यर्थ है । मेरीतो यह धारणा है परकी सहायता परमात्मा परकी धारण है । आत्माकी फल अरथाहीका नाम मोक्ष है— यदि आपसो इतनी समता आगयी है जो परके निमित्तमे हर्ष विपाद नहीं

होना है तब हमारी समझ में और अधिः इसमें क्या चाहते हो ?
यदि चाह है तब यह समझ नहीं आइ केवल आभाम है— जहा पर
की चाह है वहा समझ नहीं— समझना जहा उन्म है उहा आत्मा
की कृत्यकृत्याप्रस्था हो जानी है, करनेको शेष नहीं रहता ।

आ० शु० चि०
गणेशप्रसाद वर्णा

卐

卐

卐

शायुन महाशयनाला नमिचन्द्र जा वकीन दर्शनप्रशुद्धि —

पत्र आया—समाचार जाने—मेरी समझम यह व्याप्ति नहीं—
जो ससृज जानने वाला ही तत्त्वचचा का अधिकारी होता है—
अथवा जो हो इसमें हमको प्रिया नहीं—हमारा तो यह प्रियास
है जो श्रीमज्ञान के प्रति न्शन मोहाभाव कारण है उमरे प्रति
कारण पंच लप्ति हैं । उनम ४ लब्धि जीवने अनन्त धार पाई—
स्वर्ण लब्धि बिना उसकी प्राप्ति दुर्लभ है— यह लब्धि क्या ससृज
प्राप्तके ज्ञान में मिलती है ? यदि ऐसा नियम है तब तो हिन्दी
आदि जाननेवाले वचिन ही रहगे— और प्रभु की निव्यप्रति फा
लाभ ससृज प्राप्तत्र ही लेमकेगे—शेष तो बुद्धू के बुद्ध ही रहगे—
आत्मज्ञान कुछ ऐसी कठिन उस्तु नहीं जैसाकि लोग
समझ रहे हैं— आप और परका ज्ञान कोई दुर्लभ नहीं आपने
पत्र लिया उसका कर्तृत्व आपमें है । आप लिखते हैं आ० आ०
नेमिचन्द्र । यदि आपको अपना धोध नहीं तो क्या लिखते हैं पत्र
प्रपक नमिचन्द्र । अपनेमें मुझे भिन्न मानते हैं तभी तो जयलपुर के
पते में पत्र लिया—और भेज ज्ञान क्या होता होगा— केवल
आश्रयस्त्रा इस धान की है जो आत्मा में रागद्वेषादि होते हैं उहें
श्रीःयिक समझ पृथक् करने का भाव होना चाहिये पृथक् करने
का यह अर्थ नहीं— जो पर उस्तु को छोड लिया जाये—ये तो भिन्न
द्वय के परांय है—उनम जो निचर की कल्पना है उमें छोडा जाये

यह लिपनाभो मिथ्या है—तब हम उ ह पर समझते हैं तब निवृत्त की कल्पना नहीं हो सकती— केवल चारित्रमाहू रागादिकी वृत्ति करना है किन्तु शून मोहने जानेसे अल्पकालमें भी यह भी अनायाम दूट जायेगा— श्रद्धान तो यथाथ है परन्तु त्याग पर्याय के अनुकूल ही हागा—मौधमेद मनुष्य होकर मोह जायेगा—उसने दृढ श्रद्धा है। परन्तु उस पर्याय में वह अणु मात्र भी त्याग नहीं कर सकता— एव यदि मनुष्य भयम किसीकी श्रद्धा निर्मल हो और वह न तो मस्मृत जानता है और न त्यागी है तब क्या उसके आशिक मोक्षमार्ग नहीं है इत्यादि—आप लोगका उद्य उत्तम है जो इस प्रकार धार्मिक भाषा आर करते हैं।

चैत्र सुनि ११ स० २००३

आ० शु० चि०
गणेशप्रसादवर्मा

卐

卐

卐

श्रायुन महाशय ५० हुनमचद जो योग्य इच्छाकर—

पत्र आया ममाचार जाने— लिखें आत्मसे लेकर स्वाध्याय किया परन्तु जोरान होनी चाहिये वह न हुई तब क्या निकला— कहने से करने में बढ़ाअन्तर है। तथा अब हमको विनास होगया जो मल्पवात् में आत्मशान्ति का लाभनहीं करसकता। अब स्वाध्याय में प्रवृत्ति करना कार्यकारिणी है— स्वाध्याय से मेरी बुद्धि में यह आता है जो ज्ञान चारित्र दोना का लाभ होना है। यदि स्वाध्यायमें चारित्र लाभ न हुना तब मेरी तो यह प्रतीति है वह स्वाध्याय नहीं एक तरह का पढ़ना है। जैसे ५० पटिन लोग निरूपण करते हैं परन्तु पर्याय के अनुकूल भी चारित्र नहीं पालते अब उनका शान्ति पढ़ना विशेष लाभदायक नहुना— उमी तरह यदि हम लोगों की प्रवृत्ति हो तब त्यागी और पटिन में अन्तर क्या रहा— आपतो विनेकी हैं। लक्ष्य स्वात्मकल्याण को और रहना चाहिये—हमभी यही चाहते हैं—किन्तु चाहत हैं करनेमें कायर बनने हैं यह भी

हमारी निर्बलता है— सर्व अस्थायी— की मूल्याएँ म बाधक नहीं, सतमनस्क की बाधा बाधक नहीं तब यह—का विचारा क्या बाधक होगा—विशेष क्या लिये ।

द्वि० अ० घटि १० स० २००७

आ० शु० चि०
गणेशमूर्ति

卐

卐

卐

श्रीयुक्त महाराय प हुकमचन्द्र जी साहय व श्री प० शीलप्रसाद जी साहय योग्य इच्छाकार—

पत्र आया, समाचार जान— आप जानते हैं जी हम इस अनन्त ससार म आपनक भ्रमण कर रहे हैं इसका मूल कारण हमारी ही अनानता थी— अब यह हमारा विश्वास है आप लोगों आगमाम्याम तथा ऋद्ध अधरसाय से उस हटा दिया है—अद्धा में तत्वपदार्थ आगया है—समय पाकर तद्रूप परिणामन होनमे मिलन न होगा— अब चिन्ता करने की क्या करना सर्वथा अनुचित है— भ्रमज्ञानसे भ्रम जाननाही भ्रमने धर्म का कारण है— मैं प्रशमा नहीं लिखता । विनये तत्व निरचय यथाथ हागया उह तो भार उतरनेसे हलनापन आना है— तसदृश प्रशा का आर्या आने लगता है । यह घात ज्ञान ही जानता है । वसीमे ज्ञान गुणम महत्व अध्यात्म में है । यही कारण है कि सजी पयाय विना ऐसा ज्ञान नहीं होता— हमारे भेलि भार् पञ्च इंद्रिय व मनकी स्पेज्जनक मानतेहैं— ऐसा नहीं— यह तो ज्ञानके साधक हैं— बाधक तो विपरीत स्याति है जिमम मोह भी पुट है—इसको भी ज्ञानी जानता है— मेरा तो आपसे कहना है आगामाभ्यासमे उत्तम उपाय आत्ममूल्याएँ का नहीं—अब काम हो जायें हो जायें किन्तु उनका लक्ष्य न हो । हम तो अन्तरंग मे आपने सत्मग को मीक्षमाग का साधक मानते हैं । आप लोग उसे सपञ्जित रखता ।

सागर विद्यालय

आ० शु० वि०

नैसर्गिक ३ स० २००६

गणेशधरणी

ॐ

ॐ

ॐ

श्रीयुक्त महाराज सा० तुलसीदास जी योग्य इच्छाकार —

पत्र आया समाचार जाने— हमारी तो यह सम्मति है आप
 अथ निर्वृत्तापूर्वक धर्मसाधन करिये—स्थान तो सत्र हैं और जो
 धर्मके साधन हैं वेमा सत्र हैं—किन्तु मोही जीव अपनी परिणति
 के अनुकूल पदार्थ की दरता है। पदार्थतो जैसा है वैसाही है—
 किन्तु हम मोही जीव कामला रोगी के मन्त्र श्वेतशतको पीनशत
 व अपने अभिप्रायके अनुकूल उमे मानते हैं। मोक्षमार्गीनीत्र त्रिनेत्र
 प्रतिमा को अपने अनुकूल साधक मानते हैं और जो इस सिद्धान्त
 को नहीं मानने व उमे प्रतिकूल ही मानते हैं—अन पदार्थको
 अनुकूल प्रतिकूल मानना मोही जीवकी एककल्पना है—पदार्थ तो
 वैसा है वैसाही है—आपलोग तत्रह हैं—किसी के उपद्रवम नहीं
 पढ़ने वाल हो—मुझे तो यह विश्वास है जो हम संतो मनुष्यों में
 कंन ऐसा है जो अपनेको जानना हो—किन्तु उस जाननेम विपरीत
 तादि लोप हों यह अथ घान है। कामला रोगीशत अवश्य देखेगा
 परन्तु उसम पीन गुण मानेगा—इमसे सिद्ध हुवा धर्म म भ्रान्ति
 है न कि धर्मीम। एव मिथ्यात्व का ज्ञानभी इनना विकसित है
 जो आत्माको जानना है परन्तु उसके धर्मा म भ्रान्ति है न कि धर्मी
 म सो इस भ्रान्तिम मूलकारण मिथ्यात्व का उथ है अन
 आशयकता इस घान की है जो हम मिथ्यात्व को मिटावें—एतदर्थ
 नदयको रच्य करनेको आशयकता है—निसन्नि यह स्वच्छ हो
 गया अनायास हमारा कृत्याणहै—मैं तो अब पक्कपान मन्त्र हू—
 परन्तु भोत्रमे यह भावना है जोमोक्षमार्ग रचिगत जीवोंका अस्ति व
 मन्त्र मसकाल म रहे जो यथार्थ मार्ग चले—आपकी मण्डली का
 मुझे बहुत ही अभिमान है जो इस दुस्तमकालम अभीभी तत्रह है—

जहातक आप लोगों के समागम में तत्परिधि वाले ही रह—पेरा
सर्वसे यथायोग्य कहना ।

आ० सुदि ६ सं० २००८

आ० शु० चि०

गणेशप्रणी

卐

卐

卐

श्रीयुग महाशय प० शीतलप्रसाद जी योग्य त्रानविशुद्धि—

आपका पत्र श्री भगनजीके पास आया— आपने लिखा सुभीता
सर्ववस्तु का होना चाहिये— सो प्रायजीवोंके अदृष्टाधीन सुभीता
मिलही चाते हैं— परन्तु हम मोही जीव विकल्प बिना रहते नहीं ।
दखिय कहते हैं मोक्षमार्ग प्राप्त करने में अनेक प्रकार के विकल्प
मेटना चाहिये— फिर कहते हैं— जपकरो तपकरो मयमकरो—यह
विकल्प है या और मुख्य है— परन्तु इससे कोई चिन्ता नहीं— आगी
का जला आगीही सेरुता है— हमको तो आप लोगोंके समागमसे
शान्ति ही मिलेगी और आगम यह कहता है परका समागम शान्ति
का घाघक—मोह की लीलाका माहात्म्य वर्णन करना मोही करनहीं
सकता, निर्मोही घोलना नहीं, जो घोलनाभी है यह मोक्षार्थित प्रवृत्ति
का न्यय है फिर श्री उसकी व्याख्या मोही ही करता है । तिलक्षण
तत्त्व है जो अधिलक्षण में भेद आरोप करता है ।

आ० शु० चि०

गणेशप्रणी

卐

卐

卐

श्रीयुग महाशय प० शीतलप्रसाद जी योग्य त्रानविशुद्धि—

आपका पत्र भगनजीके पास आया । यहापर बाधसामग्री
सुलभ है परन्तु अन्त सामग्री की दुर्लभता है—यह लिखना अमत्य
नहीं— प्राय सत्र ऐसाही दसा जाना है । हमारी सम्मति न कोई
माने—अन्य की क्या कहें हम स्वयं त्रसका निरात्र करते हैं—
हमारी सम्मति यह है परसे परिचय करनाही पापनी जड़ है ।

अर्थ अपने आत्माओं छोड़ मर्यपर है—परफा अर्थ महुचित सिद्धपर्याय तत्र लेना ।

नोट—परिचय शब्द अर्थ कपल ज्ञान नहीं । जिसमें रागधी मात्र मिली हो—राग उपलक्षण मोह द्वेषका लेना—

आ० घ० १४ सं० २००५

आ० शु० वि०
गणेशप्रमाणवर्ती

卐

卐

卐

श्रीयुत महाशय प० शीतलप्रसाद जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

मेरा तो यह विश्राम है जो एन्द्रिय प्रभृति अमशीनीयों पर्यन्त इन्द्रिय ज्ञान नहीं होते—समारम शान्तिक उपाय जो जय करते हैं यह नहीं, क्योंकि शान्ति का कारण तो अशान्ति के कारण का त्याग करना चाहिये—आत्मा एक ही द्रव्य है—हम द्रव्यान्त को आमीयमान शान्ति चाहते हैं यह नितान्त असम्भव है—अहं पर का निरन्तर मानने का अभिप्राय है यहा शान्तिमिले नितान्त असम्भव है—मेरी ना यह सम्मति है आप निरन्तर प्रथम ही निराम कराए, सुतरा भेषाभाग के समागम सुलभ हो जायेंगे । सत्समागम भी कल्याणका कारण है यह मर्य औपचारिक कथन है—नृपचा से व्यवहार ही शरण है—समागमसे स्नेह होता है और यह धर्म है । अत्र किसी का समागम अच्छा नहीं ।

-

-

आ० शु० वि०
गणेशप्रमाणवर्ती

卐

卐

卐

श्रीयुत महाशय प० शीतलप्रसाद जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

पर आया सानन्द पुरुषगये—परन्तु सानन्द तो उत्सन्नि ही निसन्नि परिग्रह के पक्षसे स्थान्द्ध हो चायोग—भैं जानना है आपन इदंतमधद्धा परिग्रह पक्षमे निर्मल होनेकी है परन्तु क्रमश हटाना । तो पड़ेगा—यह पक्ष आपही को मलोन रिय हो सो नहीं हम सर्व

तो उससे लिप्त हैं। यही कारण है जो हमारा उपद्रव अधे की लालटेन सदृश है। यह कहना ठीक नहीं अधेकी लालटेन अथ नेत्रमाला को तो दिखा देती है परंतु यहा तो वह नहीं होना। यहा तो दो धधिरों की सी दशा है— अस्तु धान तो परमाथ में यही है जो इस पक्की घहाना चाहिये—

आ० मुदि ८ स० २००५

आ० शु० चि०
गणेशवर्णी

卐

卐

卐

श्रीयुग महाशय प० शीतलप्रसाद जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

पत्र आया समाचार जाने—प्रश्न जो ६०८ निवृत्त हैं। यह तो अन्नराल की घात है— ६०८ ही मोक्ष नहीं जाते बहुत जाते हैं परंतु अन्नराल पड़े तब ६०८ जाते हैं— अन्न ६०८ ही निवृत्त हैं और ६०८ ही जाते हैं यह नियम नहीं—इसका निणय आप विद्वानों में करना हमतो इस विषयम कुल्ल नहीं समझते क्योंकि यह हमारा विषय नहीं— हमारीतो यह सम्मति है जो यातायातक विक्त्यों को छाड़ सानन्दमे स्थाध्याय करिए—इम अमा ० मास जयलपुरही रहगे— और चैत्र मासम श्रेणगिरि जाने का विचार है यहासे घरया भागर जाने का विचार है— कन्याएका पथ तो शांति म है— शानिना मूलकारण मोहत्याग है। मोहमे यह जीव अनात्मीय पदार्था में निरतन की कल्पना करना है और जहापर पदाथम आत्मीयता आगयी वहा जो अनुकूलरूप अन्म राग और जो प्रनिवृल्ल हुए उनम द्वेष स्थाभायिक हो जाता है। अन्न सगळे महान पाप भगवानने उक्तेही कताया है। अत जहातन घने सो नहीं मोहछोड़ना ही चाहिये आप लोग विज्ञ हैं विशेष स्या लिखें—

अ० मुदि ४स० २००३

आ० शु० चि०
गणेशवर्णी



卐

卐

श्रीमान् महाशय प० शीतलप्रसाद जी योग्य दशमविशुद्धि—

पत्र आया समाचार जाने—मैं हस्तभाग्य #—को उत्तमद्रोणगिरि को छोड़कर सागर जा रहा हूँ। प्रतिदिन उष्णपरीपह और तृषा परीपहका अनुभव कर रहा हूँ— सर्वस्थाना पर डोल की पोल् है— केवल वचनों की कुशलनामे ससार चक्रमे आ रहा है— भैंतो उद्द धय समभता हू तो बुद्धभी ज्ञाननी प्रभुता न रखर रागादि शंभुओं पर विनय कर रहे हैं। भैं अन्तरंगमे धनका मर्म जानता हू— आन तक ।। न तो अर्चन किया और न पासमें ।। रस्ता— परन्तु समोच ऐसी थला है जो मेरा सर्वनाश कर देता है। मैं इसरी से था तब चैन से था। इसरी छूटी कि दर दर का होगया— न जाने कब तक इन अन्तर्गामे पिण्ड छूटेगा— आपनी मण्टली मर्मत है। मैं चाहता हूँ जो उसके धानाकरण म रूँ परन्तु अभी उदय नहीं आया— आपके प्रान्त म सर्वोत्तम स्थान षडागाव है परन्तु अभी आप लोगोंने उसे उपयोगम नहीं लिया— हमलोग बाह्यप्रभाजना चाहते हैं जोकि बाह्यमे सुन्दर दीपनी है— अन्तरंग प्रभाजना तो आत्मगुण विकास से ही है— आनकल परोपकार की ही मुख्यता है चाह अन्तरङ्गम कुद्ध न हो— अस्तु मैं ८ दिन बाद मागर पहुँचूंगा— तब ठीक परिस्थिति का परिचय कर पत्र दूंगा—मैं पलात्कार सागर जा रहा हूँ— अन्तरंग से नहीं चारहा हू।

जेठ सुदि ६ स० २००३

आ शु० चि०
गणेशमूर्ति

卐

卐

卐

श्रीयुन महाशय ला० हुकमचन्द जी योग्य इच्छानार—

आप सानन्दहंगे—आपने सुपुत्रका स्वास्थ्य अथ उत्तम होगा। यहापर गर्भीका प्रकोप अभी पूषवत् है। हमारा निचार सौरीपुर पन्श्वर जाने का है। यह ३० मील परिचम है। यहा से आगरा ३० मील है। स्थान तो अच्छा मेरठ है किन्तु पहुँच नहीं सकते। अथ तो उद्याधीन ही परिणामन हो रहा है। क्यकि पुनपाथम

मनोरनादि की आवश्यकता है। सो प्रद्वअरस्याने द्वारा शिथिल होगया। परन्तु इन घलमे परे भी कोई घल है, जो इन सर्व आपत्तियों के सद्भावमे ऐसा कायकरना है जो अनन संसार की प्रभुता क्षणमात्रमे नष्ट कर देता है। यह शक्तिभी प्रत्येक लीरम है। निगोत्रिया जीव भी तो उसने घलसे मनुष्य होकर निनधाम का पात्र हो जाता है। तत्र नस निरुष्टकालने मनुष्य यदि २ या ४भर निनधामके पात्र हो जायें तो आश्चर्य नहीं करना चाहिये। परन्तु यहाकी तो लीना ही अपार है। हमारे समागम गेमे निःसत्व हैं जो निरन्तर अपने को कायरतारा ही पात्र मानते हैं। पञ्चमकाल है हुण्डानसपणी अल्पबुद्धि हीनघल आदि भाषनाओ से थोनप्रोत हो रहे हैं। हमलोगाने यहा तक पुष्पाथ किया जो पत्थरकी मूर्ति—त्ममें आग्निनाथ की स्थापना कराये आग्निनाथ पं, सन्श—तत्र तत्रा बुद्धिमे काम लोग जो मनुष्य पत्थर में आग्निनाथ घना सरना है यदि यह मनुष्य अपने चेतनम भगवान बनाल तो क्या आश्चर्य है। तत्वसे देखो तत्र यह तो आग्निनाथ स्थापनाये हैं यहातो भारके भगवान् होसकते हैं परन्तु सुनननाला कौन है। अस्तु।

आ शु० चि०
गणेशायर्ण

卐

卐

卐

शायुत्र महाराय प० हुकमचन्नी योग्य इच्छानार—

पत्र आया समाचार जाने। प्रसन्नता इसकी है जो इस भीषम समयमे आपलोग अनेकान्तमतका दिग्दर्शन करा रहे हैं। पदार्थ मसारमे अनेक हैं और रहग। फिर भी सर्व अपने २ स्वत्व को लिये हुए परसो अचुम्बन करते हुएही सुन्दरता के पात्र हैं—उनमे पथकी कर्करता हा तगन जनना है—पथ म दो पदाथ रहते हैं और उनका विलक्षण परिणामन हा घथ है। फिरभी दो एर नहीं होवे—शब्द पर्याय पुद्गल की है फिर परमाणु म उसका आग्निभाय

नहीं— किंतु सर्वथा यहभी नहीं जा परमाणु मे उसका कोई सम्बन्ध नहीं । जो परमाणु पुञ्ज उपासनाको प्राप्त होगय सीमा ता शब्द पर्याय हैं । क्या ध्वन्यर्थोयमे द्रव्यमे परमाणु नहीं हैं ? परंतु निरभी केवल परमाणुम शब्द पर्याय नहीं— जैसे रुपये का व्यवहार ६४ पैस का समुदायम है केवल ॥ म नहीं— पात्र आन म रुपयेका व्यवहार नहीं— इसीतरह शब्द पर्यायका व्यवहार स्कन्धमेहो होगा— स्वध्याया कहासे—परमाणुपुञ्ज का विलक्षण परिणमनही का नाम स्कन्ध है— एव आत्मा म तो विभाव परिणति है यह केवल (शुद्ध) आत्मा म नहीं— तब उसर साथ मोहनीय का उदय होगा उसी अवस्थामे वह परिणति है— यदि कोई उदयका सर्वथा छाड़दने तब रागका उत्पादक कारणही नहीं । तब यह रागादि परिणति सामप्रोके अभ्यासमे कैसे होगी समझ म नहीं आता— जैसे कुम्भ पर्यायकी उत्पत्ति मृत्तिका हीम है परंतु कोई पुम्भकारादिसामप्रो को त्यागदने तब घटपर्याय केवल मृत्तिकाम स्वयमेव होनाये बुद्धि म नहीं आता— आत्मद्रव्य केतन है । इममे जो पर्याय होगी उसकी भी व्यवस्था 'कारणपूर्वक होगी— जैसे ज्ञानमे ज्ञेय भक्तका— ज्ञानही स्वय उसको विषय करना है अर्थात् जानता है । वह जाननारूप परिणमन ज्ञानहीका है, परंतु ज्ञेयहीका अस्तित्व नहीं तब परिणमन कहासे आया बुद्धिमे नहीं आता । अतः कार्य कारणका अस्तित्व माननाही पड़ेगा— भिन्न २ द्रव्यामेभी काय कारणभाव होता है । वहतो एकसमय म भी होता है और भिन्न समय मे भी होता है परंतु एक द्रव्य म तो कार्यकारण भाव होता है वह पूर्व समय म कारण और उत्तर समय में कार्यरूप होता है— गुणो के परिणमन म एक समयम भी होता है जैसे जिसकाल सम्यग्दर्शन होता है उसकालमे सम्यग्ज्ञान होता है उसी कालमें स्वरूपाचरणचरित्र भं हाना है । विशेष क्या लिखें— हम अन्तरंगसे कहते हैं जो आत्म लोकोके सहस्रास को त्यागकर भेड़ियावसान चाल से इधर उधर

चल दिय । इसमें किसी का अपराध नहीं— एताप्रता क्या, किसीम हमभी नहीं— यह नहीं— हमही अपराधी हैं क्योंकि अपराधीजीव ही ऋणकारण होता है— निमित्त कारण नहीं दण्डित होते । अब आपको हम रुम्मानि दते हैं जो आपलोग एक स्थान पर जहा हैं वही धनसाधन करियगा— व्यथ नहीं भट्ठिये— जो रहे अच्छा है न रह खेद न करिय— नमीन आनामे अच्छा है ह्य न करिये— कल्याण अपना करना है अन्यथा हो न हो इसका विकल्प न करिये । मैं आप लोगोंको इस समय बहुत ही उत्तम समझता हूँ इसमे इतना लिखने का साहस किया— अथवा आपकी इच्छा—

आसाद मुदि स० २००८

आ० शु० चि०
गणेशायर्षी

卐

卐

卐

श्रीयुन महाशय प० हुकमचन्द जी योग्य इच्छाकार—

आप सानन्दसे सलामा पहुँचे होंगे आपका ज्ञानही आपका कल्याण करेगा— मेरा तो यह विश्वास है जो बिना सम्यग्ज्ञान के पदार्थाका ज्ञान नहीं होता और बिना पदार्थ परचय के श्रेयोमार्ग का लाभ नहीं— विशेष क्या लिखू— मैं तो यह दृढविश्वास निश्चिन कर चुका हू जो यह आत्मा तितना व्यग्र रहेगा उतना ही ससार म कष्ट पारेगा— जो व्यग्रता को त्यागेगा वह सुरभोजन होगा— सुख कोई अशक्य पदार्थ नहीं केवल परकी मूर्च्छा त्यागही इसका कारण है— मेरा अपनी मंडली से इच्छाकार—

चैत्र घदि ८ स० २००८

आ० शु० चि०
गणेशायर्षी

卐

卐

卐

श्रीयुन महाशय प० हुकमचन्द जी साहय योग्य इच्छाकार—

आप सानन्द पहुँच गये यह अत्यन्त प्रसन्नता की धान है

जो कुछ हो

। समागम इष्ट है— यद्यपि

मनही कल्याणपथके प्रतिबन्धक है परंतु जन्म श्रेणी में जीवनी जो दशा होती है उस अवस्था में यह सर्व-पद्रव अनायास रहते हैं तथा रमना ही पड़ते हैं— यद्यपि वृत्तद्वयामें घैठा हुआ मनुष्य श्रमको दूर करनेमें सहकारी कारण छायाको मानता है फिरभी मार्गगमन का तत्त्वतः बाधकही गतिरोध को मानता ही है— अथ हमारा गति प्रायः पक्षपान सन्तुष्ट हो रही है विशेष कथा लिखें— जो भवितव्य है ही ॥—

सागर
२०—३—१७

आ० शु० चि०
गणेशवर्णी

ॐ

ॐ

ॐ

श्रीयुक्त महाशय ला० मंगलमैन जी योग्य दशनिशुद्ध—

पर आया समाचार जाने—हमारा यत्न निरंतर वाय पदावधि गुण नोप विचारम पर्यवसान हो जाता है क्योंकि हमारे ज्ञानम प्रायः वाह्यपन्थ ही तो आरहे हैं । अतस्तत्त्व की ओर नष्टिने अवशरणी नहीं मिलता— नष्टि अन्तस्तत्त्व की अनुभूति कर सकती है परंतु उपश्रोर उभुराही नहीं होना— उभुरनामा कारण जो सम्यगुण को मिथ्यात्व के उभय में विवसिन ही नहीं होता । अत यदि कल्याण का अभिलाषा है तब इन वाह्यपन्थो के चरम न आये हमारी तो मम्मति यह है जो ऐसा अभ्यास करो जो यह वाह्यपन्थ ज्ञेय रूप ही प्रतिभामे—अथ की कथा तो छोड़ो विसने मोक्षभाग दिग्गया है वह भी ज्ञयरूप से ज्ञानम आर ।

दसरी
का० सु० ० म० १६६७

आ० शु० चि०
गणेशवर्णी

ॐ

ॐ

ॐ

श्रीयुक्त महाशय ला० मंगलमैन जी योग्य दृष्टान्त—

पर आया समाचार जाने—वधो अपना परिणाम निमल करने की चेष्टा करता ही पुन्यार्थ है— अमर्याद लोच प्रमाण कथाय है—

क्यायकामार्गं सुलभं ह—सरलता चाहिये— जो काम करे निष्कपटना मे कर— आप कथ आयाग—हमको आपका दश ऋथा ज्योति उस प्रान्तमे पिपेकी हैं किन्तु हमारी मोहाधताने यहा ला पटका—परन्तु इसका विवाद नहीं। हमने अपनी परोक्षा करली। आप किमीसे ममता न करना। मैं तो कोई वस्तु नहीं परमात्मा सेभी ममता न करना—यही तत्व है। मोहका निर्मूल करना यही भावना हितकारी है—हमको यही प्रमत्तना दूम धानकी है जो आप अथ पहले से घटुव शात हैं—मेरी मुजपकरनगरपालो स दशनप्रिशुद्धि कहना।

ललितपुर

आ शु० चि०

आ० घ० १४ स० २००८

गणेशप्रणी

卐

卐

卐

श्रीयुक्त महाशय ला० मंगलसैन जा याग्य इन्द्राकार—

पत्र आया मतोप हुआ—तबतो परमार्थ मे यही है जो परपन्था को पर मानना आपको आप मानना—ज्ञान मे ज्ञेय आता है यह तो उमकी स्वाभाविक स्वच्छता है। उमम ज्ञेय मलकता है अर्थात् ज्ञेय निमित्त ही यह विकारावस्था का प्राप्त होनी है। व्यवहार यह होता है हम ज्ञेय को जानते हैं। आपके पत्रसे यह निश्चय होगया जो आप समयमारके तत्वको समझने लग हैं। रागद्वेषकी हानि स्वयमेवजानीके हो जानी है। हम कुछ नहीं जानते ऐसा स्वप्नमभी रजद नहीं करना चाहिये—तत्वमे विचार करो कपलीके ज्ञान और सम्यागृष्टिके ज्ञानमे विशेष अंतर नहीं। ये भी स्वपरको जानते हैं यह भी स्वपरको जानता है। ये घटुव पर्यायाको जानते हैं यह अल्प जानता है। सूय दीपककी तरह ही तो अंतर है। अत रजद करना हाय हम कुछ नहीं जानते अन्धा नहीं। स्वपरभेद ज्ञानमे अथ अथ क्या चाहते हो—रागादि होते हैं एतावता सम्यागृष्टिके ज्ञान प्रियाद हो गया—उह ज्ञेयपही तो जानता है—श्रीदयिक भाव ही तो उन्हें म परिणामीको उपादय तो नहीं

जैसे मुनि महाराजके सज्जनके उच्यमें महाग्रन्थि होते हैं, उन्हें करना भी है और यथायोग्य भोक्ताभी होता है परन्तु यह मुनि उन्हें प्पान्य नहीं मानता—विह उपादय नहीं मानता उनके होनमें परमार्थसे प्रेम नहीं—इसीतरह सम्यग्दृष्टि जीवोंकी विषय कपायके कायाम पद्धति है—उनकी गाड़ी मोक्षमार्गम वेन बालसे जा रही है— इसको मन्दचालमे जा रही है अन्तर इतना ही है। अतः सर्वप्रकार के विकल्पाको त्याग स्वाध्याय करते जाओ। अन्य विनये करनेकी चेष्टा न करो तथा यह अन्धा और अमुक निश्चय यह सब विकल्पों को त्यागो—आपने पत्रसे हमको प्रसन्नता हुई। आप जब अवकाश मिले आना—निशचय होकर आना—

ललितपुर

आ० शु० चि०

आसाढ सुदि १४ स० २०८८

गणेशधर्षी

卐

卐

卐

श्रीयुग महाशय हा० मंगलसेन जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

आप एक पार अक्षरय आदये—वर्णा जी को शान्ति होगी उत्तम हुआ—हमनो शान्ति उमरो समभते हैं जहा फिर उस विषय का विकल्प न उठे—हमनो अथ तर्क शान्ति के रस मे वचित हैं। हा अद्धा अक्षरय है और यह विश्वास है फाल पाकर शान्ति भी मिलेगी—आप लोगके चक्रमें आगर यह आप का नेप नहीं हमारी मोहकी दुर्बलता है अन्यथा कोई कुछ नहीं कर सकता। आत्मा सर्वत्र स्यन्त्र है—परन्तु मोही जीव निरन्तर पर पदार्थों म दोषारोपण करना है—कल्याणकामार्ग कहीं नहीं आपहीम है। यदि आप इस पर अमल करोगे तब अल्पकाल म सुख के पात्र हो जाओगे और जो मोहके आरेग म आकर इतलत धमण करोगे तब जैसे वतमानमहो वही रहोगे केवल गाठका द्रव्य ब्यो होंगे—हमारी तो यही सम्मति है जो किमीके चक्रम न आगे अन्यथा जो मसारी जीवों की गति है वही गति होगी।

सिन्धु सन् १९४८

आ० शु० चि०
गणेशशर्मा

卐

卐

卐

श्रीयुक्त महाशय ला० मंगलसैन जा योग्य इच्छाकार—

पत्र आया समाचार जाने— आप जानते हैं हमारा आपसे
लौकिक स्नेह है और जयन्तक हमारे व आपके यह मोह है वहा तक
यह समार धधन है । जिस अतरङ्ग मे यह वासना मिटजायेगी
मेँ आपका और न आप मेरे— हम और आपतो अभी उस पथ
आके श्रद्धालु हैं चयामें अभी वह धान नहीं— चयामें आनेसे आपसे
आप ममता मिटता जानी है । समता आनी जानी है । एक दिन
न रहेगी ममता न चाहेंगे समता — न रहेगा धास न धनेगी धासुरी—
उपयोग शिष्टाचार म जाता है वह अपनेही स्वरुप सभालन म
जाने तध परकी अपेक्षा न रखो । हम तो स्वय इस जाल म फसे
हैं परतु आपनो हिनैगी जान यही फट्गे आप इसमें मत फसो—
यदि हमारी सम्मति मानो तत्र परमेश्वर प्रेम भी त्यागो—भक्ति करो
यह भी कमचोरी का उपदेश है, मोह सद्भाव मे ही यह होता है ।
परन्तु तार्त्विक दृष्टि से सम्यग्ज्ञानी कुद्ध नहीं करता, स्वप्न अथ यह
नहीं जो नसक भक्ति नहीं, परन्तु उसके अभिप्रायको वही जान ।
मेरा ता यह विश्वास है कोई किसी की क्या जान— अपना २
परिणामन अपने २ म हो रहा है— व्यवहार की क्या विचित्र ह ।

जेठ सुदि ६ स० २००४

आ० शु० चि०
गणेशशर्मा

卐

卐

卐

श्रीयुक्त महाशय ला० मंगलसैननी योग्य इच्छाकार—

पत्र आया समाचार जान— आप जो लिख रहे हैं लौकिक
शिष्टाचार की यही प्रणाली है—परन्तु परमार्थ से विचारो—शास्त्रीय
शब्दों के प्रयोग को छोड़िये— हम जब एकान्त से विचारते हैं,

जो पर पदार्थों में हमारी ममता है वही तो दुःख की जननी है—
 और भी गहरेपनमें विचारो तो पर को छोड़ो— जो हमारी निज
 शरीरमें आत्मबुद्धि है वही तो परम ममताका कारण है— शरीरका
 भी छोड़ो—शरीरमें आत्मीय बुद्धिका कारण अन्तरङ्गमिध्यात्य है।
 वही हमारा प्रबलशत्रु है। यदि वह न हो तब हम शरीर को पोषण
 करते हुए आत्मीय न मान— अन्त शत्रु पर विजय करना ही हमारा
 कर्त्तव्य होना चाहिये— निश्चय एकत्व भावना हो गई उसने भयं
 धम होगया— धर्म कोइ बाधरत्नु नहीं— अन्तरङ्गमें फलपित्तमात्रका
 न होना— यह भाव कब होत हैं जब अन्तरङ्ग अभिप्राय अति निर्मल
 हो जाता है— उमसेलिय केवल अपनी तरफ दखनाही बहुत है। पर
 की तरफ दखनाही संसारका कारण है— आत्मा का ज्ञान इतना
 विशद है जो उसमें निरिच्छ पदार्थ प्रतिबिम्बित हो सकते हैं। परन्तु
 हमारे देखनेमें राग द्वेष मोह नहीं होना चाहिये— अन्तरङ्गसे न तो
 आप मुझे चाहत हैं और न मैं आपको चाहता हूँ। घटिरंगमें आप
 हमारे और हम आपके यही घात मोही पदार्थों में लगाना— जहाँ
 एकतरफ मोह है वहाँ दूसरी तरफ उपचारसे जा चाहो सो कहो—
 जैसे भगवानमें दीनदयालु पतितपावन आदि अनेक आरोप प्रतिबिम्बित
 लोग करते ही हैं।

ज्येष्ठ सुदी ४ सं० २००४

आ० शु० वि०

गणेशप्रसाद वर्मा

卐

卐

卐

महानुभाव इच्छाकार—

मैं आपको पुरयशाली समझता हूँ जो तत्त्वण महाराजोंके
 सहनासम आपका समय जाता है— यद्यपि आत्मा रवामावत अद्वैत
 है—आत्मा ही क्या सर्ववस्तु अद्वैत है— और कल्याण लाभकेअर्थ
 यह अद्वैत भावना अत्यन्त उपयोगिनी है। एकत्व भावना का यही
 तत्व है। परन्तु मोहमें हमारी आत्मा इतनी पतित हो चुकी है जो

हम स्वयं अद्वैत होकर जगत्को अपना माननेका प्रयास करते हैं—
 ममेदम् अस्याहम् इत्यादि विकल्पों में उलझकर ससार के पात्र बने
 हैं—तथापि अहमे इत्यादि कम्मेशोऽम्पिन्दि इत्यादि पाठ हम पढ़
 लेते हैं परन्तु उस रूप होने का प्रयत्न नहीं केवल सम्यग्दर्शनकी
 कथाएँ सतोपास्य का पानकर वृत्ति करलेते हैं और यह भी कथा
 में ही रह जाता है—यदि पराक्षा करना हो तब जो नृत्यका नियेचन
 कर रहा है उसके प्रतिरूल शोभा प्रयोगकरके प्रत्यक्ष अपने भाषाका
 निर्णय करलो— अस्तु इसमें क्या रक्खा है—जो हो आप लोग जानें
 या समु जानें— हम ससार को सुलभाने का उपदेश देते हैं, परन्तु
 स्वयं नहीं सुलभाने—ब्रह्मचर्याश्रम व्यवस्थित चलना है और चलेगा
 यह तो ठीक है परन्तु त्यागाश्रम ठीक चलना है इसकी कथा भी नहीं
 यह क्या घला है—उस प्रान्तको पार (यदि इस धमकी पुष्टि न की
 तब तो मैं यही समझा जो अभी उस आश्रमकी नींव पकी नहीं ।
 अत आश्रयकता त्याग धमकी है—इसमें होनेमें एक ब्रह्मचर्याश्रम
 क्या सबही धर्मके कार्यनिर्वाह चल सकते हैं—इसके बिना लयएके
 बिना भोजनकी तरह कोईभी कार्यकी पूर्ति नहीं मेरा यह विश्वास
 है जो भोगी हा योगी हो सकता है— बिना भोगके योग नहा
 मुख्यतया सुखीनीरही कालपाकर वीतरागी होसकता है । यह उरमग
 नहीं अपराध भी है—दुःख में भी भावना अच्छा होनी है । प्राय
 नीर्थकर स्वर्गमें ही इस भूलोक में अग्रनीर्ण होते हैं । किन्तु नरकमें
 भी आकर होते हैं । अत कहनेका तात्पर्य यह है जो उम प्रान्तके
 मनुष्य भोगी घट्ट है—अथ उह चिन्त है जो त्याग धमको
 अपनाये । घट्ट त्तिन गाढ़ी लालम धी का रसाद चर्या भधुर रसका
 रसाद लिया, पुण्य फलको भोगा, आनन्दसे आनन्दक यदी किया—
 परन्तु इसमें शरीरही को पुष्ट किया— जो परन्तु है और परसे पुष्ट
 किया— गारा चूना इ ट से मकान ही घनता है अत्रभजन नहीं घन
 जावेगा— इसमें हमारा कोई अपराध नहीं—किन्तु उसको अपना

माना यही हमारी महती अज्ञानता है—अथ इमे त्यागइवे । ॥
 त्याग धर्म की आवश्यकता है—आवश्यकता हमको इस
 जो बहुत दिन हमपरको अपना माना, आत्मसह यह कार्य नि
 अब इस घोटापनको त्यागकर अपने को अपनायें निमित्त सहाय
 यानताओं के पात्र न हो । हमारे होने आत्मा जो आश्रम है
 अनायास चलेगा । अथवा आपका न आश्रम है और न आप आश्र
 के हैं । यह व्यवहार भी न रहगा—अथवा आपकी उसमें निष्क
 की कल्पना है तब इस धर्मकी मज्जिमा में यह भी त्रिलोक होनावेगी
 यह क्या त्रिलोक हो जायेगी—श्री गोमट्ट स्वामी यात्राके जाने
 निवृत्त है यहभी शांत हो जायगा—जो कुछ आपके पास है उ
 त्यागो और ब्रह्मचर्याश्रम को देकर अपरिमिती धनो । श्री गो
 स्वामी चारर क्या इसमें अधिक निर्भरा सम्पानन कर लोग । सम्
 है आपकी महती इस वाक्य में असंतुष्ट हो जाये परन्तु मेरा
 विश्वास है त्यागम निर्भरा है और धन्दता म पुण्य है—आत्म
 अष्टाहिका पर्व है, दक्षलोक नन्दीश्वर जाने हैं, पुण्य लाभ सम्पा
 करत हैं—यदि हम चाहें तब सयन धारणकर उनसे अधिक ल
 ले सकते हैं—किन्तु समय पाले तब । अत आप घटा जो आत्मा
 यो उपदेश है जो ब्रह्मचर्य पालन कर दोगे को मात दो—त्याग
 का व्याख्यान करना । यह पत्र सुना दना—यह आकाशा न कर
 जो हमारे आश्रम को यह बलाय मिले—भर्ममण्डलीसे यथायोग्य-

आ० शु० चिं
 गणेशचरण

卐

卐

卐

श्रीयुग महाशय ला० मंगलसैन जी योग्य दर्शननिशुद्धि—

पत्र आया समाचार जाने—आप समयसारका पाठ करते हैं—
 उत्तम है—कल्याणमार्ग दर्शाने का निमित्त है—उपादानशा
 तो आत्मा म है । इसके उदय होतेही सर्व आपदाया से आत्म

सुरक्षित हो जाती है—आवश्यकता हमको आत्मीय परिणति को कल्पित न होने देनेकी है। कोई ससारम न तो दृमाण शत्रु है और न मित्र है—शत्रुता मित्रता की स्वस्ति हम स्वयं करते हैं—जब एक द्रव्य दूसरेमें मित्र है—किर हम क्यों न उसको पराने—क्यों परको आत्माय मानें—यद् मानना मिथ्यात्व है। यही जड़ ससारकी है। आन क्या अनादिकालम यह चीज इसी मान्यता से दुयी है। यह मान्यता जिस दिन छूट जायेगी उसा दिन ससार ध्वन छूट जावेगा—ध्वनका करने वालाह। ध्वनको मोचन कर सकता है। हम ध्वन करनेवाले परको मानते हैं और छुटाने वाले भी परका मानते हैं—ध्वन करन वाले स्त्रीपुत्रादि को मानते हैं और छुटाने वाले श्री अरिहन्तादि को मानते हैं। इस पर वस्तु की व्यवस्था में अपने अनन्त मुग्न को रखे बैठे हैं—

जयलपुर

आ० शु० चि०
गणेशप्रसाद वर्णी

卐

卐

卐

श्रीयुत लाला मंगलमैन जी योग्य इच्छामार ।

पत्र आया । आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा होगया यह पढ़ कर अनि प्रसन्नता हुई और आप रोग आक्रान्त होनेपरभी स्वभाव स च्युत नहीं हुए इसकी महती प्रसन्नता हुई—यह तो पर्याय कारण कूट से उत्पन्न हुई है एकदिन अवश्य ही विघटगी । हमके रहने का हर्ष नहीं और जाने का विपाद नहीं करना ही महापुरुषों का मुख्य काय है—स्वभाव म विच्छिन्ति न आने पाने यद्वा पुरुषार्थ है । श्रद्धा अन्त रहना ही मोक्षमार्ग की आद्य जननी है । आप निश्चिन्त रहिए और जो कुल्ल दृढ निश्चयक्रिया है वह न जाने यही महती पुरुषार्थना है—सम्यग्दर्शन होनेके घाट फिर प्रनन्त ससारकी जड़ कटजाती है फिर वह नहीं रह सकता । अपनी आत्माही अपनेको अनन्तसंसार से पार उतारने वाली है । परानलग्ननही धाधक है । आपके घालन

मुषोध हैं—पुत्रा का यही क्त ध्य था जो आपर पुत्रों ने किया । मैं उनको यही आशीयाद द्ना हूँ जो वे धमम इमीप्रकार निरन्तर द्द रह ।

अगहन सु० ५ म० २ ०६

आ० शु० चि०
गणेशवर्णी



श्रीयुत ला० मगलसैन जी योग्य इन्द्राकार—

पत्र आया कल्याणका भाग यही है जो परम निरन्तर कल्याण न करना । आपत्तिया तो औदयिनी हैं, आनी जानी रहती हैं । ऐसा न्पाय करान जो अथ अमोहन कालम न आये— मूल न्पाय यही है न्दु अण्णत् अण्ण करना जाये— विशेष क्या लिखू—मनोप मे जीवन विनाशो ।

अ० मुनि १० स० २०-६

आ० शु० चि०
गणेशवर्णी



श्रीयुत ला० मगलसैन जी योग्य इन्द्राकार ।

पत्र आया समाचार जान । आपका श्रद्धा निमल है यहीरल्याण की पतनी है । आत्मान जो दग्ने जाननकी शक्ति है यह निरन्तर रहती है । सरलम परिणमन रहे इससे हानि नहीं । हानि का कारण परम निरन्तर कल्याण है यही ससार की गता है— चदानक साम्य भाव हैं यही नरही यह निज स्वरूपम रहना है अगाड़ी षडा फन गया । फसाने वाला स्वयं विद्वतभाष है—आपत्ति आने पर स्वरूप म न्युन न होना चाहिय । आप जानते हैं गारकी कितनी घेन्ना मैं प्रस्त रहते हैं पर तु वे भी उम अस्थाम स्वरूप लाभने पात्र हो चाते हैं । अत शारीरिक उदना अन्तः ष्टि का बाधक नहीं फिरभी न २५ म आते रहते हैं । परपदार्थ का अणुमात्र भी नहीं ।

अगहन सु० २ सं० २००६

आ० शु० चि०
गणेशप्रणी

卐

卐

卐

श्रियुत महाशय मंगलसेन जी इच्छाकार—

आप सानन्दमे जावन यात्रा समाप्त करना— किमी की चिन्ता न करना । आत्मा एकाकी है, मोहने यशीभूत होकर नानायातनाआ का पात्र होरहाई । आप तत्वज्ञानी हैं । सधधिवरूप त्यागकर श्रान्तिम कार्य करना । मुझे पूर्ण श्रद्धा है जो आप मासधानपूर्वक उत्सर्ग करेगे । आपके घालक ममथ हैं । आप स्वयं ममथ हैं । यही समय साधना का है । मूच्छा त्यागना । मैं तो कोई वस्तु नहीं, परमात्मा मैं स्तद त्यागना ।

अगहन ष० ६ सं० २००६

आ० शु० चि०
गणेशप्रणी

卐

卐

卐

श्रियुत ला० मंगलमेन जी योग्य इच्छाकार—

पत्र आए समाचार जाने— मेरा शरीर निरोग है । यह गल्प है जो मेरा फागुन मे अरसान होगा—आप चिन्ता न करें ससारम शान्तिका मूल चिन्तानिगृत्ति है । मेरी तो यह भावना है जो अपने स्वरूपको छोड अन्यत्र मनको न जाने दी । मोक्षमार्ग का मूलकारण परमे निज कल्पना का त्याग है । निसफालम मोहका क्षण हो जायेगा रागद्वेष अनायाम चले जायेगे । आपतो ज्ञानी हैं । सर्व पदार्थ भिन्न हैं फिर अपनाता कदा का न्याय है—निसदिन । अरनाता जायेगा अनयाम यद आपत्ति टल जायेगी । आप भूतकर अभी आने को चेष्टा न करना ।

पौष सु० ६ सं० २००६

आ० शु०

卐

श्रीयुन चन्द्रचन्द्र व सनननुमार जी योग्य नशनिविशुद्धि—

पत्र आया समाचार जाने । श्री मंगलसेन जी का स्वास्थ्य अच्छा होगा । यदि स्वास्थ्य अनुकूल न हो तब रत्नकरण्ड भावकाचारम जो मृत्यु महोत्सव है उसे अच्छीतरहसे श्रवण करना । बहुतो आपके पिनाहैं । आपका कर्त्तव्यहै जो आप उह अच्छे परिणामोंसे धर्म श्रवण करायें—मोहनेद्वारा हम ससार समुद्रम अनादिकालमे भ्रमण कर रहेहैं । अयत्नपाय नहीं केवल मोहपर विषय प्राप्त करनाही समार के नुद्धारका उपायहै । इसका जीवनना कठिन नहीं । भेन्झानही राममाण औपधिहै । आपका मंगलसेनजीमे हमारी इच्छाकार कहना तथा यह कहना जो आपने आजम तत्त्वज्ञानका अभ्यास कियाहै उसके फलका अवसर आयाहै । स्वमात्रभी प्रमाण न करना तथा अभव्य औपध और इजैरसन न लगाना । आयुकी स्थिति वृद्धि करनेवाला कोईनहीं । पयाय नष्टिस सर्व अनित्यहैं । मंगलपाठ आदि द्वारा सात्वना देनेम असाधुधानी न करना पत्र शीघ्र दना ।

अ० घदि ८ म० २००६

आ शु० चि०

गणेशकर्ण

श्रीयुन महाशय ला० मंगलसेनजी योग्य इच्छाकार—

पत्रआया समाचार जाने—कल्याणका मार्ग कहीं नहीं अपनेम हीहै । आवश्यकता श्रद्धा निर्मल परिणामानी है । जिसकी श्रद्धा नहै उसका उत्थान अनायाम होजाताहै । अनादिकालसे हमारी प्रवृत्तिर पदायाम रही उहीसे आत्माका कल्याण अकाल्याण मान कर मोह राग द्वेष द्वारा अतन्त यातनाआके पातरह । अत इन पराधीनताके द्वारा हुए सकटोंमे यदि अपनी रक्षा करनेका भावहै तबअपनेको केवल जाननेका प्रयत्न करो । दृष्टि बदलनाहै । समीप ही श्रेयोसागह । पराधीनता त्यागो । शुद्धचित्तमे परामशकरो । कहीं भ्रमणकी आवश्यकता नहीं । उष्णजलको शीत करनेके अर्थ उष्णता दूरकरनेकी आवश्यकता है शीतता तो उसकी स्वभा-

निक वस्तु है—इसी तरह आत्मामें शान्ति स्वाभाविक है परन्तु अशान्तिके कारण मोहादि शक्तियों को दूर करनेकी आवश्यकता है, शान्ति तो अतसल म निहित है ।

आ० शु० चि०
गणेशायर्षी

卐

卐

卐

श्रीयुक्त महाशय लाला मंगलसैन जी योग्य इन्द्राकार—

पत्र आया समाचार जाने—भाईसाहब कल्याणका मार्ग नो लहा है वहाही है—यह तो हमारी आपसी कपना है जो पर भी कारण है । इमका निषध नहीं परन्तु कार्यसिद्धि कहा होनी है इस पर दृष्टि गन देना चाहिये—सामग्री कायका जनक है किन्तु कार्य कहा होता है यह भी विचारणीय है । आपतो सानन् से त्याग्याय करिय और जो बुद्ध परिणतिम रागादिक हों उनमें तटस्थ रहिये । यहां उनका त्याग है । अनन्त जन्म घेत गए । हमने अपनी परिणति पर अधिकार न पाया उसीका यह फल है जो अनन्त ससारकी यातना भोगी—उसका खेद व्यर्थ है । जो गयी मो गयी वत्तमान पर्यायको अन्यथा न जानेदना चाहिये वही हमारा आपका कर्त्तव्य है । जर अच्छा होगा ।

अगहन ४० ६ स० २००६

आ० शु० चि०
गणेशायर्षी

卐

卐

卐

श्रीयुक्त महाशय ला० मंगलसैन जी योग्य इन्द्राकार—

पत्र आया समाचार जाने—अब सर्वविकल्प त्यागो और जो मार्ग अंगीकार किया है उसी पर दृढ़तम रहो । आप स्वयं अपने आपको जाननेकी जो श्रद्धा है उसीके अनुकूल स्थिति बनाओ—अनन्त जन्म घेतगये बुद्ध पल्ले न पड़ा, पल्लेपत्रे क्या ? पातो परही है उसके द्वारा कैसे शान्ति मिल सकती है ।

पत्र

सुप्तमे विनाशो— आपका पुत्र अनुकूल है इसमें याज्ञचिन्ता तो आपसे कोई नहीं। बाहर जानका विरह्य त्यागा केवल रेलकी याचना और, अन्य व्यय होना है। हमारा विचार अथ १ स्थान पर रहनेका होगया है— गृहस्थोका समागम सुप्त नहीं— आपसे जहानक घने स्वाध्यायम मन लगाओ यही शांतिका मूलमाग है— हम बरामर परन्यसहार करते रहेंगे। अथवा इन परन्यसहारम भा समय मत लगाओ— चाहे, आत्मचिन्तन करो चाहे अन्य पायं ज्ञानम आने रागद्वेष नहीं होना चाहिये— इतनी स्वतन्त्रता प्राप्त कर लो जो श्री परमेश्वीकी भी स्मृति न आन—यह होना ही कठिन है।
 पीप सुदि २ स० २००६

आ० शु० चि०
 गणेशायर्षी

श्रीयुन महाशय लाला मंगलसैन जी योग्य इच्छाकार—
 आपका स्वास्थ्य अच्छा है संयमही मिद्विका मूल है। अथ शीत कालम एक स्थानपर ही रहना और याज्ञपरिश्रम विशेष न करना। समय पाकरही परमस्व्याण होगा— तथा मेरा तो निजका यह विश्वास है निसने माहपर विनय प्राप्त करलो, उसने ससार पर विनय प्राप्त करली। सयस प्रबल अरिने विजय होनेपर शेष अरि कोई रहताही नहीं। अन्य कर्मां अर कल्पना सहकारिता से है। परमार्थसंज्ञा तो मोह ही है। धन्य है उन महानुभावांको निन्दान उस अरि को ही अरि समभा, निसने इसपर विनयपाली यही परमात्मा का ल्पासक और निम्रथ प का पात्र होना है। यह भी एक कहना कुछ दिनका है यह स्वयं परमात्मा है। परमाय स यह घड़ी है उसकी कथा कहना मोदी का काम है यह अनिवाच्य है—
 अगहन सुदि ६ स० २००६, ११

आ० शु० चि०
 गणेशप्रसाद पर्यी

श्रीयुक्त इन्द्रकुमार जी व श्रीयुक्त मन्मथकुमार जी योग्य श्रानविशुद्धि ।

पर नहीं आया मो दना । ला० मङ्गलमैन जी का स्वास्थ्य अच्छा होगा । धर्मात्मा दीप है अन पनही पैयावृत्त्यमे श्रुति न करता । निरन्तर श्रावायमना स्वरूप स्तनकरण्डमे सुनाना । पुत्र का यही धर्म है जो पिताके धर्मध्यानमें सारक हो । यों का संसारमें प्राणोमात्र विकृत रहते हैं किन्तु गमे भा हैं जो ममारसों मिटा दते हैं । मङ्गलमैन मिटानरागों में है । हमम नो गनन निरन्तर धम स्नेह किया । मुझे शिरराम है जो गनका परिग्राम निर्मल ही रहता होगा । रोग नो अधानिया कमक न्यस दाना है जो आमगुणरा पातक नहीं । किन्तु इन अधानियामें गिर्धनि श्रुमाग दनेसाला कयाय ही है अन जब हम अधानिया पाप प्रकृतिका वय श्रावे परिणामों में विशुद्धता रचने का प्रयत्न करें । ऐसा करनेसे उन पाप प्रकृतियों का अनुभाग न्यून हो जाता है जो औषध से अधिक न्ययागी है । यहा कारण है जो हमलाग रोगातिक के लिए प्राय धर्मकार करते हैं । धर्मका मम सममन्ता कठिन है । पशोत्तर शीघ्र दना ।

आ० शु० चि०

अ व० ११ म० २००६

गणेशप्रसाद धर्मी

ॐ

ॐ

ॐ

श्रीयुक्त महाराज चेतनलाल जी योग्य दरानविशुद्धि—

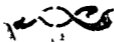
हमन ज्ञानक अनुभव किया है मूर्खाही संसारकी जंतनी है— न्यायका महत्व धास्यत्यागमे ही प्रवारा म आता है । चावलका मल तुष दूर करने मे होना है— फिर भी अंतरङ्ग व्यापार की श्रेया है— श्राध्यायप्रमी बना और सबसे मूर्खा त्यागो—

गया

आ० शु० चि०

३-१०-५३

। गणेशधर्मी



भाग २

श्रीमान् ब्र० वाघाजी जीवानन्द जी सादर इच्छाकार ।

परच—आपका पत्र आया । आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा यह जानकर प्रसन्नता हुई ।

दुनियाँ में अणु अणु से सर्वथात्माआसे भिन्न अपनेआपका चैतन्यमय अनुभव करके निराकुल रहिये । आप स्वयं सन् हैं, अस्मितारी हैं, चैतन्यस्वभावी आनन्दमय हैं किसी चिन्ता को स्थान ही नहीं । परपरणति में अपना सुधार विगाड़ नहीं, अपने में रत लीन होनेका प्रयत्न होना चाहिये । ब्र० विवेकानन्द जी ब्र० जयानन्द जी का इच्छाकार ।

इन्दौर

आ० शु० चि०

२६ - ५ - ५३

मनोहर

卐

卐

卐

श्रीमान् ब्र० वाघा जी जीवानन्द जी योग्य इच्छाकार ।

परच—आपके पत्र आये, आपको अभी पूरा आराम नहीं हुआ । आप धैर्य रखें सर्व अच्छा होगा । आत्मा चैतन्यपुञ्ज है । अपने त्रिपयमे पर्यायमात्र की धारणा ही ध्यान में न लाना । मैं अनानि अनन्त अरिपद चैतन्यपिण्ड यस्तु हूँ जगत के किसी द्रव्य से मेरा सम्बन्ध नहीं ध्यान, भावना रहना चाहिये । भावना भवनाशिली । यह अभ्यास बढ़ाना चाहिये कि कोई कुछ कहे अपने को चैतन्यमात्र अनुभव करके यही सोचना चाहिये कि मुझे किसी ने कुछ नहीं कहा । वह ही नहीं सकता । दशकीनन्दन वृत्तनन्दन को दशानिश्चिद्धि ।

इन्दौर

आ० शु० चि०

१० - ६ - ५३

मनोहर

卐

卐

卐

श्रीमान् धर्मवत्सल सर सेठ हुक्मचन्द जी धर्मस्नेह इच्छानार—

परच—आपका तार मिला— आपका उभयस्वास्थ्य उत्तम होगा—
चातुमास के विषय में ज्येष्ठमास तक कहीं के लिये नहीं कहना
ऐसा मेरा सकल्प है। परंतु आपके धर्मस्नेह के कारण इन्दौर का
ध्यान है। पूर्ण विचार होगया तब आपाठ मास में समाचार दूंगा।

आपका परिणामन ज्ञानोपयोग में प्राय होता ही रहता है। यह
ही एक आत्मा के लाभ का व्यापार है। अपनेको मनुष्य धना
गरीब, त्यागी, श्रायक, शास्त्रज्ञानी, मूर्ख, किसी जातियाला, शरीर,
रूप, यशसहित, यशरहित आदि किसी रूप में मानकर ज्ञानारूप
अनुभव करते हुए अंतर में आराम पाना शार्वन आनन्द लाभका
अति निरुक्त मार्ग है। मडली एवं परिवार धर्मस्नेह कहिये।

शिमला
२२—५—५२

आ० शु० चि०
मनोहरवर्णी



श्रीमान् सर सेठ साहय योग्य धर्मस्नेह—

परच—हम राहना सकुशल आगये— आपका धर्म ध्यान निर
अपठ ज्ञान सामान्य की दृष्टि से पुरस्कृत जाना हुआ होही रहा
होगा - श्रीयुत भैया रामकुमार सिंह जी आदि परिजनोको दर्शन
विशुद्धि - श्री मा साहय को धर्मस्नेह कहियेगा— श्री ब्र० जीवानन्द
जी व जयानन्द जी हस्तिनापुर यात्रा को गये हैं। जगतके व्यवहारा
का उपयोग दृष्टि-आत्मा के लिये विसयाद् है— व्यवहार में रहकर
भी निज सहनरूप दृष्टि रहे यह सम्यग्ज्ञान से ही होगा। सर्व तथ्य
हैं परंतु वाद्य द्रव्यमे ममेदं कल्पना नितान्त अतथ्य है। मेरे ध्यान
से अध्यात्म हितमार्ग के अन्वेषण की दृष्टिमें नयेके ४ प्रकार हैं—
(१) शुद्ध निश्चयनय, (२) अशुद्ध निश्चयनय, (३) व्यवहारनय
(४) उपचार— इनमे उपचार तो मिलकुल अतथ्य है। शेष तीनों
तथ्य हैं जिन्हें हम इन विषयों में विभक्त कर सकते हैं— (१) द्रव्य

का सहनस्वरूप अलंकार सामान्यरूप है— (२) विभाष में निमित्त कुद्ध करना नहीं, (३) विभाष निमित्त घिना होना नहीं। इसमें पहला

हिनप्र है। कोई विशय पत्र गुरुवय वर्षांनी साहय का आने तो मुझे भी उन शिक्षा के परिणामा से सुचिद करते रहियेगा— अपने स्वास्थ्य के विषय म लिखिय — ठीक होगा—

खडवा आ० शु० चि०
मनोहर

॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

(ओपरेशन के समय)

श्रीमान् सर मेठ साह्य हुक्मचन्द जी जैन योग्य धर्मस्नेह—

पूण स्वस्थ होगये होंगे ससारके स्वरूपका और आत्माके स्वरूप का आदको दृढतम ज्ञान है ही—आशा है आप प्रत्येक परिस्थितियों म शुद्ध चैतन्यस्वरूप क धार २ अगलोकन से प्रसन्न रहते रहे होंगे। कर्मोदय प्राय दुर्निवार है फिर भी ज्ञानी कर्मादयोपयोग म फलव्य भाव न होनेमे अवरुद्धम अनामुल ही रहते हैं। आप अपनी प्रसन्नता का पत्र देना— सर्वपरिवार को न्यान विशुद्धि—

जयपुर आपका हितचिंतक,
मनोहरवर्णा

॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

श्रीयुक्त बाबा जी जीवानन् जी मान्द्र इच्छाकार—
परब — आपका पत्र आया वृत्त अथगत मिये। आपका पत्र

अन्धा होगया सो समो हर्ष है । अब आप जिननी जल्दी होसके माचके धान जल्नी आना । यह धान तो कुछ अशो म ठीक ही है कि आपको समागम बिना धर्मध्यान का लाभ नहीं हुआ । परन्तु वेदना म भी कहातके धर्मध्यान हो सकता है यह बात भी आप जानते हैं । वेदना तो सम्यक्त्वम निमित्त हो जाती है । उपसग तो शुक्लध्यान को भी समीप ला दता है । जगन की अशरणाताका भाव भरनेका अरसर था । क्रमवद्धपर्याय लघ जो हुई होनी थी निकल गई । आत्मोपनिषद्मे प्रमुक्ति रहिय । ब्रजनन्दन को दर्शनप्रशुद्धि ।

दहरादून

२४-२-२३

आ० शु० चि०

मनोहर

卐

卐

卐

श्रीयुत धाश जी जीवानन्द जी मात्र इच्छाकार—

परब—आपका पत्र आया घृत्त जाने—आप १ अप्रैल को अरहन्तनगर जारह हैं मो अन्धा है । अब हमारा विचार श्री धड़े धर्णी जी के पास कुछ दिन धाद जाने को हो रहा है दहरादून म जाने का विचार है करीब ८-१० दिनम । तबतक आपभा कुछ स्वस्थ हो जायेंगे । ला० गेम्बलालको दर्शनप्रशुद्धि कहना—धृवनन्दन को भी दर्शनप्रशुद्धि कहना ब्रजनन्दन की सेवा प्रगमनीय है ।

जगन को अनित्य अमार अहित समझकर इससे लक्ष्य हटाकर इन्द्रिया को भी संयमित करके अपने आपने अनुभव अमृत द्वारा अमर घने । पत्र दना । और यह लिखना कि आप लाठी के सदार कितना चलने लगे हैं । शेष सत्रकुशल—धा० ऋषभदास जी सान्ना हागे । उनकी उदारता सामान के योग्य है ।

दहरादून

आ० शु० चि०

मनोहर

卐

卐

श्रीयुग माई प्रेमचन्द जी योग्यदर्शन विशुद्धि—

आपका धर्मसाधन ठीक हो, शांति लाभ हो। आप यदि २ घण्टे को ब्रह्मचर्य सपत्नीक रखसकें तो आपका यह छोटा धर्मजात शिशु का तीनों का फलप्राप्त है। इससे आपका बालक बहुत पृष्ठ और सुन्दर विचारवाला बनेगा। बालक पालिकाधा को आशीर्षक।

धन ऐश्वर्य सप्र पुण्यका फल है। पुण्य ज्ञसी पुण्य के बलशाली होना जो धर्मरूप प्रवृत्ति करते हुये भक्ति, ज्ञान, समय आदि शुभ प्रवृत्ति रखते हैं।

चातुर्मास कहा होगा यह निश्चय नहीं। ज्योतिष पंचायतका ज्योतिष गुरुमचन्द जी का भी विशेष आग्रह हो रहा है।

शिमला

आ० शु० चि०

मनोहर वर्णा

卐

卐

卐

श्री माई धर्मवत्सल ला० ताराचन्द जी महानुभाव

योग्यदर्शन विशुद्धि

परच—आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। मदनतर मेरा स्वास्थ्य अब ठीक है—परिवारजनों को दर्शन विशुद्धि। धर्म आत्माकी माई क्षेमरहित परिणतियों कहते हैं। पाछ प्रवृत्तिया व्यवहार धर्मदे। मोघ, मान माया, लोभ पर विनय प्राप्त करना ही शान्तिमाग है। आनन्द आढम्बर विरोध है। सत्य स्वरूपकी ओर मुकाब नही के पराधर अधान् कम है। अत एक अपने नैमित्यमायारूप धर्मसे प्रयोजन होना यह धुन हो जाना सत्य है। यह आप ही म है केवल दृष्टि देना है। आपके सद्ब्यवहार का मुझपर स्वास्थ्यार्थक प्रभाव पड़ा।

कायला

आ० शु० चि०

२४—५—५१

मनोहर

卐

卐

卐

श्रीमान् धर्मधनु ला० ताराचन्द्र जी योग्य दर्शनविशुद्धि

परंच—आप सकुशल धर्म साधन करते होंगे। यह, देहलौ कल आगया था। श्री १०८ आचार्य सूर्यनागर जी विद्वान और शात है। हम सब यहा ५ चुल्लक है ब्रह्मचारी भी ५—६ हैं। अभी कुछ दिन यहा रहेंगे। यहा एक भाई पूछते हैं कि ढोलावाले महारान कहापर है। मुझे पना नहीं आपको पना होतो लिपना। मसार एक प्रिष्ट परिस्थान है। आत्मा ज्ञानमात्र है, उनना रहे, ससार चर्चाकी परवाह न करे तो आत्मा अपने सत्य लक्ष्यपर पहुँच सकता है। समाजके लोग मुनियोंकी भो चचा करनेसे दूर नहीं होते। मुझे उन महाशयके इस प्रश्नमे कि ढोलावाले महारान कहा हैं मुनकर दुःख हुआ। जिनको पूछना है इनना सीधा नाम लेकर पूछतेतो क्या उनका विगड़नाना मममर्मे नहीं आता। आपके धर्ममेमको धन्य है। परिवारजनोंको दर्शनविशुद्धि कहना। मेरा स्वास्थ्य अब ठीक है। आप चिन्ता न कीनिये।

देहली

आ० शु० चि०

मनोहर

卐

卐

卐

श्रीमान् भाई ला० ताराचन्द्र जी योग्य दर्शनविशुद्धि —

परंच—आपका पत्र आया समाचार जान। हम लोग सकुशल इंदौर आगये। आपके लिखे अध्यात्मपत्रसमूह भेजा है मिला होगा।

अपना समय कुछ आजीविका व्यापारमे बिताकर शेष अधिक मे अधिक समय स्वाध्यायमे लगाना। विनवाणी सच्चे उपदेश द्वारा मोह निवृत्तिमें साधन होगी।

परिवारको दर्शन विशुद्धि—निरन्तर अपने सत्य स्वरूपके लक्ष्य पर प्रयत्न रहना। निज आत्मा अखण्ड गुणपूर्ण अजरअमर और

अविज्ञान है। उसी के ध्यानमें भव्यनीच मुक्ति का मार्ग पाने हैं।

०३-६ ५२

आ० शु० चि०

मनोहर वर्णा

卐

卐

卐

श्रीमान भाई ला० ताराचन्द्र जो जैन योग्य दशतपिशुद्धि —

आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। आपकी पद्धतिका मुझे धारधार ध्यान आता है। आपकी परिश्रुति और न्यायियोंके प्रति परिणाम आध्य है।

भाई जी—आप सामायिकका अभ्यास जरूर रखिये। सामायिक—
१ जाप, धारह भावना का विचार अपने में बातचीतने रूपमें कुछ उत्साह पैदा करना, व कुछ समय सब प्रकारका विचार छोड़कर शान्त बैठना यही सामायिकके प्रोग्राम है।

शारीरिक स्वास्थ्य इस समय ठीक नहीं है। कुछ थोड़ासा घुसारा है तथा नन्हा जुगामका बहुत जोर है जिसमें गलेमें तथा पीठ हाथमें दर्द है, सिर भारी सा है। यद्यपि स्वास्थ्य बराबर है जो भी व्ययक्त बि-कुल नहीं। आप चिन्ता न करें। जल्दी ठीक होजायेगा आप सानन्द स्वाध्याय करियेगा— अभी हमारा विचार काधला ठहरने का है। दो हफ्तेका प्रोग्राम काधले का है। बीचमें २—३ दिनको घूवालेडी म मन्दिर घनने की खीमने लिए जो कैरानिके पास है शायद जाना पड़े। खेड़ीके भाई आये थे। उन्होंने इस मंदिर घनगने की प्रेरणा की थी। वहा २० घर जैना के हैं पर मन्दिर नहीं है।

पूज्य श्री १८८ आचार्य सूर्यसागर जी महाराज मेरठ किस दिन आयेगे और अभी कहा हैं जरूर समाचार भेजियेगा। पत्र भेजने का पता यह है —

मनोहर वर्णा हि० दि० जैन मंदिर काधला।

(नि० मुजफ्फरनगर) सास काधला।

सब भाइयोंसे दर्शनविशुद्धि कह श्री जियेगा ।

आपका हितचिन्तक
मनोहर

धीमान् भाई बा० नारायण जी एम० ए० योग्य दर्शनविशुद्धि—

परच—आपका पत्र मिला— श्री आचार्य जी के स्वास्थ्य का समाचार जानकर बहुत खेद हुआ । श्री आचार्य नमिसागर जी का स्वास्थ्य यदि कुछ अधिग्रहण हो तबद्वारा स्वस्थ करें । श्री बड़े बर्षों जी का श्री आचार्य जी को प्रणाम कहना । मैं भी इस समाचारको सुनकर बहुत खेद हुआ और यही भावना है कि महाराज का स्वास्थ्य शीघ्र अच्छा हो ।

श्री आचार्य महाराज जी को मेरा नमोऽस्तु कहना । मुझे उनके दर्शनों की बहुत अभिलाषा थी पर अभी पूर्ण नहीं हो रही । आशा है उनके दर्शन हो जायेंगे । सर्व धर्मपुत्रोंको दर्शनविशुद्धि । लाला जुगमन्दरदास जी आदि सब सजुशल होंगे । मेरी हार्दिक भावना है कि श्री आचार्य महाराज का शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हो ।

आ० शु० चि०
मनोहरबर्षी

卐

卐

卐

श्री भाई रत्नलाल जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परच—आपका पत्र आया । एक जाप्य आप प्रतिदिन करते ही होंगे, यदि नहीं तो अग्रयण करना । समय अधिक न हो तो पहले ६ बार एमोकार मंत्र पढ़करके ॐ नमः सिद्धेभ्यः को १०८ बार जप लेना—परचान् छहडाला की कोई डाल या अन्य पाठ या १ भजन पत्रक ६ बार एमोकार मंत्र पढ़कर समाप्तकर लेना । यह ध्यान नरेश भाई आदि को भी कह देना ।

शिमला

आ० शु०

६—६—५२

श्री भैया रतनलाल जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका पत्र आया ।

आयुषध से मतलब नरकायुषध तिर्यगायुषध आदि से है उससे नहीं और गतिषधसे मतलब नरक गतिषध आदि से है । आयुषध टूट नहीं सकता । दयायुषध तब दब ही होगा । गतिषध का परिवर्तन हो जाता । आयु का काम तो उस भयमें आत्मा को रोके रहना है, गति का काम उस भयके अनुकूल भाव होना है । गतिको उदय आयुका मुरझा सकता है ।

भैया, जैसे प्रशंसाका आनन्द मिलता है तैसा निन्दा का भी मिलना चाहिये तभी धैर्य और स्वभावनिश्चलताकी मजबूती होगी । आत्माका लक्ष्य और परिणाम भ्रष्ट होना चाहिये ।

परिवार को दर्शनविशुद्धि ।

इन्दौर

१८—८—५२

आ० शु० चिं०

मनोहरवर्णी

卐

卐

卐

श्रीयुक्त भाई सा० रतनलालजी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका स्वास्थ्य अध्ययन धर्मसाधन ठीक होगा ।

भैया आत्मा का तीन कालका स्वभाव क्या है ? केवल प्रतिभा सुरूप ज्ञाता दृष्टाकी स्थिति, वह लक्ष्यम रहे और यहाका पास व समागम चणिक है ऐसा ज्ञानम रहे तो आत्माकी अपूर्ण वन्नति होगी । -

अपने स्वास्थ्य का समाचार देना व ध्यान रखना आजकल बरसात का मौसम है पथ्य सुपथ्य भोजन पर ध्यान रखना—संसार संसार ही है, अन्य है, कभी भी कोई प्रकार को आकुलना न लाता । हमारी भावना है कि आपनो वह ज्ञानपद प्राप्त हो जिसमें आपद रहती ही नहीं ।

इन्दौर

२३-८-५२

❧

❧

आ० श० चि०

मनोहर

❧

श्रीभाई रतनलाल जी—योग्य दर्शनविशुद्धि ।

परंच—आपका धमध्यान ठीक चल रहा होगा । परिवारचर्चा को दृशनविशुद्धि—भाई नरेशचन्द जी को दर्शनविशुद्धि । दोनों भाइ प्रीतिपूर्वक रहो और इस असार अनित्य संसार में आत्मज्ञानी बनकर अपनी महज परिणामिक अधिमारी बनो जिससे सदाओं सदा सुख पालो यही मेरी तुम दोनोंके लिये व सचके लिये भावना है ।

दहरादून

२८-४-५२

❧

❧

❧

आ० शु० चि०

मनोहर वर्णा

श्रीयुग भाई रतनलाल जी योग्य दर्शनविशुद्धि ।

लोकमें इस जीवन निभाना है इतना ही काम है । परन्तु अपने लिय ऐसे ज्ञानम प्रवेश और स्थिरता पाना— जिसमें सब क्लेशोंका मूल यह परपदार्थ शरीर मदा के लिये वियुक्त हो जाता है । यह कार्य सामने है, मुख्य है ।

रंढवा

१५-११-५२

❧

❧

❧

आ० शु० चि०

मनोहर

श्रीयुग भैया रतनजी—योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका पत्र आया—सब भाइयों को दर्शनविशुद्धि का प्रवृत्त को आशीर्वाद ।

कार्तिक के बाद आप अपने अध्ययन पर बहुत विशेष ध्यान रखना । शुद्धोपयोग से प्रयोजन रखना । अपनेमें कपाय भी कभी उत्पन्न

रखना ।

निर्वाह

अपम को ही न्या लेना और क्षणांतर म आत्मस्वरूप सोचकर उसे निकाल देना ।

इन्दौर

आ० शु० चि०

मनोहर

११-१०-५१



श्रीयुते भैया रतन - योग्य धर्मग्रन्थि -

परंच-आपका पत्र आया । मनुष्य जीवन में धार्योवरया म ही सञ्ज्ञानपूर्वक धर्मसंस्कार होना सुभित्तय का सूचक है । कुछ भी विकरालियों को जो बुद्धि वृद्धअवस्थामें होती है उस बुद्धिका धट्टन पहिले ही होनाना सची सावधानी है । आत्मानो एकाकी हो है । अपने को एकाकी समझना "गद्दा पै गृह में न रवे ज्या जलम भिन्न फमल है की चरितार्थता का मूल है- ऐसा प्रयन होना चाहिये जो क्रोध अपमान के प्रसंग आने पर भी सोम न आवे । यदि कुछ मनमें सोम आ भी जाये तो वचनों से प्रशित नहीं करे क्यकि भीतरि धान नो २ भिनट पाइ ही अपनेको समझाकर अलग की जा सकनी है । प्रशान्त मे सोम का ताता घ जाना है । आप सुधोद पुन्य हैं ।

इन्दौर

आ० शु० चि०

७-१०-५२

मनोहर



श्रीयुत भाई सा० रतननाल जी जैन- योग्य द्शानविशुद्धि -

परंच-आपका पत्र आया- निष्प्रचसष्टेण मी वृषम शब्द का श्रेष्ठ अर्थ हो जाता है । चेदणकम्मात्तण-कर्म २ तरह के हैं चेननकर्म, अचेतनकर्म । ज्ञानावस्थादि ८ कर्मों को जी प्रट्टनिमेद के १४८ हैं तथा अनेक हैं वे अचेतनकर्म हैं । तथा कर्मा के उदयसे जो आत्मामें विभाव पैदा होते हैं वे चेतनकर्म कहलाते हैं-निश्चयनय मे चेननकर्म का कर्ता आत्मा है और व्यवहारनय मे उन चेतनकर्म

के निमित्तके जो पुद्गलकर्म घघते हैं उन अचेतनकर्म (झानापरणादि) का कर्ता है ।

अनात्मभूत लक्षण— मंडीका लक्षण मृदु-यहां दृक्का अर्थ लाठी, घंत ।

साध्यवहारिकप्रत्यक्ष—जिमे हम व्यवहारमें कहाकरते हमने प्रत्यक्ष द्रमा अप्रत्यक्ष सुनाआदि । यह सब व्यवहारमें कहानाने वाला प्रत्यक्ष साध्यवहारिक प्रत्यक्ष है वास्तवम तो यहसभ मतिज्ञान है और मतिश्रुत परोक्ष कहेगये हैं ।

धर्मशिक्षासूत्र के अत्मविद्यार्थियाको आशीर्षा ।

महारा

नम्बर सन् ५२



आ० शु० चि०

मनोहर



श्रीयुत भाई ला० रतनलालजी योग्य दशनविशुद्धि—

मुझे इस धानका दुःख है कि तुम्हारे लिखनेपर भी मैं धर्म शिक्षासूत्र के अधिदेशानुदेश न भेन सका ।

१—किसीके सम्भवर्म किसीको मुख्य समाचार आदि कहनेम उसके हितका ध्यान रखना—मनुष्य जीवनमें ऊचे उठनेका यह भी एक मंत्र है ।

२—जिस धानके कहनेम स्वपरकी भलाई न हो अहित हो वह धान नहीं कहनेमे आत्मफल प्रकट होता है ।

३—किसी भी परिस्थितिम हो मधुर वचन हितकारी धोलना ही मानवधर्म है ।

४—मनमे सबका भला सोचना वचनसे हितमित प्रियवचन धोलना, कायमे जहा तक घतरटे दुःखरेफी सेवा करना शुभोपयोग है वह दोनों अत्यन्त उन्नतिक धारण है ।

तुम अत्य पुण्य हो । जहा तक हो जो धान उत्तम धारण करो ।

आप इस वर्ष फाल्गुणके बाद अपने फाल्गुणके अध्ययनमें काफी मन और समय लगायें, धर्मशिक्षासदनकी १७ मिनट ही समय काफी है जादोंम तथा जैसा लाला जी कहें सो ध्यान देना ।

आ० शु० चि०

इन्दौर

मनोहर

卐

卐

卐

श्रीयुत ला० सुरवीरसिंह जी हमचन्द जी जैन योग्य दर्शनविशुद्धि—
परंच—आप सध सद्गुरुल धमसाधन करते होगे ।

शास्त्रस्वाध्याय पर विशेष ध्यान रखना । श्री ५० शरणााराम जी हस्तिनापुर गय थे वे हस्तिनापुर ही हैं या बड़ौत ? हमारा बड़ौत आने का इरादा तो था किन्तु आपका तो मालूम ही होगा पागपतसे हस्तिनापुर चला गया था । यथाथ शान्तिका कारण यथार्थ ज्ञान है । वस्तुके स्वरूप व कारण में विपर्ययना न रहे तो ज्ञान की समीचीनता है । सर्ववस्तु स्वतंत्र सत् हैं । किसीका किसीसे सम्बन्ध नहीं । निमित्त नैतिक भाव ऊपरी सम्बन्ध है इसकी स्वरूपमें प्रतिष्ठा नहीं । अपनी आत्माको स्वतन्त्र एकाकी अपने परिणमन् स्वभाव में परिणमन ने वाला अन्य सर्व अनन्तानित द्रव्योंसे न्यारा समझकर परपरिणमनमें हर्ष विषाद न करना अपनी अपनी रक्षा है । सब भाईया को दर्शनविशुद्धि ।

मल्हारगन, इन्दौर

आ० शु० चि०

२८ मई सन् १३

मनोहर वर्णा

卐

卐

卐

श्रीगुन भाई लाला सुरवीरसिंह हेमचन्द जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका पत्र गयामे प्राप्त हुआ था तथा जैन समाजकी ओरसे चातुर्मासका निमन्त्रण भी । वर्षायोगका निर्णय १५-१६ दिनमें कर लूंगा । सब भाइयों को दर्शनविशुद्धि । आत्ममनन शार्ता

का मान है। वास्तु अर्थ तो मित्रता भी मनागमहो शान्तिका कारण नहीं प्रत्युत अशान्ति का आश्रय है। सामायिक राध्याय नियमित करते रहें।

मल्हारगन इन्तौर

२६-६-५३

आ० शु० चि०

मनोहर वर्णा

卐

卐

卐

श्रीयुत भाई मुग्धशारसिंह जी हेमचन्द्र जी चैन योग्य शानतिशुद्धि

परच—आप सशुशल धर्ममाधना करते ही हगि—तन्तनर आरना पर आना पानुमाम के लिये २—१ नगह को विचार लिए गिया है यदि कदाचित् बहाका विचार हमलोगोंका न हुआ तब यदा क वर्णयोग का मूडना नूगा। मम समय नव १० नगरोंम जैन ममात्रके पर तार आये हैं तनमम बर्हानको भी विचाराधीन ररना ही है। आप निर्णयमे पहिले आनरा फट्ट न करें। सरमदलीको शानतिशुद्धि। आत्मोत्कषका उपाय एकमात्र सम्यग्ज्ञान है उसके सेपातने—अर्थ राध्याय करते ही रहें। मनुष्य धीरत अमूल्य चीजन है। इमरा समय आत्मोत्कषमे लगायें। कुछ नये स्थानोंम अधिक आमह होरहा है यदि बहा का मेल विचार न हुआ तो आपसे जरूर लिखूगा। आप निर्णय पहुँचनेमे पहिल आनेका फट्ट न करें।

मल्हारगन इन्तौर

२६-६-५३

आ० शु० चि०

मनोहर

卐

卐

卐

श्रीयुत भाई मुग्धशारसिंह जी हेमचन्द्र जी चैन सराफ योग्य दर्शन विशुद्धि।

परच—आपका राध्याय व धर्ममाधना ठीक होगा। म सामायिक मे सुबहका समय दगा जल्दी नठना सुबह,

उ

तो आप जयपुरही होरहा है।

अच्छा है। मन्दिर घडे घड़े करीब १०० हैं। चैत्यालय अलग है।
रत्नकरण्डश्रावनाचार प० सप्तसुम्पदास जी की बचनिका सहित
का स्वाध्याय करना।

सर्पपदार्थ स्वतन्त्र हैं किसीका किसीके माथ सम्बन्ध नहीं है।
क्योंकि सम्बन्ध हो या कोई किसीके परिणतिमें परिणम जायतो
फिर घन्तु टिक नहीं सनी किन्तु घस्तुलोक अनान्तिमें टिकरहा है
चलरहा है ऐसी घस्तु व्यवस्था जानकर अपने आपमें अपने अपने
मर्त्यस्वको देखकर भ्रमन्न रहो। करना कुछ पड़े अपने स्वभाषनी न
भूलो। मोह राग द्वेषमें दित नहीं। सप्तधात्मा प्रत्यक में पृथक हैं।
भेद विज्ञानकी भावनामें दुःख ममार अरस्य दूर होगा। परिवारका
दशनविशुद्धि सप्तमहली की दशनविशुद्धि।

जयपुर

४-८-५३

आ० शु० चि०

मनोहर वर्णा

卐

卐

卐

श्रीयुत महाशय ला० मुखधीरसिंह जी हेमचन्द्र जी योग्यदर्शनविशुद्धि
परंच—आपका पत्र आया आपने जनेऊकी विधि पूछी सो त्याग
करना निम्न प्रकारसे व नियम रखना तो बल्याणार्थीका क्तव्य है।
मत्त यसनका त्याग रात्रिभोजनका त्याग, जल छानकर या छानकर
पीना शक्यनुसार सामायिक देवर्चन स्वाध्यायमें समय लगाना
मुख्य वर्त्तनीय है।

आपका लिखाहुआ ट्रेक्ट ठीक है। दिवाली बाद ही उसे
छपानेका लोगोंका निश्चय है। दिवाली बाद प्राय आपने प्रातम
आऊगा। ट्रेक्टका भाषा बहुत अच्छी है।

धर्मसाधन कायम प्रमाद न करना स्वाध्याय में जो चर्चा न
समकम आपने पत्रद्वारा पूछते रहना।

अपने आपको जानना व उसीमें स्थिर रहनेका प्रयत्न करना ही
है सार शेष सब असार है।

अथ यदा गर्माहुई है ठंडा होगया है । अथसर हो तो आसन्ते हैं अथ गर्माकी बाधा नहीं ।

१-अरहन दध शरीरसहित लोकमें विराजमान होते हैं । उनके द्रव्य इन्द्रिया पाच हैं । उनमें उपयोग नहीं यानि मापेन्द्रिय-ज्ञानापरामिन्न ज्ञान नहीं । नियमसे वे सिद्धहोने सिद्धलोकमें विराजमान होंगे ।

२-विकलत्रय दोइन्द्रिय तीनन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय शम्बरह हैं उनके मन नहीं होना ।

—मुक्तजीव सिद्ध लोकमें लोकके अप्रभागम मनुष्यलोक ७ उपर ४५ लाख योजनमें शरीर रहिन इन्द्रियरहित हैं ।

४-आत्मा मुक्त होकर फिर मसारी नहीं होना परन्तु परमाणु अकेला रहकर भी फिर स्वरूप में आ जाता ।

५-गोमी से प्रसवान है । फूलगोमी तो रराष है हो—बदका आप निर्णय कर लेवें । यह भी ठीक नहीं जचती । मूली के पत्ते पमीकन्द नहीं हैं वह अनन्नकाय भी नहीं है ।

जयपुर

आ० शु० चि०

२४-२-४३

मनोहर

卐

卐

卐

श्रीयुत भाई सुरधीरसिंह जी हेमचन्द्र जी योग्य धर्मउद्धि—

परच—आपका पत्र आया— चानुर्मास्य परचान् बड़ीत आने को निरमा सो ठीक है— बडीत आनेका अग्रय विचार है इस विषय में असौज बाद लिखू गा— निम तिथि का प्रोगाम घटेगा ।

१-निस मन्य में दूध घन दही त्याग आदि का धरण है उसका मनलघ यह है कि जिसके दूध पीने का घन है वह दही-नहीं माना और निसके दही गान का ही नियम है वह दूध नहीं पीना और निसके अगोरस का नियम है अघान् फोइ गोरस खाऊं गा ऐसा नियमजाला दूध दही कुछ भी नहीं लेना ।

पर्याय क ग्राहण म लिया है इम तरह द्रव्य म सब पर्याय आगई परन्तु पर्याय म अन्य पर्याय नहीं आता । इम पर ग्राहक व्यय भौत्य पटाया जाना है ।

२—जल एवेन्द्रिय जीव है । गृहस्थ स्यात्सहिमा का त्यागी नहीं हो जाता उससे सचित्तभक्षण का त्याग भी होना है नष अपने अध सचित्त मामभी करना है । जलभी प्रासुक करना है उस जल का साधु ल लेते हैं प्रासुक जलम कोइ जीव नहीं है । तल छाननर घाट भी एवेन्द्रिय जीव रह जात हैं यह मतुमत है । प्रासुक जलमे एवेन्द्रिय जीव भी नहीं रहते ।

३—अपनी जानमाल को रक्षा नित्य गृहस्थ प्रत्याक्रमण करता है उसम जो हिंसा हो जाता है उसम जा हिंसा हा जाती है उसे विराधा हिंसा कहते हैं इसका गृहस्थ त्यागी नहीं हो पाता ।

४—जहा अनन्तसिद्ध भगवान विराचमान हैं वहां सुद्धम निगोद भी रहते हैं, सिद्ध अपत अनन्त ज्ञानमुख म रत हैं । निगोद जीव अपने दु र म पड़े हैं सिद्ध भगवान का आत्मा अमूर्त है गृह रहित है । सुद्धम निगोद म यह लार ठमाठम भरा है ।

५—सिद्ध भगवान के ८ मूलगुण—सम्यग्त्व—सषा परिलभन निसमे सम्यग्ज्ञान सम्यग्चारित्र व सुव्यगर्भित हैं । ज्ञान जानना व जल ज्ञान— दर्शन— केवल दर्शन ।

धीयवान्—अनन्त शक्तिमान । शेष ४ प्रति नीधी गुण है फिर लिखूंगा । प्रथा म भी दल लेवें ।

जयपुर,

४—६—४३

आ० शु० चि०

मनोहर

श्रीयुत मैया सुगरीरसिद्ध जी हेमचन्द जी योग्य घमर्द्धि ।

परच—आपका स्वास्थ्य व धर्मसाधन ठीक हो रहा ही होगा । यह शरीर फ सप्ताह मे मलेरिया का मित हो रहा था परन्तु आज मित्रता भग हो गई । अपने अनादि अनन्त अहेतुक ज्ञान स्वभाव

जि हृदय रमना यही सर्वोन्नति का मूल है— आपका पत्र आया था—आन की त्रिदि क धारे में कानिक कृष्णपत्त म लिख सऊ गा। परिवार को धर्मगृद्धि ।

जयपुर

आ० शु० चि०

२२-६-५३

मनोहर

卐

卐

卐

आनान्त ला० सुगरीरसिंह जी हेमचन्द्र जी मा० योग्यधर्मगृद्धि—

परंच—आपका पत्र आया, हमारा प्रोग्राम ता० ८-११-५३ परिवार को यहा मे चलने का हुआ है।

आपका मलरिया अथ शान्त होगया होगा। सर्वसमान को धर्मगृद्धि कहना।

समार मे सत्र स्थिनिया भाग्योदय मे होती हैं किन्तु आत्मीय मुख्य प्राप्ति निच ज्ञान पुरुषार्थ मे होती। मानवजीवन की सफलता ज्ञानमात्र अपने आपके पहिचान लेने में है।

जयपुर

आ० शु० चि०

२७-१०-५३

मनोहरवर्णी

卐

卐

卐

श्रीयुन भार्दे सुगरीरसिंह जी हेमचन्द्र जी चैन सराफ धर्मगृद्धि -

परंच आपका पत्र आया। आप अपने मनमे अणुमात्र भी धर्म न रमों कि मैं नाराज हू, हमारा प्रोग्राम वम समय गया जान था किन्तु कोहरमाजालोने १ हफता और मत्याग्रह करके ठहराया इससे गया नहीं जा सका था। अथ धमन्तपञ्चमी को गया जाना निश्चित अभी है। आप सर्व मपरिवार सजुशल धर्ममाधन करते रहें। स्वाध्यायमे अपना विशेष समय लगाना। सप्रमन्न रहना। ममारजी सन्ततिरे छेद करने का लक्ष्य न भूलना। आत्मा का सुग निचमे निचकी दृष्टिमें है। वाह्य परिकर पुण्यका रिपाक है आत्मा म नसका अणुमात्र भी कुद्ध सम्बन्ध नहीं।

वीनराग दृष्टि होने पर जो शेष राग होना है उसके निमित्त मे अपूर्व पुण्य स्वयं बंधना है। फिर भी उसपर दृष्टि नहीं होता कि यह हितरूप है। आत्मस्वभाव को देखकर हृदयकर अपना जीवन सान्द विनाश्ये। निरोध भगड़ा का कोई प्रसङ्ग आव तदस्थ रहना मोक्षिये। वही काम ठीक है जो आत्मा को शांति दें। हम आपके प्रति हितभावना है। आव स्वप्न मे भी यह मन विचारना कि कोई नाराजा है। पत्र तो वैसे ही न डाल सका, कुछ यह भी सोचा कि किम पते से इनको उत्तर के लिये लिखें सो दूसरी जगह पहुँचकर लिग्य दोगे फिर कुछ दर होगई तो फिर सोचा कि दूसरी जगह से टाल दोगे। किसी जगह चाहे ज्यादा रहना पड़ा किन्तु पहिले मे ज्यादा प्रोप्राम कहीका न था। इस बीचम १ पत्र देनेका मुझे ख्याल है कि दिया। शेष सर्व शुभ। आपके पत्र को देखकर मुझे दुःख हुआ कि मेरी जरा सी गफलत म आपको इतना विकल्पका कष्ट उठाना पड़ा। आप निश्चिन्त धर्म साधन करे। हमसब आनन्द हैं। पत्र गयाके पतेमे देना। म फररीको गया जाने का प्रोप्राम है। परिवार को दर्शनविशुद्धि। बन्धों को आशीर्वाद -

आ० शु० चि०

६-०-५४

सहजान

ॐ

ॐ

ॐ

श्रीमान् भाई नेमिचन्द्र जी—योग दर्शनविशुद्ध।

परच—आप सान्द धर्म साधन करते हूंगे माता जी को विशेष रूपसे धर्म साधनाका प्रोप्राम रखना कोई शास्त्र गुना दये।

माताजी को दर्शन विशुद्धि कहना और कहना—कि पर द्रव्यको अपना मानना ही दुःखकी जड़ है। सरसम्पन्न होचुके किसीसे ममता न करे। पच परसेष्टी के चित्तबनमें शारत्र सुननेम उपयाग लगाये १२ भावनाया का जुटा २ विचार करे। वेदना तो पूर्व कर्मके न्दय से होती है। आत्मा का स्वभाव दुःख नहीं है सो यदि वेदना म

कलेश नहीं करागी तब वह वेदना तो कर्मकी निर्जरा करेगी। जो अमाना कर्म तुम्हारे वश या वह खिर रहा है अच्छा है उम कर्म स शमी निष्ठ तो अभी समागम अच्छा है, तुम्हारे इस दुःखको धई घाट नहीं सकता इसीमे शिक्षालो कि मत्र अपने कपायसे कर्म करते और उमका फल पाने हैं। जगतका समग्र तो मिथ्या है, है कुछ किमोने पास रहनेका नहीं। केवल पाप पुण्य ही हाय लगता।

आ० शु० चि० एक मुमुक्षु

(श्रा पूज्य १०५ जु० मनोहरलाल वर्णी)

卐

卐

卐

श्रीमान् धमरीर भाई त्रिनेश्वर दास जी सात्र इच्छाकर।

भाई जी हम लोगोंके मनुष्य भय पानेकी सफलता तो इसही में है जो आत्मचया पर विशेष लक्ष्य हो। किसी आत्माना घनिष्ठ राग दुःख ही का कारण होता है। अयनतिका ही कारण होता है। समग्र छोड़नेके लिय हो। आप तो ज्ञानी हैं मैं समझा नहीं रहा हूँ आपकी बात दोहरा रहा हूँ। भेद विज्ञानकी भावना जितनी तिननी होती जाये वह तो है अपनी कमाई और शेष कार्यमें किसी मुग्धकी कृपा मिल या करोड़ों की सपदा मिले व चाहे पर्याययुद्धिकी मायामय दृष्टिमे प्रतिष्ठा मिले सारा धोखा है।

१-१-५२

आ० शु० चि०

मनोहर

卐

卐

卐

श्रीमान् भाई त्रिनेश्वर दास जी योग्य इच्छाकार।

भाईजी मसार धोखा व इद्राल है। आत्मा तो अनादिअनंत है। आत्मा अनमोल रत्न है। इसमें कीचड़ ममता व रागका लगा है। कतव्य तो होना ही है फल जो हो—चिन्ता तो हानको होनी ही है, की व्यपत्ता भले ही होजाये। संसारम

किमीना शरण नहीं। स्त्रा पुत्र परिवार मित्र क्या है? क्या कोई किमीने चाह सकता। सुदमी ही परिणति नृदम होना है। अमुक मेरा चाहने वाला है यह मायना भ्रमपूर्ण है। मैं भी आपका चाह नहीं करता क्योंकि मेरी चाह मेरेम अभिन्न है। आपकी परिणति आपम अभिन्न है यह मेरको कम लग सकता। मैं भी रागी। आप भी रागी। अपना अपनी चेष्टायें गोना। धन तो प्रगट पर अचेतन है, मरी ममता भ्रमपूर्ण है ही। अनानिम म डीय न परकी सनालरी अपनी ओर नष्टि नहीं की इतनी मलिनता जीय पर है। यदि आपन पर नष्टि फेरलो अपने स्वभाव का जानकर था अपना धरूमी पर रोने रोते कुछ पण व्यतीत हा सकता है। मेरा आपम यह फटना है आप इनती नटना रन्विय ममल पर धनु य चाह दिष्ट चाग भिन्न चागे कही जागे कुछ हाओ यह रंज भी मेरा परिपह नहीं, मैं ज्ञाना ही हूँ।

आ० शु० चि०

मनाहर

卐

卐

卐

श्रीमान् भाई ला० तिनैरर प्रमाद मात्र नृद्वार ।

विपत्ति होवाने कहने हैं—यदि हीरा फाई धातनिक चान हो ना विपत्ति भी कोई चान होगी मन्त्रय स्व-स्व के तंत्र रहकर परिणमन करते चले जा रहे हैं। किमी वस्तुने विषयमे मया विथागकी कहनायें विपत्ति नामकी जान रख रही है। आत्म स्वतन्त्राका रहस्य वा जानेराने आप लोगको कोईभी विपदा नहीं है। जगतम नाना परिणत वस्तुओंका सयाग वियाग रोहा-होनेदो-उमे कौन रोके—आत्मा ता योग वियोग के अनिरिक्त क्या करे। ससार मायामय है। आत्मस्वरूप पर लक्ष्य रन्विय—दुःख कुछ फिर है नहीं अपना जगत म है क्या।

आपका अनिच्छितकर किन्तु दिनचिन्तक मनोहर

शत्रुन भाई की सागर इन्द्राकार ।

परच—आपका धमसाधन भले प्रकार हो ही रहा होगा—
भैया ! अकुरालना है क्या ? आत्म-वृष्टि नहीं तो सर्वत्र अकुरालना ।
एक वृष्टि द्वितीयका सम्बन्ध ही नहीं, क्या आकुलता होगी ।
परन्तु हा आत्म-वृष्टि । सामानका अभाव अग्ररना, दूसरे अन्धी
वृष्टिमें न दग्गें तो यह भाव अस्वरना लौकिक वैभवम पडीसीसे
अधिक न हो तो यह स्थिति अस्वरना, भिन्न पर आत्मार्थों मे
वृद्धिराल स्नेह होना आदि किस पिशाचिनी की करनूत है ?
अनात्म-वृष्टि की ।

रामचन्द्र जी का भी धनमें जीवन गुजर गया, भरत भी
असमानके धन भी तो किसी स्थितिमें रहे ही । चारुत्तके क्या
परिचयन हुय ? हम लोगा को क्या किसीने घडे रहनेका अधिकार
जमानेका सवमे हाथ जुडानेका, विषय कपायोंको धनास्त्रभी मुश
हा धने रहनेका पट्टा लिख लिया है । एक कविने ठीक लिखा है
'शुद्धीन इव केसोपु मृत्युना धम भाचरेन्'

आ० शु० चि०
मनोहर



श्रीमान् धम घधु ला० विनेश्वर प्रसात् की—सादर इन्द्राकर ।

परच—आपका पत्र मिला—समीचार हात किय । मसार का
दुःख तब ही तक है जयन्त आत्माने अपना महान स्वभाव न
पिदाना—एक अपन आत्माके अनिक्ति कोईभी परमाणुमात्र
अपना नहीं वस अद्वाम आकुलताका आश्रय का द्वार नहीं मिलना
और आकुलता बाहर ही खड़ा रह कर तद्वत्कर मरतानी है,
विचय सहजान्त की होती है । सुग्य और दुःखका बुला लेना हमारा
मिटाका और धार्य हाथका गेल है । किस ही परिस्थितिमें कोई
दुःखरूप विकल्प किया कि दुःखका पहाड आगश और किननी

परद्वय परिणामात् रूप कल्पितप्रपत्ति आदौ हो अपनेको स्वतंत्र
 रूप देनेके लिये भारत प्रत्येक चैतन्यरूपको अलोक्य
 कि मुधासमुद्रम अग्राह कर अमर होगया । किसी परद्वय का
 मेरे विचार ने अनुकूल परिणाम नहीं होना तब परद्वय पर तो अपना
 वश ही क्या ? अपने चित्तको मारा तो प्राञ्छनीय परिणाम में तो
 किन्तना उ चा परिणाम होगया है । तो धात करने लिजनेम धानी
 है पर अशक्य है, कही हो, अपना ही धात है कोरा उपचार नहीं,
 अनक पात्मात्मान आत्मसिद्ध की वे जन्मते ही या पहिलेमें हा
 तुल्य या पास नहीं ये तो जन्म ही ऐसा होना था और हम ऐसा
 हो रहता है । अपना कर्तव्य है आत्मास्वरूप को लक्ष्य में रखना,
 अन्तिम शुद्धशाका आदर्श रखना, समागमम पडे हैं तब अपना
 कर्तव्य निभाना और निम समागम म हो उमे तात्पर्य कल्याणकी
 धात सुनाकर सुष्टकर उस व्यवहार के निमित्तमे अपना अन्त पथ
 निरूपक धनाना—आररय विज्ञ हैं मैं क्या लिखू ।

आ० शु० चि०

मनोहर

卐

卐

卐

श्रीमान भाई ला० चिनेश्वर प्रसाद जा सखेद्व इच्छाकार ।

परच—आप धर्मसाधन साधद हो रहा होगा—भेदविज्ञानकी
 सभ्यास ही सुख शान्तिना मूल है । किसी भी विषयम किन्तना ध
 ज्ञान पर भी विवेक इसी सामा पर विश्राम पाते हैं ।

भैया ! धात सत्य यही है जो सब को रतनता व एनाकिना
 किस प्रार्थने साथ बुद्ध भी तात्पर्य सम्बन्ध नहीं । जो प्रीति
 आश्रय हैं व ही अपने धर्ममे अपने अहितम निमित्त है, पर
 धर्मकाल म ऐसा व्यव घोष नहीं होता है और धनुष्योंमें समता
 धनी रहती है । आपका साहस सराहनीय है जो गेही पर गृह म
 न रहे व्यो जल में भिन्न कमल है । इसको चरिताथ कर रहे हैं ।

यदा धान अपने परिवार म भर दीजिये । अथ आगे मनान न होना
त्रयव्यसालन आपकी निवृत्ति का परम साधक होगा । वस्तुत तो
नाम हा साधक है परन्तु व्यवहार का अलमन न रहना भी निमित्त
है । मन्त्र हमारा प्रथम मे है ।

आ० शु० चि०

मनाहर

卐

卐

卐

आनाम भाइ मित्रसेन नाहरसिंह जी योग्य दशनप्रशुद्धि—

परच आप सध सपरिवार सानद होंगे, धमसाधन पूर्ववन् हा
हो रहा होगा । यदा मे-ना मुना गया जो अग्नि लगनेने दुकानम
नुकसान होगया । यदि ऐसी घान है तथ भी आप बुद्ध शौर न कर
क्योंकि जात्रके शुभ परिणामने न्यार्पित पुण्य का ही फल धनवैभय
है अत्र धनवैभय का कारण शुभ परिणाम ही है अमना घान नहीं
हाना चाहिये और साथ ही धीतराग मसारमाया मे रहिन सहन
स्वरूप शुद्ध आत्मा का आश ही दिनकारी मानता चाहिये । आप
नो ज्ञानमय हैं आपका कुछ नुकसान नहीं हुआ रहा विभय संयोग
सा पुण्यका उदय है तत्र शीघ्र ही पूर्ण हो जायगी अथवा एन
निम्नलॉम भी क्या ? अपना धर्माराधन करते हुए आत्मस्वरूप
चिन्तन करने हुए जगत्तरी मायाका दृश्य निरपेक्ष शुद्धिम दप्तने
हूण मानवतम साधक करें । यद्यपि आपको बुद्ध भी चिन्ता न
होगी और इसीलिये मेरे अस लिग्नके आशय को विचार बुद्ध
हंसंगे भी लेकिन अन्ध है — मैं तो यही चाहता हू जो आप
निराकुल रहें । सीमवर जी मूलचन्द्र जी आदि को अगनप्रशुद्धि ।

५—५०

आपका हित चि नत्र

मनोहर

卐

卐

卐

श्रीगुरुभ्यो नमः नैव ममानयस्य श्छामि एव अशनप्रशुद्धि

परच—आप सयभा अनेक हम्नासुरपुत्रित पत्र आया। यहा मठ जी का व समान का बहुत अशुभ हो रहा है। मुझे यहाँ जाना कठिन मानूँ होना है इसलिये अब मैं क्या लिगूँ। दहराइनराला को भा मशायमय उत्तर देना पड़ा है। तैन ममात्र मेरठ का भी तयारी नार पड़ा हुआ है।

भाई ना वस्तुन प्रत्यक्ष निमित्ता की उदरियति म भी मारा प्रयत्न मुमुक्षुय अन्तर्गम हो होता है। आप मय अपने ही उदयार्थ फ फलमे शाररन मुख का माग पालगे। आरकी जा मेरा मुझमे होगी तय तय निर्निक्लर दशा न हो तय तय प्रयत्नशील हूगा—रही संयोग की घान यह मेर ही आधीन नहीं मो आप दर ही रहे हैं। इन्द्रा तो मेरे आधीन है पर जमकी पूर्ण भविष्यकी पर्यायक आधीन है—आप मय भाइया का धर्मशात्मन्व्य बहुत ही साराहने, व है, आशा है जो आपका होता रहा प्रम म्म शरीर को मुक्तकरनगर के क्षेत्र का ररर करन म निमित्त होगा।

भाइ जी! मुख शानि स आर लपालथ पूर्ण हो रभाय को दगें। अनित्य और पराधीन पाय पर्याया की आजा म यह भगवात तका हुआ है। एक मोह गला कि सय विपदा दूर हुई क्योंकि विपदा सब ररन ही हैं और हमी तरह संमारमुग्र जोकि विपदा ही है ररन ही है—अपने चेतो नया कदम उठाओ आप आत्मा इनने ही नहीं जितने ममय मजुष्य रहना है। अनादि निघन हैं। योग्य काय लिखना।

इन्ौर

आ० शु० वि०

२४—६—५०

मनोहरधर्णी

卐

卐

卐

श्रीयुन भाइ जुगमन्तरदास दास की रमेशचन्द्र जी—

योग्य नशनिशुद्धि -

परच—आपका पत्र आया—मेरा स्वास्थ्य अच्छा है, बालनोड

को भी पूरा आराम है। शास्त्राध्याय का ध्यान भोजन के समान हा होना बल्कि भोजन से भी अधिक होना होग्य है।

आपक स्वाध्याय की गति प्रशस्तनीय है—परमात्मप्रकाश का आर स्वाध्याय कर रहे हैं उमम टीका में लत्र चाम्य हैं तथा हर पल तुल्ल ही मुकाबले के साथ बनाई गई जैसे सिद्ध मुत्त कहा नो वही मसार टुम्ब घनाउर ससार टुम्ब में रिपरीत, तष दोना मुकाबला पर तुलना करते हुय पटना चाहिय।

असैनी पञ्चेन्द्रिय अपयात्रमे जा गुणस्थान एक मतमे क् न्महा यह भार है कि कोई सैनी पञ्चेन्द्रिये मरनेके समयम स्यक्त्त दूट जाय और दूसरा गुणस्थान प्रारम्भ ही हा और उसका मरण हाकर वह जीव असैनी पञ्चेन्द्रियम जन्मके तो असैनी पञ्चेन्द्रिये अपयात्र अस्थामे कुछ समय तर दूसरा गुणस्थान खना। इसी तरह प्वेन्द्रिय द्वान्द्रिय चतुरिन्द्रियके अपयात्र अस्थामे भी दूसरा गुणस्थान सभर है। परन्तु ऐसा वह सैनी पञ्चेन्द्रिय जीव जो दूसरा गुणस्थान लगतेही मरण करता यह तेनकायिक और वायुकायिक नहीं होता इसलिये तेनकायिक व वायुकायिक व अपयात्र अस्थामे नो गुणस्थान सभर नहीं होता।

दूसरा गुणस्थान चौद म गिर कर ही होता है। इन्द्रभजन, तुष्ठीगन।

इन्दौर

आ० शु० चि०
मनोहर

卐

卐

卐

श्रीमाइ जुगमदरदास जी—

मंसार आपत्तिया का स्थान है, निराकुलता की यदि कोई स्थिति है तो यह ही है जो मरचे ज्ञान का उपयोग करके रागद्वेष मोह से रहित आत्मा को बनाया जाय— किमी भी वस्तु को अपनी नही न माना तबभा अपनी नहीं। अपनी

तबभी पुण्यके उच्च तर साथ है अपनी न मानो तब पुण्यके उच्चतम साथ ही है। मन्ना ज्ञान मुख का मूल है अपनी आत्मा की सत्ता आत्मा से नहीं विद्युडर्ती। आत्मा का निर्मल रखने का प्रयत्न ज्ञान का फल है - आपकी प्रकृति मोक्षमार्ग के अनुकूल है एक राध्याय पर विशेष लक्ष्य रमियगा।

आ० शु० चि०
मनोहर -

卐

卐

卐

श्रीमान् भाई ला० जुगमन्तरदास रमेशचन्द्र जी—योग्य दर्शनविशुद्धि—
जगत्तम प्राणीन अनन्तघार वैभवा और राज्य पाया पर आत्मज्ञान जो बुद्ध ही में है आप न दखा, आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिये कुछ लक्ष भी नहीं और न परिश्रम ही करना होना केवल वास्तविकता ज्ञानन का उत्साह होना चाहिये। सुख निवृत्ति न है सधम धसना हुआ भी यदि अपना आपकी आत्मरूप के कारण अरुता ही समझें तो उसकी आकुलताय मध समाप्त हो जायें। रत्नकरण्ड श्रावकाचार उत्तम ग्रन्थ है उसकी आप राध्याय कर रहे हैं अन्तः है—उमम जो धान समझम न आवे उसे आप किसी ज्ञाना से पूछ लिया करें, व्येक्षा न कर, या पत्र द्वारा पूछ लिया करें।
काधला

आ० शु० चि०
मनोहरवर्मा

卐

卐

卐

श्रीमान् भाई ला० जुगमन्तरदास जी—योग्य दर्शनविशुद्धि—
धनसाधन प्रतिसमय की चीज है केवल मन्दिरकी ही नहीं। वह किम प्रकार कि हर गच्छ हर स्थिति में आत्मा का और जगत् का सत्यस्वरूप लक्ष्य न रखकर अपनी और भुक्ता और कर्णों में दूर रहने की साहचिकता होना मो धर्म का पालन है। दुकान पर बैठकर भी वह भाव चिमका रहे कि "मैं तो ज्ञानमात्र हूँ, महाप्रव

द्रव्यकर्म तो ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र, अन्तराय इन आठ कर्मों को कहते हैं, ये पुद्गल द्रव्य हैं। निज वगणाश्रया कर्मरूप परिणामन होना है ये कार्माण्यगनायें हैं। रागद्वेष मिथ्यात्व आदि विभाव जो कर्म के उदये आत्मा में प्रकट होते हैं व भावकर्म कहलते हैं। नोकर्म शरीर के कहते हैं। जिस जीव ने जिस शरीर में वास किया हो यह शरीर उस जीव का नोकर्म है।

शीलमदल, १-११
११-८-४२

आ० शु० वि०
मनोहर वर्णा



श्रीमान् भाई ला० जुगम-दरदास जी दर्शन विशुद्धि—

परच—आपका धर्म साधन सानन् होना होगा—आपके पत्र द्वारा घृत्त अरगत निय मनुष्य जन्म की सफलता आत्मदान से है, आत्माकी यात्रा मनुष्यभय चितनी ही नहीं। आत्मा तो अनादि से है और अत नशाल तत्र रहेगा, निरत्र वैभव भी अपनी सत्ता से है परंतु है सत्र स्वतंत्र, आत्मा का साथी आत्मा का भाय है, अत्र आत्मज्ञान की दृढता के लिये स्वाध्याय को भोजन की तरह क्या भोजन से भी अधिक आवश्यक समझिय।

शिमला

आ० शु० वि०
मनोहर वर्णा

१३-४-४२



श्रीमान् भाई जुगम-दरदास जी योग्य दर्शन विशुद्धि । ।

परच—आपका पत्र आया समाचार जाने—आपका धर्मसाधन भले प्रकार होना ही होगा। भैया। मनुष्यभय जाने का फल यह है जो शांति का सच्चा माग पा जाना वाच्य वैभव पुण्य का फल है—इस वैभव से आत्मार्थो सत्य धात नहीं मिलनी इसलिये इनना उरर अपना चित्त धनाले वैभव आने या न आने उसकी कोई अपर

नहीं भाग्य के अनुरूप तो आना ही, चित्तका स्वर्च नरर वैभरके
लिय क्यों किया जाये । शान्ति गुण ही के पास है खुदही में मिलती
है, साक व्यवहार निरता कम होगा उतनी ही शान्ति होगी ।

आ० शु० चि०

मनोहर

卐

卐

卐

श्रीमान् ला० जुगमन्दास जी रमेश जी योग्य दर्शनविशुद्धि ।

परंच—आपका पत्र आया — क्रियारान इत्य २ हैं एक जीव
दूसरा पुद्गल + इन दोनोंके मेलका ठाठ यह है सारा जगत है जो
माया स्वरूप है—आत्माका वैभर आत्मज्ञान है, किसी भी
परिस्थिति म हर्ष विषाद न करना ही बुद्धिमत्ता है । अलौकिक
और अमूल्य जो वैभर है वह आत्मान् आत्माके पास है उसे न
कैइ छीनना न हर सकता है । जो छीनी जा सकती हो वह आत्मा
की विभूति नहीं । जीवने अनेक जन्म धारणकिय पर उत्तम कुल
धर्म पहा प्राप्त हो ऐसा मनुष्य जन्म न पाया था—अब जो हम
सब आपने पाया उसकी सफलता मिथ्यात्व हटाने में है धार्मिक
परिणाम आत्माके साथी हैं । राग द्वेष तथा जित पर्यायम पहुँचे
उसीम आत्मीयताका भाव यह ही संसार व दुःख है—अपने
एकाकी आत्मरामके स्वरूप पर दृष्टि दो, शान्ति उसीम है ।

आ० शु० चि०

मनोहर

卐

卐

卐

श्री भाई ला० जुगमन्दास जी रमेशचन्द्र जी योग्य दर्शनविशुद्धि

परंच - आप सषका धर्मसाधना ठीक चलरहा होगा स्वाध्याय
ज्ञानका मुख्य साधन है । स्वाध्याय ही आजकल गुरु है, सच्चा
मार्ग मित्र है । आप हम सब आत्मज्ञान सुखके
श्री असार चीजोंके लोभसे यह

रहा है। अपने आत्माके ज्ञानके धराधर बोझ धैर्य नदी—अतः
 आध्यात्मके भोजनमें भी महत्वशाली समझो।

अपना आत्मा अनादि निधन ज्ञान मुक्तपूर्ण है—ज्ञाना दृष्टा
 स्वतन्त्रतासं भिन्न है इसके अनुभवका प्रयत्न जरूर करना। आत्मानु
 भव मार है। शेष सब क्षणिक व्यापार हैं।

इन्द्रभवन, तुमोगव

आ० शु० चि०

इन्दौर

मनोहरवर्षी

卐

卐

卐

श्रीमान भाई ला० जुगमदरदास जी रमेशचन्द्रजी योग्य इरानविशुद्धि
 परच—अपका पत्र प्राप्त हुआ—आध्यात्मविकासमें प्रवेश करने
 के लिये निम्नलिखित धर्माओंको समझलेना जरूरी है --

(१) उपादान-निमित्त। (२) जीव किसका कर्ता और किसका
 भोक्ता है। (३) आत्माका सहज स्वभाव व वैभाविक परिणाम।

१—अपादान यह ही धस्तु होती है जिसमें कार्य कहो या
 पयाय कहो याने अवस्था प्रगट होती। निमित्त वाकी सभी पदार्थ
 हैं जो अवस्था होनेके समय मौजूद हो और जिनकेबिना अवस्था
 नहीं होती जैसे जीवम रागद्वेष मोहादिके विकार होते हैं वहा
 उपादान तो कल्पित भावनाला जीव ही है और निमित्त कर्मका
 उदय तथा शरीर, मकान, पुत्र स्त्री, कुटुम्ब-आदि हैं।

२—जीव अपने परिणामका ही कर्ता है और परिणामका ही
 भोक्ता है, अयस्तु अन्यस्तुकी अवस्थाका कर्ता भोक्ता नहीं होता

३—आत्माका सहज स्वभाव है सवगुणाका शुद्ध परिणामन-
 चैमे शुद्ध ज्ञान, रत्नत्रय परिणामन धीतरागता आदि। आत्माका
 वैभाविक भाव है जो कर्मके उदय निमित्तसे होता है जैसे राग
 द्वेष आदि विभाव परिणामन सर्वथा नष्ट किया जा सकता है क्यों
 कि वह निमित्ताधीन है स्वाधीन नहीं है।

दल्लिनापुर

आ० शु० चि०
मनोहररणी

ॐ

ॐ

ॐ

श्रीसुत भाई ला० जुगमहरदास जी रमेशचन्द्रजी योग्य र्गनशुद्धि ।

परंच—आपका पत्र आया एक निच आत्माके सिराय अन्य सत्रपदार्थ और आत्माकी शुद्ध अरस्थाके सिराय सध अरथायें बुद्धभी आत्माके हितके अथ नहीं । लोकम घडे न घने तो इतना ही होगाकि लोक न जानेगा परन्तु घडे घननेक अर्थ जो मरुत्य विकल्प का मरुमार घनाया जाता तो इसका फल लोक नहीं भोगता लोकक जानने न जाननेमे आत्माका लाभहानि नहीं, यह धान घनी निर्बन पडित त्यागी सबके करनेकी है । धानकल प्राय लोग घना घनना चाहते हैं, घडे कहलाने लिये, ऊ ची सर्विस चाहते हैं, घडे कहलानेके लिये, किन्तु लाभ निस घान म है उसपर दृष्टि नहीं देते । लाभकी चीज है आत्मज्ञान । जो मनुष्य आत्मज्ञानी घनकर साग रहन सडन भोजनपात नियत व्यापार धार्मिक धनव्य करता हुआ अपना समय व्यतीत करे उससे घड़ा हम और किसी गृहस्थ का नहीं समझने ।

स्वाध्यायम १ घटा नियमपूर्वक समय लगावो ।

भाई रमेशचन्द्र जी ! आप अपना धर्म अध्ययन ठीक कर रहे हैं । जब तक छुट्टिया हैं कम से कम २ घारम १-१ घटा समय अवसर स्वाध्यायमें दें । शकाओके समाधान इस प्रकार हैं ।

१-मिश्रगुणस्थानम—जो ज्ञान होतहैं उन्हे न तो पूरी तीरसे सम्यग्ज्ञान कहते और न पूरी तीरसे मिथ्याज्ञान कहते फिर भी सम्यक्त्वकी ओर दृष्टि मुख्यनी है इसलिय तीसरे गुणस्थानमे कही अरधिज्ञान कहते हैं । कहीं नहीं भी कहते हैं । जब अरधिज्ञान की निबन्धा हो तत्र अरधि दर्शन भी होता है । परन्तु यह ध्यान रिराध अरुद्धा है जा मिश्रगुणस्थान म अरधिरिज्ञान न कहा जावे

चाकि उस गुणस्थानम न तो मिथ्याज्ञान ही बहुत न मन्व्यज्ञान ही होने हैं अतः ३ मिथ्याज्ञान माने गये हैं ।

२—चलुदर्शनम—जीव समाप्त स्स प्रकार ३ हैं—

(१) चतुरिन्द्रिय, (२) असेती पञ्चेन्द्रिय, (३) सैतीपञ्चेन्द्रिय धर्माध्ययन न रुचिपूर्वक समय दये ।

शिमला

आ० शु० चि०
मनोहर

卐

卐

卐

श्रीमान् भाई लक्ष्मीचन्द्र जा जैन योग्य दर्शनशिष्टि ।

परच—आपका पत्र आया समाचार जाने—आपका स्याम् अथ अन्द्रा होगा—समाचार दना—संसारका जा भी अर्थ दिताना है यह सब विनाशिक पय,य है आत्मने हितम्प बुद्ध भी नहीं, इस आत्माने अनादिसे सबहुड पाया परन्तु अपने आपकी ठीक पहिचान अथ तत्र न पाई, भैया । समस्त संसारक पुद्गलाका भी डेर प्राप्त होजाय तबभी उस सुगरी दरापरी नहीं कर सकता जो यथायज्ञान द्वारा सपस उपयोग हटारर अपनी ममकर्म सुख प्राप्त होता ।

संसारके प्राय, सभी प्राणी सभी मनुष्य घड़ी तबसे जड़ पत्थरके समद रक्षा आन्विके लिये दौड़ धूप मचा रहे हैं पर हम आपकी धनकी नकल करनेकी जदरत नहीं, वे भी मरेंगे हमभी मरेंगे धाने शरीर छोड़कर चलेजावेंगे फिर मिला क्या, आत्माकी दधिरताके समान और बुद्ध धन नहीं कोई मुरत नहीं, अतः जगत् के ठाठको धोखा समझरर इनमे रुचि न करना तथा अपने विषय व क्रोध, मान, माया, लोभको भी अपना न मानना क्याकि य सत्त नहीं रहते, आत्माका स्वभाव नहीं । तो भी जयतक आत्मामे रहते हैं पागल घना दता है तथा व्याकुल कर दता है इसलिय विषय कषाय का त्याग करना व संयम धारण ही परम कर्तव्य है ।

आपन जो मेरे स्वास्थ्य के ठीक कर लेने के विषय में सम्मति न उसे मैं मानूँगा ऐसा मेरा विचार है। अथ तब भी तो आपकी काइ बात नहीं टाली अथवा मैंने रागवश आपकी घात के निमित्त अपनी चेष्टा आपके भावके अनुकूल की क्योंकि किन्नी की घात कोई न मान सकता न टाल सकता यह सब मोहका व्यवहार है। सैर व्यवहार ही सही परन्तु हमारे व आप लोगों के जो परस्पर व्यवहार हैं वे उत्तमि में कुछ न कुछ सहायक निमित्त हैं, हानि कुछ नहीं, धर्मवात्सल्य ही इसका कारण है।

सर्वमण्डली को दर्शनविशुद्धि कहिये।

क़राना

आ० शु० चि०

१५-६-५०

मनोहर

卐

卐

卐

श्री माई ला० विमलप्रसाद जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका पत्र मिला—संसार का स्वरूप ऐसा ही है जो किन्नी भी परद्रव्य के सम्बन्ध में ऐसा सोचा जाय कि अमुक कार्य का पूरा करके धर्मध्यान करूँ तो निश्चिन्ता नहीं होती। मनुष्य जन्म पड़ा दुर्लभ है। बुद्धि के विनास का अवसर मनुष्यजन्म में ही प्राप्त होता है—अतः मैं और कुछ विशेष नहीं कहता जो आत्म कीर्तन में लिखा है उसी पर ही विचार कर लेना—आपके स्वास्थ्य का अस्वस्थ होने का समाचार जाना सो योग्य उपचार करना एवं शरीरमें भिन्न आत्मा की अनुभूति रूप औपधि भी करना—घर में स्वास्थ्य ठीक होगा। हमारा चातुमास इन्दौर ही होगा। आत्मज्ञान आत्मस्थिरता से संसारके सब स्रष्टा की होली हो जाती है—अपनी पहिचान बिना आत्मा अनाथ है—धन परिवार कुछ भी इसे सहाय नहीं है—संसार असार व अनित्य है—अतः मैया पर्याय बुद्धि हटाकर निजबुद्धिमें भी कुछ समय धिनाएँ—मनुष्यभर धार धार नहीं मिलता

त्रि० जैन मन्त्रि नशिया
मल्हारगन, इन्ौर
१२-९-५०

आ० शु० चि०
मनोहर वर्णा

ॐ

ॐ

ॐ

श्रीमान भाई ला० विमलप्रसाद जी योग्य दशनत्रिशुद्धि—

परंच—आपका स्वाध्याय ठीक हो रहा होगा— तदनन्तर मेरा स्वास्थ्य ठीक है— आपका व आपकी धमपत्नी का स्वास्थ्य ठीक होगा, स्वाध्याय सामायिक प्रनिश्चि होना ही होगा, आत्मा ससार में अकेला ही है क्यकि कोई पदार्थ किमी पदार्थ में तमय होकर परिणमन कर ही नहीं सजता ऐसा वस्तु स्वभाव है। तब वस्तु स्वभाव को मानकर उसके अनुकूल अपने को घनाकर अर्थात् आत्मा को ज्ञाता द्रष्टा घनाकर अपूर्व गानि का अनुभव करना लोकोत्तम कार्य है। आत्मदृष्टि में ही पूर्ण सतोष आना, वृत्तवृत्त्यता आजाती, बाह्य वृष्णा में न सतोष का असर है न कार्य ही पूर्ण होते। लोग ना कमबद्ध होने से प्रवृत्त्या भौतिक पदार्थ व समझ की ओर मुड़े हैं। लोगकी प्रवृत्ति में अपने सत्य का निर्णय नहीं होता। केवल आत्मदृष्टि से अपने पथका अनुसरण होता। यह आत्मदृष्टि मेद विज्ञान में प्राप्त होती। मेदविमान स्वाध्याय और भावनासे प्राप्त हो सकता अत स्वाध्याय सामायिक को घटाना अच्छी धान होगी। विशेष क्या लिखू आप स्वयं प्रनिभासम्पन्न है। सर्व मण्डली को दशनत्रिशुद्धि कहिये।

काधला

आ० शु० चि०
मनोहरवर्णा

ॐ

ॐ

ॐ

श्रीमान भाई विमलप्रसाद जी योग्य दशनत्रिशुद्धि—

परंच—आपका पत्र आया। श्री म० सुमेरचन्द जी भगन अभी तक तो यहा नहीं आया। सम्भव है दहली या अन्यत्र हा।

ससार म शरणाभूत यदि कुछ है ता निर्मोहता— किसी का कही कुछ भो नहीं है, मर आत्मा अपने अपने म परिणामन करते पा रहे हैं, इम यथार्थता का पना न लगता सवन घड़ी रिपत्ति है इम यथाथता का अनुभव म उत्तर जाना सवसे घड़ी सपत्ति है। वाह्यपदार्थ ता छूने को ही है, किसी तरह छूटो।

श्री ला० किशोरीलाल जी वहा आय थे। उनमे मालूम हुआ कि आपकी गृहिणी कुछ घोमार हं, उनको दर्शनविशुद्धि कहना और कहना कि वाह्य इलान तो वाह्य है ही, सवसे घड़ी चिकित्सा है सनना। दोनों समय पञ्चपरमेष्ठोका ध्यान करो, सामायिक करो अपना स्वभाव विचारो। जो उन्मय म आता उमे सहना ही है शांति से सहो तो घरके लोग भी व्याकुल न होंगे और आपन निर्जरा होगी।

आपके पितानी को दर्शनविशुद्धि आप मरसम्पन्न हैं अथवा आपका यहा है भी क्या। आपका क्या किसी का भी है क्या? अन्नरग म ममता न रकरो, कर्तव्य करना और धात है तथा गृहता और धान है। प्रतिदिन सामयिक स्वाध्याय करिये। श्री १०५ सु० त्रिनानन्द जी हो ता दृच्छाकार कहना। समाचार दना।

पटारा

आ० शु० चि०
मनोहर

卐

卐

卐

श्री भोई विमलप्रभा जी वाग्य दर्शनविशुद्धि—

पं०—आपका पत्र आया समाचार जाने। आप अपने घर पर भी प्रात शीघ्र उठकर १ घटा स्वाध्याय करने का अभ्यास कीजिये।

यदि उचित समझें तो के मदिगों मे जहा स्वाध्याय को ग्रन्थ नहीं है ३।
माला के सैट भिजवा दें या जो

साहब समझें

सयमे दुर्लभ वस्तु है रागद्वेष न करके अपनी प्रकृति का स्वाद लेना, शरीर अनन्त पाये, यैभन अनन्तवार पाये, परिवार अनन्त पाये, कुटुम्बी आत्मानो शरण्य नहीं हुआ बलिन आत्माको दुर्भी बनाने आहुलिन बनान म सय सहारी हुआ । मूर्छो आत्मा का घान करन वाली वस्तु है । जैम लोग कहत हैं कि अमेजो ने हंसा हसा के लूटा, चारित्र गिराया, यद् सय तो कल्पना ही है । यास्व्य में मूर्छो ने हम सयको घरघाद् किया । अकेलेपन में अनन्त आनन्द है इमकी रुचि नहीं रखना चाहता मोही प्राणी, परके लिये मरा जाता है परन्तु पर अपना कुछ होना नहीं । मैं भी यह पत्र लिख रहा हूँ इसनाभी कारण स्नेह है परन्तु मोहियाका जैसा परिवार म है वैसा नहीं । आपना पत्र आया, आपको धार्मिक जानकर स्नेह हुआ, परन्तु इतनी आहुलता नहीं जा आप मेरी घात मानें ही माने । हा भायना जरूर ऐसी है जो कभा १ मिनट भी क्या १ सेकिण्ड भी रागद्वेष न करके आत्मप्रकृति का स्वाद ले लें । जो घान मुके रुच गइ यह आपको भी हो जाय स्नेहमे ऐसी ही कल्पना होनी है । इम घान को पान के लिय पहिले मामाधिक आदि म तिस तिस पर राग हो उसकी अमात्ता विचारें, फिर अपने राग परिणाम की असारता विचार, फिर कुछ सोचना बन्दकर आराम से रह जाय । ऐसे अभ्यास म आप कोई ऐसा स्वाद पावेंगे जो शान्ति सुखका सच्चा उपाय है । यह पैरामाफ सयको मुना दना जो स्वाध्यायम आते ह । शेष सय कुरानना है ।

इटावा

आ० शु० चि०
मनोहर

ॐ

ॐ

ॐ

श्री भाइ विमलप्रसाद जी—योग्य दर्शनविशुद्धि—

परब्रह्म—आपका धमध्यान सफुराल हो रहा होगा—अतादि निधन स्वकीय आत्मा के ससार दृश्य से हटने के लक्ष्य म भो

चिन्तन कभी कभी होता होगा—ससार तो मेला है। रखने
 दिनका विचार व प्रयोग होने में कुशलता है—मेरा स्वास्थ्य ठीक है
 आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। आत्महित तो हर अस्थानमें किया जा
 सकता, परवस्तुका परिणामन धाधन नहीं हो सकता। हम ही रख
 अपनी कल्पनायें करते रहते हैं तब घनाइये परपाथक रहा या निनरी
 कल्पनायें। ससार में आत्मा अनंत हैं, सब समान हैं, अपने से
 सब जुड़ हैं, परिहार में दिनका समागम होता वे भी लतने ही जुड़
 हैं निनने कि मनिहृण दूसरे लाग। जिस नष्टिम अपना माना जाता
 वह तो भ्रमशा है। आत्मा के महान् भवितव्य का उदय वह है
 वा आत्मज्ञोनि की पहिचान होकर उसा में स्थिरता हो। आन
 निनकी स्तुत्य हैं क्या लिखें, हम लिखना भी क्या था, पर पर
 ना था तब क्या लिखें, खाली भेचना भी तो कापायने न चाहा।
 आपका सत्य कल्याण हो यही मेरी भावना है।

३ अगस्त सन् १९५१

आ० शु० चिं०
मनोहर



आ भाई निमलप्रसाद की योग्य दशनविशुद्धि—

परंच—आप प्रसन्न होंगे। आपका समाचार पर नहीं आया मो
 दना। अपनी गृहिणी के स्वास्थ्य से आप निराकुल होंगे, समाचार
 दना।

आत्मा अकेला है। आप भी अकेले ही हैं। सारा सम्बन्ध
 मायारूप है—तत्पन कोई किसी का नहीं। हम भी केवल रागकी
 चेष्टाकर आपको पूर्ति का आश्रय घना रह हैं। उम अकेले आप
 आत्मा की खबर रखना। कोई माथा नहीं होगा। आपकी उपार्जन
 की हुई निर्मलता काम आयेगी।

३१ जनवरी सन् १९५१

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

श्रीयुत ला० चेतनलाल जी योग्य दर्शनमिशुद्धि—

परच—आप सकुशल धर्मसाधन कर रहे होंगे। मनोहर को श्री २० दिन से चौथिया या तिजारी ज्वर था। अथ शांत सा मालूम होना है। इसकी घारी चतुर्दशीको थी। उस दिन उपवास था। उस दिन पाया नहीं थी। शायद अथ न आने।

शास्त्र सभा आपकी होती ही होगी। जिस किसी भी प्रकार प्रति एक यहही दृष्टि बन जाये कि मैं आत्मा स्वतंत्र अविनाशी अपनेसे अपनेमें परिणमने वाला हूँ, कोई भी आत्मा मेरा न विरोधक है और न विरोधक हो सकता है इस विचारसे किसी आत्माके प्रति वैर विरोधका भाव न उठे तो धृष्ट बुद्ध पा लिया।

जगत भ्रमरर है। कोई किसीका साथी नहीं। विचित्र यात्रा है। यात्रामें भ्रम करने वाले इतस्तत यात्रा ही करते रहते। भ्रम न करने वाले अपने पन्म पहुँचकर विश्राम पालेते हैं। आप सदाका कल्याण हो।

श्री ला० विमलप्रसाद जीको दर्शनमिशुद्धि। स्वाध्याय सभाम आते हंगे या प्राइवेट ही शास्त्र पन्ते होंगे।

मेरठ शहर

१२—१—५२

आ० शु० चि०

मनोहर

卐

卐

卐

श्रीमान भाई ला० चेतनलाल जी, ला० किशोरीलालजी, ला० विमलप्रसाद जी, ला० जिनेरवरवास्त्री, ला० लच्छीराम जी, ला० समन्दरलाल जी, ला० वामुदयप्रसादजी आदि सब बहुगण्य योग्य दरानमिशुद्धि—

परच—आप सर्व सकुशल धर्मसाधन करते होंगे। धम मिथ्यात्व, क्रोध, मान, माया, लोभको दूर कर देना है क्योंकि इसीम शान्ति है। इस योग्य अपने विचार बनानेका प्रयत्न करना व्यग्रहार धर्म है।

जीवन सृष्टिक है। फिर क्या हो ? कैसे तत्व जाननेका उपाय मिले ! अभी तो सर्व योग्यता है। सम्यग्दर्शन भावको दृढ रखनेका अभ्यस करना। यदि विशेष क्रममें नहीं पडता तो सम्यग्दर्शनके घाठ अंग कहे हैं इनको अमलमें लाने का प्रयत्न करना। ये अङ्ग धीरे धीरे हैं उनका क्या स्वरूप है ! आप अपने रसायानमें चर्चा कर लीजिये और आठों पर क्या अमल किया रोज का हिसाब रखिये। भाई मूलचन्द्रजीको दर्शनविशुद्धि—
 ध्यान अर्थप्रकाशिका को जरूर अलोकन करे।

आ० हितचिन्तक
 मनोहर

卐

卐

卐

श्रीमान भाइ ला० चेतनलाल जी, ला० विश्वोरीलाल जी, ला० विमलप्रसाद जी, ला० समन्दरलाल जी, भैया मूलचन्द्र जी आदि ध्याय दर्शनविशुद्धि—

परच—आप सर्व सान्द धर्म साधन करते ही होगे। मैं ध्यान मुझ सत्तर मेरठ आ गया हू। मेरे इस समय सिर दर्द है। विशेष कृद्ध नहीं लिखता। मेरा तो यह कहना है जो इस छंद पर अमल हो।

“पुण्यपाप फलमाहि हरप मिलरगे मत भाई।
 यह पुद्गल पयाय छपनि तिनसै फिर थाई ॥
 लाख घात की घात यही निश्चय कर लावो।
 नोइ सकल जग दद पद निव आत्म ध्यावो ॥”

आ० शु० चि०
 मनोहर

卐

卐

卐

श्रीशुन ह्यानगोष्ठीके सम्भरण श्री ला० चेतनलाल जी आदि योग्य दर्शनविशुद्धि—

परच—आपका पत्र आया। जगतम त्विन द्रव्य हैं वे सत्र स्वतंत्र हैं, स्वयं सत्तावाले हैं, परस्पर भिन्न हैं, अकेले हा परिणमन वाले हैं, स्वयं का स्वयं ही है, किसी का कोई नहीं क्योंकि द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव मयरा पृथक है इस अद्वयम शान्ति मागम प्रारम्भ है अन्यथा काल तो अनन्त व्यतीत हुआ ही है आग व्यतीत होनेम क्या पाधा है ?

इस प्राणीने परद्व्यने निमित्तमे होनेवाले भावका परिचय और अनुभव ना धार धार मिया परतु ज्ञानमात्र आत्मतत्त्वा परिचय एव धार भी नहीं करता यदि मद् विज्ञान की छैनीसे आत्मान स्वभाव और पुद्गलने निमित्तमे होन वाले धधभावके बुद्धिम दुः के करके चेतन स्वभावको बुद्धिम उपादय बनाने और धध भाव को बुद्धि मही देख कर डाले तो ससार सतानका नाश हो जाय और दु खोंका अन्त हो जाये।

आत्माका जो स्वभाव है उसही रूप रहनेम आपत्तियोंका अभाव है। उसके निरुद्ध चलने यान साक्षी न रहकर रागीटोपी बननेम आपत्तियोंका प्रसार है।

धैभय तो अचेतन है। वह तो आत्माकी जानिका भी पदाय नहीं। वह तो आत्माका होगा क्या ? परन्तु अय मिय आत्मा भी अपनी मत्ता से पृथक हैं। आत्मान आत्मामे नाता नहीं, तथापि आपकी मडलीम जो निमी धर्मात्माना धर्मात्मान यात्सल्य हो तो धार्मिकताका ही रूप रयेगा। अत्र आप सध परिवारचनाने मित्रामे यही बुद्धि रखें जो परिवारका समागम सत्य मित्राका समागम इस ही लिय है जो परस्पर धर्मके बढ़नेम सहकारी ही रह और ऐसी ही शिक्षा, ऐसा ही व्यवहार हो जिससे धार्मिकता का उदय रहे।

चौबीसा घटे की चयाम भी ऐसी चया हो जो प्रत्येक धान धार्मिकतासे रहित न हो—व्यापार को लोगाने प्रणिष्टाका साधन

बना रहा है मगर ध्यान ऐसी नहीं है। व्यापारका प्रयोजन भी धार्मिकता है गृहस्थोंके लिये चहा व्यापार भी धर्म साधनके लिये उपयोग्य हो जाना हो रहा फिर कौनसी ऐसी बात है जो धार्मिकता के मन बचन काय बनाये रखनेमें रिज्त पर मरे।

मन्य बंधु—अनंत भय पाये वैभय पाये एक मप्रज्ञानके लिये ही श्रमिण समझ लेते तब लोकप्रणालसे अवकाश पाकर कल्याणमें अनुत्साहक अभारसे शान्तिम स्थित हो सकते।

जीवनका जीवनम जो मुख्य लक्ष्य होता है वह अर्थ-क्रियाकारी होता है। यदि मनुष्यभय पानेका यह ही लक्ष्य दृढतासे सोच लिया जाय कि ज्ञानमात्र स्थिति बनानेका ही मेरा काम धारी है, सच्ची विराग, ज्ञाना नष्ट रहनेके लिये ही अथ मेरा अस्तित्व है तब हम परमस्थिति की ओर ही मन बचन काय की रफ्तार रहेगी।

मैं अधिक क्या लिखू—शांतिका सम्बंध मात्र शास्त्र ज्ञानसे नहीं, यह तो स्वभाव साध्य है सो आप सब मढ़ली की विशेषता भी यहही है। अतः पानेम विलम्ब न होगा।

मेरी अतमायना यह ही है जो शांतिका स्वरूप व्यक्त होकर उच्च स्वातन्त्र्य प्राप्त हो, तथा धर्मात्मानोंके विभासके अन्तर् में भी तथा होऊ।

श्री म० जीनाराम जी सद्गुरु हैं। उनका अनुसंधान की ला० मिश्रीरिलालजी ला० जिनेरपरदास जी, ए० जिनका जी शान्ति सत्र बंधुआको दर्शनविशुद्धि—मार्ग नृत्त की दर्शनविशुद्धि।

मेरठ-मई ५१

ॐ

ॐ

ॐ

श्रीयुग भाई ला० चेतनलाल जी के दर्शनविशुद्धि—

परब आपका पर आया-वृत्त श्रद्धा है।

आपका धर्मसाधन ठीक हो रहा है, यह हो

भाज ही परमाथ है। कोपले की दलाली में काले हाथ होते हैं। पर तो भी उस दलालीमें पैसे हाथ आते। लेकिन परपराधीनो आत्मोय माननेकी दलालीमें तो मिलना तो दूर रहा प्रत्युत अनन्त शक्तिमान यह शक्ति रूप भगवान राग घर घरकर दुःखी होता है। धर्मदिराने की चीज नहीं, रिखाने की चीज नहीं, लोगों के घोट पर भी निर्भर नहीं, लौकिक इज्जत पर भी निर्भर नहीं, परमेश्वर पर भी निर्भर नहीं। धर्म तो आत्मरूप है। यह हमम हमसे प्रकट होता है। उसके प्राथमिक बाह्य साधन हैं— सज्जन सम्बन्ध, परमात्मोपासना। भाई जी यदि निर्मोहना और आत्मज्ञान का उदय होजाय तो हमसे बढ़कर तो फाई वैमयही नहीं। “ब्रह्मर्षी की सम्पदा, इन्द्र सारिले भोग। काश्मीर समगित है सम्यग्दृष्टि लोग।”

सब भाइयों को दर्शनपिशुद्धि कहिये— भाई विमलप्रसादजी को दर्शन पिशुद्धि कहिये। उनका पत्र दहरादून का भेजा हुआ फल प्राप्त हुआ था। आप सब अपनी धममहली में आने य सम्मिलित होनेकी विमलप्रसाद जी को रींचते रह। ये क्यों भागे भागे रहते। उनका स्वास्थ्य अथ कैसा है ? भाई किशोरीलाल जी, छट्टनलाल जी आदि से दर्शनपिशुद्धि।

इन्दौर

आ० शु० वि०

११—७—५२

मनोहर

卐

卐

卐

श्रीयुन भाई ला० चेतनलाल जी ला० किशोरीलालजी ला० चिनेरवर दासजी ला० विमलप्रसादजी वा० समन्दरलाल जी ला० मूल धर्म जी आदि सर्वमंडल—योग्य दर्शनपिशुद्धि—

परंच—आपना धर्मसाधन ठीक हो रहा होगा। इन्दौर से एक जैनबधु आपसे ही सुपह इन्दौर ले जाने के लिये आगये हैं।

आपकी और समाज की उन्नति के विशेषरूप से साधन हैं।

१ आप लोगों का स्वाध्याय व २—धर्म शिक्षा मदन । हम लोगों का जाना सम्भवत इन्दौर होगा । सच्चा व्यापार या सेवा पद हा है— जो पर्यायबुद्धि दूर होकर निज द्रव्य के त्रिकालस्थायी लक्षण पर लक्ष्य हो जिसमें मोह राग द्वेष का बंधन दूर हो । कौन किन जानता फिर किमे प्रसन्न करना है जिससे शत्रुता करना है ? सभी आत्मा यहा पर रागद्वेषन दुःखसे दुःखी होनेमे से गरीब हो रहे हैं । अपनी अपनी गरीबी मिटाते यही पडा नेतृत्व है ।

हम लोग आपका विशेष कोई कायम निमित्त नहीं होसक सका रागन्त्य रोद है क्योंकि यदि इन्दौर जाना हुआ तब आग का प्राप्ताम बुद्ध नहीं कह सकते क्योंकि यहा भी पण्डित जैनसमान हैं । हमारी भावना है जो आप सब सम्यक्त्वम स्थिर होकर अपना कल्याण करें ।

श्री० जीवाराज जी का दर्शनविशुद्धि ।

शिमला

श्री० शु० सि०

१-६-५२

मनोहरवर्णा

卐

卐

卐

श्री माई धर्मपत्सल ला० चेतनलाल जी तथा सवमन्त्र्य मठल

योग्य दर्शनविशुद्धि ।

परंच - आपका पत्र आया-अध्यात्मपंचसमूहकी भाषा जयपुरी है । जो पक्ति समझसे न आये उसे कुछ पहिले से और कुछ बाद तक २-३ बार पढ़े और फिर भी समझ में न आये तब पत्र द्वारा लिख्य देना कि पृष्ठ नं० अमुक पर अमुक पक्तिका अर्थ लिखो । कठिन प्रश्न तो अग्ररथ पढ़ना चाहिये चाहे १५ मिनट पढ़े, कठिन भी सरल इसी तरह होते हैं । हमारी व आपकी भी परिणति सब पत्रमानके लौकिक विचारोंके आधारमे हो जाय सो नहीं है— एक निज आत्मतत्त्वका विकास तो ऐसा है कि उसकी ओर मुक जाय लग जाय पीछे पड़ जाय तो उसे होना पड़ता । परन्तु इष्टानिष्ट

पठार्थानां संयोग वियोग हमारो विचारसे ही होनाय सो नहीं क्याकि यह परमस्तु है ।

भाई ! दुःख की कोई पान नहीं । हम यहा चले आय तब भी क्या है । पोस्टविभाग की ता अथ भी शृंग है ।

आपन जो प्रगति की है मेरा विरयाम है कि यह ऐसी प्रगति है जो बचनों म कही नहीं जा सकता किमी क (मेरे पिता) पिना क नही सकती ।

चातुर्मास में आप इस प्रकार प्रोपाम रख सरे तो अन्धा है प्राण करीब ५ या ४॥ बने सामायिक । फिर शुद्धिम निवृत्त होकर स्नान घन्दना, फिर शास्त्रममा, फिर भोग्या व्यापारादि । सारं सामायिक फिर बचन के धर्माध्यापन का कार्य या महयोग आदि, फिर शास्त्रसमा, फिर तत्त्व धर्मा फिर शयन । इस तरहका पाठक्रम हो - इस धीचम प्राण दापहर कभी जष याग्यना दस्ते कोई समय थोडामा शनत्र ध्याध्याय करे । षष्ठ अध्यात्मप्रथम अथय सभामें रखना । अध्यात्मपचसप्रह भी उत्तम प्रथ है—

भाई ला किशोरीलाल जी, भाई मूलचन्द जी भाई धामुदेव जी, भाई समन्दरलाल जी, भाई निनेश्वरदास जी भाई विमलप्रसाद जी आदि सत्रमहल को दर्शनविशुद्धि ।

यहा सेठजी का धनु हो अधिक शब्दाम चातुर्मासका आप्रह है— शेष सत्रकुशल । यहा इन्द्रमथनमें एक वैराग्यभवन है उनम हम ध म० जीवाराम जी रह रहे हैं । मौन म अधिक समय व्यतीत करता हूँ । स्वाध्याय का समागम अन्धा है ।

इन्द्रमथन, तुलसीगज, इन्दौर

२५—५—५२

आ० शु वि०

मनोहरयर्षी

卐

卐

卐

श्रीमान् ला० चेतनलाल जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परध—आपका धर्मसाधन सानन्द होना होगा— १ पुस्तक

अप्यन्वयममह मेजी है— १० मिनट इसे भी अपनी शास्त्रममा में रचना—आध्यात्मिक अर्द्धा ग्रन्थ है। आत्मस्वरूपका निरचयनय म बखन एमम अर्द्धा किंग है। श्री माई क्षिरीलाल जी माई म्पुनर का मां विमलप्रसां जी आं सय वधुओं के दर्शन विगुद्धि कहिय—

शास्त्राय सामायिक पर विरोध ध्यान एवं - सर्वमन्त्रमहलीका ज्ञा शास्त्राय द्वारा विशेषज्ञानका विकास हुआ है उसके प्रति मेरी मानना है कि यह विकास आपका होता हो तो शान्ति की कामनामा को पहुँचे। -

सम्भवन नुकागज, इन्ौर
११-६-५०

आ० शु० चि०
मनोहरधरणी



श्रेष्ठ माई चैननलाल जी आं मर्वमहली—योग्य दर्शनविगुद्धि।

परच - आप सबका धर्मसाधन ठीक हो रहा होगा। जश्मे ग० क्षिरालालजी छुडनलालजी आय तपमे आपका कोई पत्र नहीं आना सो सक्य अचम्भा है—आप लोग जाने मे पहले पत्र हालें कि कय आ रहे हैं तो स्थानसे यहा आनेमें कोई कष्ट न होगा।

य्य थीर उत्साहका समय एक है जो नवीन पर्याय का ज्ञान है वही पूव पर्याय का व्यय कहलाता है। इस विषय से प्रवचनकारमें श्रेय अधिकारको पत्निय। जैसे किमी घडे को ंहसे फेड़ निज तब स्परिया हा गड। वहा स्परिया होना थीर घटा न एन गने एक समयमें हैं। प्रवचनकार के श्रेय अधिकारको अय्यय एजा। जो दवायुके उदयका प्रथमक्षण है वही मनुष्यायुक अभाव का व्यय का समय है क्योंकि दवायुके उदय से पहले मनुष्यायु का उदय है उम मनुष्यायुका व्यय नहीं कह सकते। इस विषयमें जो आत्म धात न बैठ तब आप यहा आ रहे हैं आपमें मौखिक श्रुंता।

नश नहीं होता। गंगा यह भी हो सकती है कि फिर भयत्रय को पारिणामिक क्यों कहा ? भाइ जी पारिणामिक का अर्थ यह है— जो कम कल्प, उपशम, जय, क्षयोपशम न जो न होने स्वयं हो व पारिणामिक है—मदा रहे वह पारिणामिक है ऐसा अर्थ तो ही किया। चैतन्यमात्र परमपारिणामिक वह कभी नष्ट नहीं होता।

२—मन, घचन, काय के परिपक्व के 'नमित्त' से आत्म प्रवृत्ति के परिष्कृत होनेको योग कहते हैं वह बुद्धिपूर्वक हो या अनुबुद्धिपूर्वक। योग एक समय में एक होता है।

३—प्रत्यक्ष द्रव्य तथा व्यय धीव्ययुक्त है। आत्मा न—जैसे मनुष्यनष्ट द्रव्यत्वन्न आत्माभूष। विशेष—जैसा आपन पृष्ठा अंतिम समय में मनुष्य पर्याय है— इसके अनन्तर समयमें द्रव्य पर्याय है, अथ यहा यह घताना कुट्ट कठिन है कि मनुष्य पर्यायता नारा कहा हुआ, जैसे ४० वें मैकड में मनुष्य है ५१ वें मैकड में द्रव्य है यहा मैकड को समय मानलो। ४० वें समय में मनुष्यायुग क्षय नहीं कह सकते क्योंकि वहा मनुष्यायुग उदय है। ४१वें समय में मनुष्यायु का क्षय या मरण कैसे कहें वहा तो मनुष्य ही नहीं किसका मरण—तो भी उत्पन्न व्यय एक साथ होते हैं अतः जो द्रव्य प्रारम्भ समय है वह मनुष्य का व्यय समय है इसलिये उत्पन्न व्ययका भिन्न समय नहीं। ५० वें मैकडम नान द्रव्य उत्पन्न है न मनुष्य का नय है। और दस्ये जैसे आप छुट्टनलाल जी को इन्टीर या बाहर जाते समय भेजने को स्टेशन तक आये। ला० छुट्टनलाल जी तो आगे चले गये और आप स्टेशनसे लौटगये घनाओ आपका छुट्टनलाल जी से वियोग कहा हुआ ? स्टेशन से स्टेशनपर कहो तो वहा तो आप ये ही भूठ क्यों कहते ? आप यही तो कहोगे भूठ नहीं है। और भूठ है भी नहीं। इसी तरह व्यय कहो वियोग कहो द्रवायुके प्रथम समय में कहा जाता है वही—नेवका उत्पन्न है वही मनुष्यका व्यय है। ला०

भाई ! मनुष्यभयके निजने धर्म गुजर गये नम क्या लाभ हुआ इस पर विचार करके कोई श्लौकिक धान मनम जमाने का प्रयत्न करना । किसी दिन शरीर मे निकलकर भी जाना होगा तब उर्तमान वैभय की कथा ही क्या ? किसीको कोई मभालनेवाला नहीं । अतः कर्तृत्वबुद्धि को दूर करके निवृत्तिधाम का उद्योग गरित है । मधु सान्त् है ।

आ० शु० वि०

श्रीगणमहल, इन्दौर

मनोहरवर्णी

卐

卐

卐 ।

श्रीयुत भाई ला० चेतनलालजी आदि मयमन्ती योग्य दशानविशुद्धि-
 आपका काठ आया— और ला० किशोरीलाल जी ला० छुट्टन
 लाल जी व आपने आन व समाचार विन्ति क्रिय । यहा के भाई
 आपने आन के समाचार मुनकर प्रसन्न हुए । पूरपत्र म जो आपने
 प्रश्न पूछे हैं उनका उत्तर निम्नप्रकार है—

१—भयव्यगुणका विपाक (फल) प्राप्त हो चुकने मे सिद्ध भगवानके भयत्व गुणके नाश का वर्णन है “श्रीपशमिनादि भय त्वानाच ।” जैसे कोई छात्र तीसरी कक्षा पास करने पर ‘चौथी के योग्य’ कहा जाता परन्तु चौथी पास करके ५वी कक्षा म पहुँचने पर “चौथी के योग्य” उसे नहीं कहा जाता है भयव्यगुण रत्नत्रय प्राप्त करने योग्यको कहते हैं, सिद्ध होने पर “रत्नत्रय प्राप्त या पूर्ण करने के योग्य” कैसे क्या जाने । दूसरी बात -- पारिणामिक भाव ३ है — १-जीवत्व, २-भयत्व, ३-अभयत्व । हममे जीवत्व के २ भेद हैं— १-चैतन्य २-प्राणजीवत्व । चैतन्यसे परमपारिणामिक कहते हैं । परमपारिणामिक का अभाव कभी नहीं हो सकता । प्राणकर जी ने रूप जीवत्व का सिद्ध भगवान मे अभाव है, भयत्व का अभाव है । रही अभयत्व की बात सो अभयत्व का नाश हो जाय तो भयत्व धन जाय या सिद्ध हो जाय सो हो नहीं सकता । अभय कभी रत्नत्रययुक्त नहीं हो सकता सो अभयत्व का कभी

नाश नहीं होता। जगत् यह भी हो सकती है कि फिर भव्यत्व को परिणामिक क्यों कहा? भाई जी पारिणामिक का अर्थ यह है—
 वा कम क उन्मत्त, उपशम, क्षय, क्षयोपशम से जो न होवे स्वयं हो
 वह पारिणामिक है—मदा रहे वह पारिणामिक है ऐसा अर्थ तो
 नहीं किया। चैतन्यभाव परमपारिणामिक वह कभी नष्ट नहीं होता।

२—मन, वचन, काय के परिष्कार के निमित्त मे आत्म प्रदशी
 व परिष्कार होनेको योग कहते हैं वह बुद्धिपूर्वक हो या अनुबुद्धिपूर्वक।
 योग एक समय में एक होता है।

३—प्रत्यक्ष द्रव्य त्वात् चय धौत्र्ययुक्त है। आत्मा न—जैसे
 मनुष्यनष्ट द्रव्यत्वात् आत्माध्रुव। विशेष—जैसा आपने पूछा
 अन्तिम समय में मनुष्य पचाय है— उसके अनन्तर समयमें द्रव्य
 पचाय है, अथ यहा यह बताना कुछ कठिन है कि मनुष्य पचायरा
 नाग कहा हुआ, जैसे ४० वें सैकड़ में मनुष्य है ४१ वें सैकड़ में
 द्रव्य है यहा सैकड़ को समय मानलो। ४० वें समय में मनुष्यायुका
 क्षय नहीं कह सकते क्योंकि वहा मनुष्यायुका क्षय है। ४१वें
 समय में मनुष्यायु का क्षय या मरण कैसे कई कहा तो मनुष्य ही
 नहीं जिसका मरण—तो भी उत्पाद व्यय एक साथ होते हैं अन
 जा द्रवका प्रारम्भ समय है वह मनुष्य का चय समय है उसलिये
 उत्पाद व्ययका मिला समय नहीं। ४० वें सैकड़में तो न द्रवका
 उत्पाद है न मनुष्य का क्षय है। और हाँ जैसे थाप छुट्टनलाल
 जी को स्त्रीर या घाहर जाते समय भेजने को स्थान तक थाये।
 ला० छुट्टनलाल जी तो आगे बने गये और थाप स्थानसे लौटगय
 धनाश्री आपका छुट्टनलाल जी में त्रियोग कहा हुआ? स्थान से
 स्थानपर कहो तो कहा तो आप थे ही भूठ क्यों कहते? आप वही
 तो कहोगे भूठ नहीं है। और भूठ है भी नहीं। इसा तरह
 व्यय कहो त्रियोग कहो द्रव्यायुके प्रथम समय में कहा जाता है वही
 द्रवका उत्पाद है वही मनुष्यका व्यय है। ला० किशोरीलालजी जयान्त

जी ला० लक्ष्मीरामजी आदि मयकों दशान्विशुद्धि-त्र० जीमानन्दजी का दशान्विशुद्धि । भाई जी बल्याणना मित्र्यान्व प्राथ मान माया लोभ—इन पाचगुणियों के प्रपञ्चों के हटाने में है—हमें कोई जानना ही नहीं अमहायससार में फिर रहा ऐसा समझकर लौकिक में अन्तरंग में होलीकी आग मुलगाएर अनौकिक होनेका लक्ष्य रखिये यही चैतन्यप्रभुकी यह आदर्श लीला है जिस लीला के बाद फिर लीला न करना पड । शेष सर्व अज्ञ है । जो हो सो अज्ञा क्याकि होने बिना तो रहता नहीं अत अज्ञेय ही मय शुमार है शुद्धदृष्टि के पास जान या रहन या लक्ष्य करने वाला को शुद्ध दृष्टि का ग्रन्त रखिये फिर बुद्ध बुरा है ही नहीं ।

आ० शु० च०

श्रीरामहल, इन्दौर २५-६-५२

मनोहरधर्षणी

卐

卐

卐

श्रीयुन भाई ला० चैतनलाल जी योग्य दर्शन-विशुद्धि—

परंच—आपका पत्र मिला वृत्त अयगत किये—मरहवा सनाउद् जैन समाजके महान् आम्ह पर मेरा अन्यत्र जाने का धरा न चला । श्री प्र० जीवानन्द जा प श्री जगानन्द जी आपके प्रान्तमें पहुँचे हैं व मेल पर जायंगे । 'होना स्थय जगत् परिणाम मैं जगका करता क्या काम ।' गुरुकुलको उत्तरप्रान्तीय समाजकी सद्भावनायें चलावेंगी । मैं अपन को ही जो अध्यात्मभाग निरचित कर चुका उस पर चला नहीं पा रहा तब परपदाय जो सर्वथा भिन्न हैं उनपर मुक्त आत्माका फेद धरा नहीं । मेरी सद्भावना अयस्य यह है जो अप्रवालममाज में धार्मिक संसृति मुहृद् धनी रह और आप सयके आत्मोत्थान के लिये यह तन मन वचन मय बुद्ध अपित हो जाये क्योंकि यह तन मन वचन तीना विनाशीक पर है इसका सदुपयोग हो और इस निमित्तसे दर्शनज्ञान चारित्र की परिणति अशुभ उपयोग से हटे इसमें मुझे प्रसन्नता है । उत्तरप्रान्त के धार्मिकमुधार के लिये भविष्य में अन्य समाजोंके आक्रमण

मे क्वानके लिय आपका गुरुकुल बहुत काम आयेगा । और आपने
 किा कि इस्तिनापुरम समाजको बहुत लाभ होगा सो भाई जी
 मैं नो अपनेरो अकिञ्चित्कर समझता हूँ । फिर भी मेरा आपके
 र्श आनेका प्रयत्नका यही प्रोग्राम था परन्तु रणदरा सनाय
 आदक करीब १०० से ऊपर प्रमुख महानुभाव रणधर पाते ही
 न्यायद करने आये मैं उस समय क्या करता । रोष मत्र शुभ
 ! समस्त मंडलीको दर्शनविशुद्धि कहिये ।

अपने अनादि अन्त अचल ज्ञान सामान्यतत्वका चिंतन कर
 राख रिक्त्याको त्यागकर कर्मा के सवर और निर्नरा करनेके पात्र
 बन रहें यही मेरी भावना है ।

रणदरा (सी० पी०)

२६-१०-५२

आ० शु० चि०

मनोहर

卐

卐

卐

शायुन भाई ला० चेतनलालनी योग्य दर्शनविशुद्धि ।

परंच- आप सबका धर्म ध्यान ठीक हो ही रहा होगा । अपने
 विषयमें ऐसा निरन्तर भावना व विचार रखना श्रेयस्कर है कि मैं
 अनादि अन्त अचल अपन आपसे अनुभवमे आन वाला समस्त
 परद्रय गुण पयायोंसे भिन्न चैतन्यस्वरूप हूँ । भाई मूलचन्द्रजीरो
 दर्शनविशुद्धि कहिये । समस्त मंडली को दर्शनविशुद्धि कहिये ।

रणदरा

२३-१०-५२

आ० शु० चि०

मनोहर

卐

卐

卐

श्रीयुन भाई लाला चेतनलालनी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच आपका पत्र आया । वास्तविक मुल तो शुद्ध चिद्रूप
 रहनेकी स्थितिमें है जिसके बाद फिर सुखकी बात ही नहीं करना
 पड़नी-वह स्वभाव सधम है परन्तु अहितकारी विकारी अनथकारी
 मोह भावसे - - । भेद विज्ञान द्वारा अज्ञानाधकार दूर

‘रसो वधादि कर्म मु चि जीवो विराग र्वपशो ।
एसो निणोवदमो तम्टा कर्म्मसु वा रञ्ज ।’

समस्त शास्त्रके उपदेशना यही सार है । जो रागी इला है वह
कर्म बाधता है । पीतरागी कर्मन छूट जाना है । श्री आचार
नमिसागाजी महाराजका समाचार मालूम हो तो लिखना ।
मानागिरमे पूज्य वर्षी जीका भी पत्र आ गया है । पूज्य महावर्षी
जी इस युगके महान्पुण्य हैं ।

अप्रैल ५१

आ० शु० चि०
मनोहर

卐

卐

卐

श्रीमान् भाई वेनलालजी भाई विमलप्रसादजी भाई विठोरीलाल
जी भाई तिनरवरप्रसादजी आदि महली योग्य दरानविशुद्धि ।

परंच—आप मय लोग सान् धम साधन करते होंगे । शास्त्र
मभा थीर धम शिक्षा सदनका ध्यान रगिय । विशय ध्यान ही
बाल यह हो जो क्रोध मान माया लोभकी हीनता हो । जैसा जैसा
जीवन ध्यनीन हो साथ ही माय कपाय भी म् होनी साथ यही
आभास कामकी धान है । श्री भाई मूलबन्दनी अपने स्वाध्यायकी
ज्ञान वदानके दृङ्गसे करना ।

जून ५१

आ० शु० चि०
मनोहर

卐

卐

卐

श्रीमान् भाई ला० वेनलालजी योग्य दरानविशुद्धि—

परंच—आपका धर्मसाधा ठीक चल रहा होगा । स्वाध्याय
य धर्म शिक्षासदन काय ठीक चल रहा होगा—भाई मूलबन्द जी
मानन्द आप लोगों के बीच बहुत रहते ही होंगे । उनसे स्वाध्याय
आदि धम कार्योंम बहुत सहयोग प्राप्त होगा ।

इस अमार संसारमें जहा कि निमीका किसीसे बुद्ध तादिक

क्या नहीं सार और तात्त्विक आत्मरहस्य पालेना एक न्याययुक्त पूर्व रूप है अथवा विग्रह की विषय है। जब कोई अपना होही नहीं सञ्जा तो उद्ध सुद्ध मानने में ही क्या रक्ता ? अद्धा में अपने को निर्मम निर्द्वन्द्व निष्कल सिद्धसम समम्।

सर मठ

मयने कल्याण का इच्छुक

मनोहर

卐

卐

卐

श्रुत भार्ता ला० चेतनलाल जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

पर—आप सप्रमण्डली सहित सकुशल धर्मसाधन करते हो। सुकुशलता निर्मोह भाव में है। आत्मा करना भी तो परका सुद्ध नहीं पर मानने का तो दुःख लगा है। द्रव्यो १—परमशुद्ध निरचयनय तो द्रव्य के अनादि अनन्त एक स्वभाव को विषय करता है उसकी दृष्टि म तो आत्मा अकर्ता ही है। २—शुद्धनिरचयनय शुद्ध पयायवाले द्रव्यको विषय करता है। उसकी दृष्टिमें आत्मा केवल ज्ञानादि स्वाभाविक भावों को करता है जिसमें अनन्त शान्ति मय है। ३—अशुद्धनिरचयनय—अशुद्धपयायवाले द्रव्यको विषय करना है। इसकी दृष्टिमें आत्मा रागादि का कर्ता है परका नहीं मो लय परका कर्ता नहीं तो पर का लक्ष्य छूटते ही रागादि भी धरस्त हो जाते हैं। ४—व्यवहारनय—यह घनाता है कि कर्मोदय का निमित्त पाकर आत्मा रागादिमय होना है परके लक्ष्यके भावम आमारन आदि होता। मतलब - ? ररभाव से नहीं। तो स्वभाव पर दृष्टि दें पर लक्ष्य छूटा और रागादि दूर हुए। अब एक उपचारनय—कहमनय—भूटनय ऐसा रह जाता है निमका विषय भूट है—अथान् मवान आदि मेरे हैं—सो भार्ता भूट अभिप्राय दूने तो आत्मा का कार्य घने। इस आमस्वभाव पर लक्ष्य दूर मोह रागद्वेष समाप्त करें। ज्ञानगोष्ठी में सध आते ही होंगे 'मधको

जी-धमशुद्धि—आमसपोधन

का अनुवाद कहा तक होगया। उसकी सय इच्छा करते हैं जो सुनना है।

इन्दीर

आ० शु० वि० १४

मइ मन् १६४३

मनोहरवर्णा ४१



श्रीमान् ला० चैननलाल जी मूलचन्द्र जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परच—नयपुर ममान विकट सन्यासह्म आरम्भ करने को होगई अत यही कषायोग होगया। द्रव्यश्रि करके प्रसन्न रहना—जगनम अन्य कुछ भी तत्व-मार नहीं है— सर पर्यायस्य सृष्टिक है मेरा किममे क्या होगा ? आत्मा की सत्य भक्ति करिय इसी में अक्षय लाभ है। सर्व गोष्ठी को दर्शनविशुद्धि।

जयपुर

आ० शु० वि०

०८—७—४३

मनोहर



श्रीयुन भाई ला० जुगमन्दरदास जी, सभापति, मन्त्री आदि सस्य गण व श्रीयुन भाई पा० वामुदवप्रसाद जी मन्त्री योग्य धर्मशुद्धि—

आप स्वस्थ होंगे—तदनन्तर धम रिचासदन का कार्य यदि सार्य ४५ मिनट ही चलता रहे तब आपके बालका पर आपकी अनुकम्पा होगी। भरभ्रमण करते हुए सुयोग से निहोने नर जन्म पाया है उन्हें वस्तु स्वरूप का बोध हो जाय तो उस अद्धा के हेतु ससार में पार होने व सत्रदुखा से मुक्त होने का प्रयत्न कर लेंगे। जीवन तन, मन, धन, वचन सभी अध्रुव है। शुद्धात्मतत्वके विश्वास म इनका उपयोग मदुपयोग है। अत मेरी सम्मतिमे इस परको आप ज्ञान गोष्ठी म रखकर विशेष विचार करें। ४५ मिनट समय अधिक हो तो ३० मिनट रखें (९दाने वाले ३-४ सज्जन चाहियें फिर काम म क्या घागा) ठीक समय पर शुरु होकर ठीक समयपर

ज्ञा। शेष सब ठीक है। यदि धानकों का पुण्योदय होगा तो कल राग इसमें निमित्त बनगेही सो इसमें मुझे प्रेरक न समझना, इस प्रकार आपका भाव होगा और निमित्त प्रेरक धाराओंका पुण्योदय होगा। सर्वमखली का धर्मवृद्धि—

८-१-२१

आ० शु० चि०
महजानन्द

卐

卐

卐

श्रीगुरु भाई विमलप्रसाद जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परच—धर्मसाधन ठीक हो रहा होगा। फोटुम्विक जालसे निवृत्त पुराणों को जीविकार्थ परिमिति परिग्रह ही स्वरूप निरारम्भ इस धर्म ध्यान में विरोध प्रवृत्त होनेको बचना चाहिये।

११-४-२३

आ० शु० चि०
मनोहर

卐

卐

卐

श्रीगुरु भाई जी या० सुमतिप्रसाद जी वकील योग्य धर्मवृद्धि—

परच—श्रीगुरु भाई मूलचन्दके पत्रसे ज्ञात हुआ कि धनिका दहान्त हो गया है। संसारही दुःखका स्थान है। यहाँ दुःख न हो तो क्या निराकुलना रह। संसार का स्वरूप जानकर आत्मनिर्मलना से संतोष करें। शोक से सिखाय नयीन कर्मबन्ध पे और कोई प्राप्ति नहीं। संसारके जीनेके ऐसे जन्ममरण अनादि से होते आये हैं। यह जीव अनादि से निम्नज्ञानपद—निर्गोश्मरहा विकास होते होते कीड़े मकोड़े से निरुलकर पशुगति को भी पारकर कठिनतासे मनुष्य भव मिलता सो भी मरना पड़ता। मरनेका क्या दुःख करना दुःख सो इस धान का होना योग्य है कि श्रेष्ठ नरजन्म पाकर धार्मिकलाभ पूरा न हो पाय। यह धान हम दूसरों पर ही न बढ़ावें स्वयं पर हम इस धानको सोचें कि हम यदि धार्मिक लाभ न जीकर क्या किया। इस विषय में क्या धनया जाये।

संसारमे जिनने आत्मा हैं सव भिन्न भिन्न हैं कोई किमी का नहीं हैं, सम्यग्ध मानना ही भ्रम है। यह भ्रम तभी होता है—जब शरीर से विपरीत लक्षण वाला अखंड चेतन ज्ञान म नही आना। यह प्राणी कितना ही परको अपना माने किन्तु अणुमात्र भी उसका नहीं हो सकता। मनुष्य श्रेष्ठमनवाला जीव है इसके लाभको सफलता स्वयं के पहिचानने और स्थिर होने में है। अतः अब शोक को छोड़कर आर दाना धर्म-शान्ति के मार्ग व वस्तु स्वरूप के अवशोष स्वाध्याय म अधिकतया लगिये। मुझमें भी जो कुछ हो सकेगा आपकी वैयाग्रत्य इस विषयक हो सकेगी। आत्मा को एकाकी जानकर निर्मलना ध्याय। यह पत्र अचिनकी मानीसो भी मुना दना धैय से काम ले धारह भागना का स्मरण करें। आपनो ज्ञान, प्रतिष्ठा सम्पदा, मर्गप्रियता आदि अनेक धाना से सम्पन्न हैं। घड़े घड़े तीर्थंकरासो भी एकाकी शान्तिके अर्थ तपस्थो धनना पडा। अब कुछ कुछ चि तना के एतन, लौकिक कार्यमात्र एक देहली का रगकर शेष समय स्वाध्याय म लगायें।

ईसरी

आ० शु० चि०

१२—१—१४

मनोहरवर्णी "सहजानन्द"

卐

卐

卐

श्रीयुग भार्वात षा० महेशचन्द्र जी—योग्य दशनविशुद्धि—

परच—आपका पत्र आया—स्वास्थ्य शारीरिक ठीक न जानकर गेद हुआ। अब स्वास्थ्य अच्छा होगा। अपने आपको स्वतन्त्र एकाकी ज्ञानपुञ्ज समये निराज्ञा परके सम्यग्ध में अत्यन्त ग्रथक—जैसे कि हैं जानकर प्रसन्न रहना। व्यवहार के काम व्यवहारके हैं, करना तो पड़ना ही है। यदि काय अधिक आ पड़ा हो तो सहयोगी विशिष्ट क्लर्क नियुक्त करनेको क्लर्कर आदि जो अधिकारी हो- से कहना या छुट्टियां आपकी चाहियें हो तो ले लेना। आत्मसम्बोधन का कार्य भी बंद रखना वा अनुवाद म मनके बहजान से आराम

अचता हो तो भी कम करना । अपने आपके विषयमें यह देखना कि मैं सन् (त्याद व्यय धीव्यात्मक) स्वत मिद्ध, अनादि, अनन्त, स्वसहाय, अक्षरद चेतन पदार्थ हूँ फिर भी षडुप्रदशी हू, प्रत्येक प्रदेश अनन्त गुणमय है, प्रत्येक गुणमें अनन्त विगरिया हैं, इन सत्रका एक पिण्ड एक रूप अभिन्न मैं आत्मा अपने रूपसे हूँ, परचतुष्यका लेश भी प्रवेश नहीं । दिनेश परीक्षाम उत्तीर्ण होगया होगा । दिनेशकी मानाको धमवृद्धि । व्याप्याय नियमित रचना ।

इन्दौर

११-६-५३

आ० शु० चि०

मनोहरवर्णी

卐

卐

卐

धायुन भाई षा० महेशचन्द्रकी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परच —आपका स्वास्थ्य व धर्म साधन उत्तम होगा । तन्तर हम लोग इन्दौर समाजके आप्रहमे २५-५-५३ को इन्दौर आ गय हैं । यहा फरीष १ माह रहनेका प्रोग्राम है । परिवारका दर्शनविशुद्धि सत्य शानि तो अपने आपके निर्विकल्प अवस्थाम है, दय शास्त्र गुरुके विकल्प भी तरगत सहन शातिके रूप नहीं हैं । उनकी भक्ति अपने स्वरूपमें समाजके लिये है । जगतके प्राणी, मनुष्य प्राय वैभव मग्नम जुट रहे हैं जुटकर कभी मनुष्यभय छोडकर जायेंगे, सय यहीं पड़ा रहना । जीवन कालमें भी जो प्रमत्त हो जाने वे भी शानि पहुँचानेमें अशक्त हैं । इसलिये सयमें बडा काम करनेको यह है कि जगतका अपना यथार्थ स्वरूप जानकर ज्ञानमय निच आत्माम छुपकर विश्राम करना । इस हितभावकी श्रद्धामें हम आप लोग संसार दुःखाम अवरय मुक्त होंगे । दिनेशको आशीवाद । ज्ञान गौरीमें तो आप जाते ही होंगे । मर महलीकी धर्मस्नेह कहियगा । आत्मसम्बोधनका अनुराग कहा तक हुआ ? उसमें भी अधिक परिश्रम नहीं करना । १ घंटा समय काफी है । तथा कुत्र विश्राम करते रहना ।

इंदौर

२७-५-५३

卐

आ० शु० वि०

मनोहरवर्मा

卐

भैया मूलचंद्र—

करना ही क्या रोग है मंसारमे जो मार ब दिनहो—आमाको मलाई इसीमें है जो परपन्थु की आशा करेही नहीं मथा परपन्थुका समागम भी कमसे कम रगे—आप १ या २ घंटा समय पतोरकर में (निसम आपका स्वरूप रय है) लगावे रह । मय भयोग क्षणभंगुर है । प्रयव आत्मा अपन क्यायभी च्छा करना हुआ जीवन व्यतीत कर रहा है—परम उमे न कुछ हानि काम हो रहा मगर विकल्पमे अपने सुखकी इत्याकर रहा है ।

मनुष्यमें सबसे बड़ा रोग है जो यरा प्रनिष्ठा चाहतेया । जानी पुण्य न तो यरा प्रनिष्ठा चाहता न अपयग अप्रनिष्ठामें घषझाना—जानी तो अपने अरिवार स्वभायके लक्ष्यम अपना उग्रयन और स्वरूपम पुन होनेम अग्रनयन समभता है । तिनके लिये हम अहर्निश चिन्ता करते थ क्या कर दोगे । यदि आसको कुछ मिलनेकी आशा हो तो वनायें । मेरी श्रद्धामं तो कोई परपदार्य कुछ भी देनेमे समर्थ नहीं है । यास तो यास ही रहता ।

शिमला

५-६-५२

卐

आ० शु० वि०

मनोहर

卐

नोट—यह निम्नलिखित पत्र निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर म है—

१—क्या शुक्लध्यानी नियमगे मोक्ष जाता है ?

२—क्या नकम किसी समय सुख होता है ? होना है तो किस समय ?

३—आत्माका स्वभाव ज्ञाना प्छा घनलाया है । 'ज्ञाना पर प्णार्थके जाननेयाला और दृष्टा अपनी आत्माको जानने

वालेको कहते हैं 'क्या यह रत्न ही है? सम्पत्ति
आत्माओंमें स्थापना कैसे करता है तबकि वही आत्म
लोकन तो है ही नहीं!

४—क्या १३वें गुण स्थानन मन्त्रोपयोगी होता है? होना है
तो कैसे? क्या यह मनमें बुद्धि विचारते हैं। - -

५—सच्चा देव उसे कहे हैं या शैलशोभ, सरंग और
द्वितीयपदेशी ही। क्या यह सब हृषिकेश मूर्च्छनमल्लः और
अन्तःकृत वेदनीम शर पात्र हैं। क्या 'नम' नहीं है तो
यह सच्चे देव कैसे कहेंगे? - -

६—आन्त किस कहते हैं? क्या सभी अक्षय आन्त हैं?

७—क्या जमीरुद्दका त्याग शूद्रनी रत्नी, अक्षरस्य, सूठ
रखा सकता है?

८—क्या रात्रिक अक्षय त्याग विल, ही मटर कुट्ट
धीलाई गया सकता है!

x x x

श्री भाई मूलचन्द्रा शान्य गर्जितुं।

परच—आप सर्व सक्षर हैं। शरक प्रसोका उत्तर भेज
रहे हैं। त्रिवाद प्रप्त विषयोः। इर शैलक उत्तर दवंगे।

१—सपन श्रेणी वाला होना।

२ - तीथ करके जम मन्त्र क्लेश दुस कम होता है।

३—होय पत्नीयोंम न्यसा है प्रक ज्ञान है और जष
ज्ञान नहीं करके सापस शीनास है तब दर्शन है
ससारी आत्मामें फल ले। उप विशेषका
नहीं तब सामान्य है प्र कमन्य प्रतिमासका
परपदार्य तो है तब प्रक्याय कहा होता
अत मामान्य अत्राकेस एकव समक

से
ता
के
ने

6

।

।

।

।

।

।

।

।

।

।

।

।

।

।

।

।

।

उसके
रने से
होगे।

- ४—द्रव्य मनोयोग होता है, विचारते कुछ नहीं। मनोवर्गणा का आना जाना आदि होना है।
- ५—दय शुद्धात्मानो कहते हैं। सर्वज्ञ वीनराग हितोपदशीओ आप्त कहते हैं।
- ६—रत्नकरण्ड ५वें श्लोकमें देखिये। हितोपदशी अरहन आप्त है मगर शेषको अनाप्त भी नहीं कह सकते।
- ७—इतमें अदरम व सचित्त शूली नहीं खा मरते।
- ८—तिलगुट्टू चाँलाइ अत्रमें है। त्यागीकी यिवि खाद्य स्वाद्य लेह्य पेयसे है। किसीके रात्रिको खाद्यका त्याग है किसी के चारोंफा। अन्नकी चीज खाद्यमें अधिक सम्बन्ध रखती है सो खाद्यका तो नाम भूल गये अन्नका त्याग न वैसे तो अनिरत अनस्थान जघन्य भी नियम यह है कि रात्रिको जल औपधिके अनिरित्त और कुछ न लेवे। जय नहीं चलनी तो लोग ऐसा कर लिया करते हैं। अन्नका त्याग चल न्ठा। खाद्यमें अत्रके सिवाय और भी चीज हो मरती हैं जो पेट भर दें अधिक खाई जा सके। हरी मटर सूफने पर अन्न है।

आ० शु० चि
मनोहरवर्णा

卐

卐

卐

श्रीमान भाई मूलचन्द जी योग्य दर्शनविशुद्धि।

परच—आप सद्गुरुशाल धर्मसाधन करते हागे। तदनंतर आप अपना प्राइवेट स्वाध्यायम अथ प्रकाशिका जरूर रखिये। उसमें प्रमेय बहुत है। अर्थ प्रकाशिका तत्त्वार्थसूत्रना विशद और विस्तृत विवेचन है। मोक्षशास्त्र व चौबीसठाणाको भी कभी दस्तते रहना चाहिये। ज्ञानमय तो यह आत्मा स्वयं है परन्तु आवरणके कारण उसका विकास नहीं होना सो आवरणके विनाशना बुद्धिपूर्वक

यही प्रयास है जो ज्ञानका अचन हिनबुद्धि रत्न कर करें। आपसे समानका कल्याण होगा। अपने सद्गृहस्थ बननेका आदेश रखना इसमें आपको व समान को लाभ है। आपकी प्रवृत्ति आपके होनहार की सूचक है। इस क्षणिक सत्कार में इस क्षणिक पर्यायको पाकर अक्षयपत्तके लाभका उद्यम करना महान् श्रेयस्कर है।

मेरठ

आपका हितचिन्तक

२७—४—५१

मनोहर

卐

卐

卐

श्रीमान् भाई मूलचन्द जी योगेश्वरानभिषुद्धि।

परच—आपका पत्र आया। समाचार जाने। आप एक आसन्न मन्व्य आत्मा है। आपके गुणसे ही हम आपमें स्नेह है। आप प्रातः जल्दी यानी सूर्योदय से कम से कम १॥ घंटा पहले उठें। घादम निषटकर आप स्वाध्याय में १ घंटा लगायें। इस स्वाध्याय में आप अर्थप्रकाशिका रखे चाहे कठिन भली हो। जो समझ में न आवे पत्रद्वारा मुझसे पूछते रहें। सागारधर्माभूत अच्छा ग्रन्थ है। जीवन कैसे शान्तिमुल्लस्य व्यतीत हो यह सब उत्तर सागारधर्माभूतम मिल जायेगा। जो उसमें लिखा है यह जीवनमें उतारनेकी चीज है।

जीवस्थान धर्मापूर्ण लिखचुका हू तथा करीब आधी जाच भी चुका हू। श्री १०५ छु० निवानन्द जी यदि अभी ठहरें हों तो उनसे इच्छाकार कहिये।

आप अपनी दिनचर्या का एक प्रोग्राम बनालें और उसके अनुसार विरोध अग्रसरने अतिरिक्त रोजचर्या करें ऐसा करने से आपका समय ध्यर्य न जायगा और कार्य निराहुलतापूर्वक होंगे।

चेमे हम नीचे लिखते हैं आप उसे सुधार लेना —

प्रातः ५॥ घने से ६॥ घने तक स्वाध्याय

" ७॥ " " स्नान आदि

८॥	"	"	१०	"	"	दुकान
१०	"	"	११॥	"	"	भाउन विभाग
११॥	"	"	४	"	"	दुकान
४	"	"	५	"	"	शुद्धि भाउन
५	"	"	७	"	"	विभाग व अन्य कार्य घम शिक्षा मदन
७	"	"	७॥	"	"	सामायिक आदि -
७॥	"	"	८॥	"	"	शास्त्रसभा
८॥	"	"	६	"	"	तत्त्व चर्चा
६	"	"	५॥	"	"	शयन
५॥	"	"	५॥	"	"	जागरण कायोत्सर्ग

जीपरधान चर्चाके पूरा होनेके बाद आत्मभावना लिखूंगा ऐसा विचार है। यहाँ भाषने मजाराज जी १५ जायरी तक ठहरेंगे आर आसके तो अच्छा अवसर है। श्री सा० मिश्रसैन, नारहरिह जी से दृगनविशुद्धि। दोना मध्यपुण्य हैं। श्री भाई बेनमलाल जी— भाई विशोरीलाल जी आदि संयुक्तमें दर्शनविशुद्धि कहिये— सा० विशोरीलाल जी आसके तो अच्छा अवसर है।

इटाया

आ० शु० पि०
मनोहर

卐

卐

卐

धीयुन भैया मूलचन्द्र जी योग्य दर्शनविशुद्धि।

परंच। आपका व मेट सा० मिश्रसैन नारहरिहनीका धर्मध्यान ठीक प्रकारण चल रहा होगा। अपने अभिप्राय को निर्मल निर्माह बना लेने के समान उक्तम कुछ अन्य जगन में है ही नहीं। दरयमान तो चणभंगुर है। धनकी तो उचित व्यवस्था उक्तम करते हुये भी आत्मस्वरूपकी ओर विभोर रहनेमें शान्ति है। श्री पा० सुमनिप्रसद

जी मे दर्शनविशुद्धि कहना । श्री भाई किरोरीलाल जी व शृट्टनलाल जी से दर्शनविशुद्धि । सत्रमण्टली को दर्शनविशुद्धि कहिय ।

इश्वर

२२-७-५२

आ० शु० चि०

मनोहरवर्णी

卐

卐

卐

श्री भाई मूलचन्द जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

भाई जी आपके पास पत्र भेजा क्या पहुँचा नहीं ? अपने जीवन का ध्येय एक यही प्रधान रखना कि सर्व विकल्पा मे मुक्त होकर माना प्यारी स्थिति बनानी है । श्री भाई चैननलाल जी वा० महेशचन्द जी आदि सर्वमण्टली को दर्शनविशुद्धि ।

इमरो

२-१-५४

आ० शु० चि०

मनोहरवर्णी

卐

卐

卐

श्रीयुत भाई ला० मूलचन्द जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परच आपका पत्र आया पृत्त जाने ।

चैन समान मुजफ्फरनगर द्वारा हो रहे थीर जयन्त्युत्सवमें चैन कुमारसभा द्वारा जो पञ्चकल्याणकका चित्र द्रश्य दिखाये जानेका कार्यक्रम है वह अच्छा एवं सृष्टिदायक है । इसमे इतिहासके नायकोंकी विशुद्धि धार्मिकतासे लक्ष्यसे अपनी निमलताको प्रोत्साहन प्राप्त होना है । इसके अनिरिक्त स्वाध्याय व सत्समागम घटानेके लिय भी एक हमारा सुम्हार है जैनसभा इन्ही प्रकार अपने धार्मिक प्रामाण्य, विचार तथा आचारमे वृद्धिगत हो ।

आपके भेजे हुए कुछ प्रश्नों के उत्तर मौखिक हो ही गये थे । फिर - अच्छा - प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं ।

(अ) मनुष्यायुके अन्त और दयायुके प्रथमोदयका समय एक ही है तब दवपयाय का उत्पाद और मनुष्यपर्याय का जीवस्तु का धीय्य इस तरह उत्पादव्यय धीय्यमिद है ।

(आ) आरम्भत्याग प्रतिभासे ऊपर वाला अपने कपड़े प्रामुख जलसे साधारणतया धो सकता है तथा अन्यपुरुष साधारणतया या विशेषतया धोना चाहे तो धो सकता है ।

(इ) सिद्धभगवान ने जो पहिले जाना वही अगले समयमें जानते हैं तो भी पहिले समयकी जाननक्रिया अन्य है दूसरे समयकी जाननक्रिया अन्य है । परिणामन (वर्तना) न हो तो जानने का काय समाप्त हो जायेगा फिर अगले समय में जब हो जायेगा ।

(इ) अब तक ऐसा समझा गया है कि चैतन्यभाव करि तो अभव्यम भी सिद्ध होने की शक्ति है परन्तु व्यक्त होने की योग्यता नहीं चाहे कारण भी मिल जावें । दूरानदूरभव्य म सिद्ध होने की व्यक्त होने की शक्ति है परन्तु कारण मिलते ही नहीं ।

(उ) छठे गुणस्थान में १—दृष्टावियोगज, २—अनिष्टसंयोगन ३—वेदनाप्रभवयै हीन आर्त्तध्यान हो सकते हैं ।

(ऊ) जीव पुद्गलका गमन हो या हलनचलन हो सधम धम द्रव्य निमित्तमात्र है ।

आप सध ज्ञानगोष्ठी के सदस्यों का प्ररचन कार्य ठीक चल रहा होगा । यहा धमशिक्षासदन घिना अन्तरकाल के चला जा रहा है । सर्वमण्डली को दर्शनविशुद्धि ।

देहरादून
२४-३-५३

आ० शु० वि०
मनोहर

卐

卐

卐

नोट — यह निम्नलिखित पत्र निम्नलिखित प्रश्नके उत्तरमें है —

(१) पद गुणी हानिवृद्धि किसे कहते हैं ?

(२) एक धार सम्यक्त्व होनेके धात्र दोषारा कितने समय तक सम्यक् नहीं हो सकता ।

(३) १४ लाख योनिया कौन कौन होती हैं ?

श्रीयुत भाई मूलचन्द्रनी योग्य दशनत्रिगुद्धि—

१—पदगुणी हानि वृद्धि अनुमान व आगमसे गम्य है।
अनिन्द्रिय प्रत्यक्ष ज्ञानियाके प्रत्यक्षगम्य है।

अनंतभागवृद्धि असंख्यातभागवृद्धि संख्यातभागवृद्धि असंख्यात
गुणवृद्धि अनंतगुणवृद्धि में ता वृद्धि स्थान है और अनंतभाग हानि
असंख्यातभागहानि संख्यातभागहानि संख्यातगुणहानि असंख्यात
गुणहानि अनंतगुणहानियें हानि स्थान हैं। पदार्थ प्रतिसमय
परिणमन करता ही रहता है। परिणमन दृष्टिकी अपक्षा हानिवृद्धि
रूप है अथवा परिणमन उत्पादव्ययस्वरूप है। जो व्ययाश है वह
हानिरूप है जो उत्पादाश है वह वृद्धिरूप है। जो उत्पाद होता वह
थोड़े से हो होकर अनंतगुणवृद्धि रूप होता है। जो व्यय होता
वह भी थोड़े से हो होकर अनंतगुण हानि होता। परिणमन प्रक्रिया
अतिसूक्ष्म है। उसमें व हानिवृद्धि गर्भित हो जाती है। अथवा
जैस तिल्लोरी काचम न कुछ आना न कुछ पाना न कम होता न
बढ़ होता तथापि उसकी कानि एक ओरमे हानि व एक ओर
वृद्धिरूप होता है। अथवा आत्माक अनंतगुणा में एक गुण (जैसे
सत्ता) के परिणमन की वर्त्तना सो अनंत भागवृद्धि, असंख्यात
गुणों को दूरकर उसमें एक गुणकी परिणमनवृद्धि सो असंख्यात
भागवृद्धि, संख्यात गुणोंमें (जैसे सिद्धके गुण) एक गुणका जो
परिणमना सो संख्यातभागवृद्धि। संख्यातगुणोंका परिणमनरूप
वृद्धि सो संख्यातगुणवृद्धि असंख्यात गुणों का परिणमन सा
असंख्यातगुणवृद्धि अनंतगुणका परिणमना सो अनंतगुणवृद्धि।
उनका परिणमन होकर द्रव्य में अन्तर्लीन होना सो क्रमशः उत्रनी
हानि अथवा परिणमन तो होता ही है वह हानि वृद्धिरूप स्वभाव
है अन्यथा परिणमन कैसे ? समझ में न आवे तो न सही, वही
सूक्ष्मतया पदस्थान पतित है।

असख्यानवें भाग काल तक नहीं होना यह काल अस्सदयान
वपरूप है ।

३—योनिया ६ हैं और उनके अविभागप्रतिच्छेदरूप की तरह
अनेक भेद हो जाते हैं । जैसे शीत, कोई कमशीत, कोई अधिक
शीत, कोई उससे अधिक शीत आदि इस तरह ६ में भेद अश हो
जाते हैं जिससे मनुष्य में भी १४ लाख योनि होती हैं मडला को
दर्शनविशुद्धि —

दहरादून

आ० शु० चि०
मनोहर

卐

卐

卐

श्रीयुन भाई मूलचन्द्र जी—योग्य दर्शनविशुद्धि —

परच—आपका पत्र जो मेरेठ पहुँचा था वह इन्दौर मिल गया ।
आप सब महुरान होंगे । आपने जो प्रश्न पहिले भेजे थे वे मिल
नहीं रहे आप दुपारा लिखकर भेज देंगे । घस्तु स्वरूप, किन्ती ही
दृष्टिया रखकर विचार किया जाता है तब ही घस्तु का पूर्ण निर्णय
होना है । १—दो द्रव्यों के बंधपथाय की दृष्टि में । २—स्वपर—
कारणक एक द्रव्य में हुई, पर्याय की दृष्टि में । ३—स्वप्रत्ययक एक
द्रव्य में हुई पर्याय की दृष्टि में । पहिले का विषय यह सब स्थावर
जगम प्राणिसमूह है । दूसरे का विषय रागाभिभाव है । तीसरे
का विषय शुद्धपथाय है । ज्ञान गोष्ठी का कार्य ठीक चल रहा
होगा । श्री भाई चैतनलाल जी आदि मडली को दर्शनविशुद्धि
कहिये । आ० महेशचन्द्र जी अकुशल होंगे । हमारा विचार ४६
दिन में ही यहाँ से चलने का है । वर्षायोग का जहा निणय होगा
उस स्थान पर पहुँचकर या पहले आपने सूचना दूना ।

इन्दौर

आ० शु० चि०

३०-६-५३

मनोहरवर्मा

卐

卐

卐

श्रीयुत भाई मूलचन्द जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परच - आप सध गोष्ठीसहित सप्रसन्न धर्मसाधन करते ही होंगे— तदनन्तर आपने प्रवचन के साराशा को लिखने के लिये कहा मा किसी प्रकार आपके पास पहुँचेंगे। भेन्विना वस्तुरूप की चर्चा करके सामायिक म इन धाना पर विचार करना चाहिये। आत्मनत्व को दृष्टि पानेमे षडकर और कुछ वैभव नहीं है। ससार के अनित्य पदार्थों की अटकी हो तो आपने— आप सधरी अटक नहीं रहना चाहिये— भाई ला० चेतनलाल जी, किशोरोलाल जी आदि सर्वप्रधुआ को दर्शनविशुद्धि— म० जमानन्द जी सकुशल होंगे धर्मवृद्धि कहना।

जयपुर

८-८-५३



आ- शु० चि०

मनोहरवर्णा



श्रीयुत भाई मूलचन्द जी— योग्य धर्मवृद्धि—

परच आप सकुशल होंगे—आपका पुराना पत्र भी मिलगया और ताजापत्र आज मिला। शनाआने समाधान निम्नप्रकार हैं—
१ - साधारणतया अथात् शान्त म विकल्पा म भेदविज्ञान मिथ्या दृष्टि के भी हो जाव परन्तु यदि अद्धा में आता हुआ भेदविज्ञान हो जो वस्तु के अभेदस्वरूप म पहुँचन का पूर्ववर्ती हो पाता तो मिथ्या दृष्टि नहीं रह सकता। जो चार लधिया अभवक भी हो जाती हैं वहा परिणामा म उच्चमलना तो है ही भेद विज्ञान भी उनक होता फिर वह सम्यग्दर्शन के विना सम्यग्ज्ञानरूप नहीं है। साधारणतया भेदविज्ञान हो जाव और सम्यक्त्व न भी हो परन्तु तत्रत भेद विज्ञान सम्यक्त्व के विना नहीं होना। भेदविज्ञान का कार्य है सम्यक्त्व का कार्य है।

२-

जिसम काय

का साधारणतया
है और अन्य

सम्बन्ध रखनेवाले (जिनके होने पर हो, न होने पर न हो) निमित्त हैं। निमित्त के अभाव में स्वाभाविक कार्य होता वहा भी कालद्रव्य न्दासीन निमित्त है।

३—शुद्ध के विषय में पुराने अनुभवी महापुरुष और भी स्पष्टयथा घना सकते हैं।

४—पेड़ से गिरे हुए पत्ते में जीव यह समूचे वृक्षजाला एक नहीं रहना है यदि असमय में वह पत्ता गिरे तब अन्य प्रत्येक स्थान पर हैं। कुण से जल निकलने पर जल में एवेन्द्रिय स्थावर रहते हैं।

कोटरमा

आ० शु० वि०

१८-१-५४

सहजानन्द

卐

卐

卐

श्रीयुत भाद्र ला० मूलचन्द्र जी योग्य धर्मवृद्धि—

परच—आपका पत्र आया था। चैतन्यस्वरूप। तुम यही चैतन तो हो जैसा सिद्ध है। एक परलक्ष्य ने ही मात्र सारा अस्तित्व सिगाड़ दी है। अस्तित्व सिगाड़ने पर भी स्वभाव वही है, परलक्ष्य हटते ही स्वभावदृष्टि हो जाती है। स्वभावदृष्टि करते ही परलक्ष्य हटनाता है। देखो भैया धर्मका उपाय किनना सरल है। कितनी ही परिस्थिति आधो, बाह्यपदार्थ की स्वप्नम भी इच्छा न करना। होता क्या है बाह्यसमागमसे मात्र आपत्ति (विभाव) का निमित्त। अपना शुद्ध लक्ष्य घनाकर पक्का दृढ विश्वास करना। जगत में अनन्तभव पाये हैं यह भय कुछ अनोखा नहीं है। हा यदि बाह्य की दृष्टि दूर कर निकका कल्याण कर लिया जाये तो अनोखे कार्य का प्रारम्भ होने में यह अनोखा भी है। एक बार सत्यविचार करके भीतर में हा कहते कि मुझे आत्मस्वभाव की स्थिरता के चल के लिये ही वर्तमान का उपयोग करना है। इस कार्य के बिना ही नो घूमे। लोकोकी जानकारीसे अपने को क्या मिलेगा और जड़ समागमसे अपने को क्या मिलेगा और स्वयं सोच लो। गहरी

रह रहे तो व्यापार के लिये नियत समय रखना ६ घटा काफी है
निर जैसा मममो प्रातः १॥ घटा या १ घटा निचो स्वाध्याय म
अवश्य लगाना श्रेय धमध्यान जैसा करत हो करते रहना । श्री ला०
चननलाल जी आदि सत्र म धमसे धर्मवृद्धि कहना—

रफागन

१-३-५४

आ० शु० चि०

सहजानन्द



श्रीयुत भार्गव मूलचन्द्र जी योग्य धमवृद्धि ।

परच - हमारा पत्र जो आपकी शकाआ के कुछ उत्तररूप था
रुचि दोगा - ज्ञान गोष्ठी में १५-२० मिनट को एक कठिन प्रश्न
आध्यात्मिक रख लेना, कठिन ही कहें वार पत्रों पर सरल होना
है । अध्यात्मचर्चा छप गई है उसे ज्ञानगोष्ठी म स्वाध्यायार्थ रखना ।
नौबतानचर्चा छप गया है उमेमी आप एक वार तो चरु दख लेना
ममस्थानमूत्र विषय दपण छप गया है उसे रखकर भेजों के रिचार
तो करना । अस्तु

भार्य मूलचन्द्र जी तुम दुकान आदि काम मयादित समय रख
कर करना ऐसा प्रोग्राम बनाना जिससे तुम्हें कम से कम ३ घटा
ममय स्वाध्याय के लिये मिल सके वह इस प्रकार हो सकता है—
जैसे १ घटा सूर्योदय से १॥ घटा पूर्व ठठकर १ घटा । प्रातः ३०
मिनट शास्त्रसभा में । रात को १॥ घटा इसमें चाहो तो आधा
घटा घडा को धमशिक्षा भी द सकते हो । श्री भाई ला० चेतनलाल
के लेख का

परकी रुचि

हनारीवाग

३०-१-५४

आ० शु० चि०

महजानन्द



श्रीयुग वा० आनन्द प्रकाश जी जैन ।

योग्य धर्मवृद्धि ।

परंच—आपका स्वास्थ्य व धर्मसाधन ठीक चल रहा होगा । आपका बहुत दिनों से कुशल पत्र नहीं आया सो दुःख । स्वास्थ्य म प्रवृत्ति रखने का ख्याल न भूलिये आपकल ५ घंटे म ६ घंटे तक प्रातः काल का समय सामायिक स्वास्थ्य के लिये रखिये । हृदय पर धोकर सामायिक स्वास्थ्य कर सकते हैं । स्नान परचाय कर सकते हैं । किसी दिन अशुचि हो जाये तब पपड़ा बदल कर सकते हैं । स्वास्थ्य म प्रमाद न करना । आत्मा का स्वभाव ज्ञान है उससे विकार का यत्न करना । परिवार को धर्मवृद्धि । पशुओं को आशीर्वाद ।

६-८-५४

आ० शु० चि०

मनोहर लाल पण्डी

卐

卐

卐

श्रीयुग भाई जी महावीर प्रसाद जी योग्य धर्मवृद्धि ।

आपका पत्र आया स्वास्थ्य व धर्मसाधन ठीक चल रहा होगा । हमारा स्वास्थ्य ठीक है । आपका स्वास्थ्य सामायिक ठीक चल रहा होगा । ज्यों ज्यों दिन व्यतीत होते जाये मनुष्य की आयु भी घटती जाती है । संसार के किसी पदार्थ म आत्मा का सुख नहीं है । यह सारा समागम धोखा है अपने आत्मा की रखर लेना सबसे उत्तम काम है । सो सामायिक स्वास्थ्य व छद्मदाला की डालें पाना व आत्मा कीर्तन का मनन करना इतनी बात कभी नहीं छोड़ना चाहें बाहर जायें तो यहा भी करना चाहे कम करसकें

कुष्ट परयाह नहीं। किमी भी प्रमग पर कोई चिन्ता नहीं करना, आत्मा तो भगवान् के स्वभाव समाप्त है वाह्य पदार्थों के आश्रय क्या चिन्ता करना। मग्न ममाचार दाता। धरम की तथियत आदि का हाल भी लिखना वह बहुत भद्र प्रकृति की है। आप दोनोंमे सम्मग्नान की वृद्धि हो और मत्यमुख का मार्ग पायें। भी माई सुमतिप्रमाद जी कालमदीयान को धर्मवृद्धि कहना। भी वं पिन्नीनान् नी को धर्मवृद्धि कहना।

आ० शु० वि०
मनोहरलाल वर्णी

卐

卐

卐



श्रीयुत वा० आनन्द प्रकाश जी जैन ।

योग्य धर्मवृद्धि ।

परच—आपना स्वास्थ्य व धर्मसाधन ठीक चल रहा होगा । आपका बहुत दिनों से कुशल पत्र नहीं आया सो दना । स्वाध्याय म प्रवृत्ति रखने का ख्याल न भूलिये आनकल ५ घने में ६ घने तक प्रातः काल का समय सामायिक स्वाध्याय के लिये रखिये । हाथ पैर धोकर सामायिक स्वाध्याय कर सकते हैं । ज्ञान परचाय कर सकते हैं । किसी दिन अशुचि हो जाय तब बपड़ा बदल कर कर सकते हैं । स्वाध्याय म प्रमाद न करना । आत्मा का स्वभाव ज्ञान है उसके विकास का यत्न रखना । परिवार को धर्मवृद्धि । बच्चों को आशीर्वाद ।

६-८-५४

आ० शु० चि०

मनोहर लाल वर्णा

卐

卐

卐

श्रीयुत भाई जी महावीर प्रसाद जी योग्य धर्मवृद्धि ।

आपका पत्र आया स्वास्थ्य व धर्मसाधन ठीक चल रहा होगा । हमारा स्वास्थ्य ठीक है । आपका स्वाध्याय सामायिक ठीक चल रहा होगा । ज्यों ज्यों दिन व्यतीत होते जाये मनुष्य की आयु भी घटती जाती है । ससार के किसी पदार्थ में आत्मा का मुरा नहीं है । यह सारा समागम धौर्या है अपने आत्मा की खबर लेना सबसे उत्तम काम है । सो सामायिक स्वाध्याय व छहडाला का ढालें पढ़ना व आत्मा कीर्तन का मनन करना इतनी घात कभी नहीं छोड़ना चाहें बाहर जायें तो यहा भी करना चाहे कम करसको

रह रही तो व्यापार के लिये नियत समय रखना ६ घंटा साध, ३ घंटे वैसा समझो प्रातः १॥ घंटा या १ घंटा निती स्वाध्याय के अवश्य लगाना शेष धर्मध्यान वैसा करते हो करते रहना । श्री चतनलाल जी आदि सत्र म धर्ममे धर्मवृद्धि कहना—

स्वीकार
१-३-५४

आ० श्री
सर्व

卐

卐

卐

श्रीयुक्त भाई मूलचन्द जी योग्य धर्मवृद्धि ।

परिच - हमारा पत्र या आपकी शकाओं के कुछ प्रश्नों पर
पहुँचा हागा - ज्ञान गोष्ठी म १५-२० मिनट की प्रश्नोत्तर
आध्यात्मिक रख लेना, कठिन ही कुछ धार पढ़ने के लिये
है । अध्यात्मचचा छप गई है उस ज्ञानगोष्ठी म स्वस्थान
स्वस्थानचचा छप गया है उसमें आप एक बार स्वस्थान
स्वस्थानमूत्र विषय स्पष्ट छप गया है उस स्वस्थान
को करना । अस्तु

भाई मूलचन्द जी तुम दुःख आदि काम करने
कर करना मेमा प्रामाण्य बनाना जिससे तुम्हें
समय स्वाध्याय के लिये मिल सके वह स्वस्थान
जैसे १ घंटा सूर्यादय से १॥ घंटा पूर्व ३०
मिनट शास्त्रमभा म । रात को १॥ घंटा
घंटा घण्टा को धर्मशिक्षा भी दे सकते हो ।
जी आदि यद्युक्तों को यथायोग्य धर्मशिक्षा
उपाय कर लेना मनुष्यभय पाने का उपाय ।

श्रीयुत धा० आनन्द प्रकाश जी जैन ।

योग्य धर्मवृद्धि ।

परच—आपका स्वास्थ्य व धर्मसाधन ठीक चल रहा होगा । आपका बहुत दिनों में कुशल पत्र नहीं आया सो दना । स्वाध्याय में प्रवृत्ति रखने का ख्याल न भूलिये आनकल ५ घने मे ६ घने तक प्रात काल का समय सामायिक स्वाध्याय के लिये ररिय । हाय पैर घोरर सामायिक स्वाध्याय कर सकते हैं । स्नान परधान कर सकते हैं । किसी दिन अशुचि हो जाने तथ कपड़ा धल कर कर सकते हैं । स्वाध्याय म प्रमाद न करना । आत्मा का स्वभाव ज्ञान है उसके विकास का यत्न रखना । परिवार को धर्मवृद्धि । पशों को आशीर्वाद ।

६-८-५४

आ० शु० चि०

मनोहर लाल धर्षी

卐

卐

卐

श्रीयुत भाई जी महावीर प्रसाद जी योग्य धर्मवृद्धि ।

आपका पत्र आया स्वास्थ्य व धर्मसाधन ठीक चल रहा होगा । हमारा स्वास्थ्य ठीक है । आपका स्वाध्याय सामायिक ठीक चल रहा होगा । ज्यों जथा दिन व्यतीत होते जावे मनुष्य की आयु भी घटती जाती है । ममार के किन्नी पदार्थ म आत्मा का मुर नही है । यह सारा समागम घोरा है अपने आत्मा की रखर लेना मरसे उत्तम काम है । सो सामायिक स्वाध्याय व छहडाला की डालें पढ़ना व आत्मा कीर्तन का मनन करना इतनी घात कभी नही छोड़ना चाह बाहर जायें तो वहा भी करना चाहे कम करसको

कुद परवाह नहीं। किसी भी प्रसंग पर कोई चिन्ता नहीं करना, आत्मा तो भगवान् के स्वभाव समान हैं बाह्य पदार्थों के आश्रय क्या चिन्ता करना। मव समाचार दना। धरम की तश्रियत आदि का हाल भी लिखना वह बहुत भट्ट प्रकृति की है। आप दोनोंमे सम्यग्ज्ञान की वृद्धि हो और सत्यसुख का मार्ग पावें। श्री भाड सुमतिप्रसाद जी दालमहीयाने को धर्मवृद्धि कहना। श्री प विहारीलाल जी को धर्मवृद्धि कहना।

आ- शु वि०
मनोहरलाल वर्मा

卐

卐

卐



